समस्यापूर्ति (तृतीय भाग) की समस्याओं की सूची

किस कबि की कबिता किस पृष्ठ में है उसकी सूची ।

(४९) महामहोपाध्याय श्री पं० सुधाकर जी द्विवेदी ३ २१ ३२ ४७ ।

(५०) बाबू शिवपालसिंह (भिनगा) ४३ ५६ ६५ ९३ १०२ १६७ १७८ १८८ १९५ २०५ २१७ ।

(५१) श्रीश्यामसेवकमिश्र रीवा—१८, ३०, ४०, ५५, ६४, ७१, ७९, ८६, ९४, १०३, १११, ११९, १४०, १४८, १५७, १६४, १७९ ।

(५२) लाला हनुमानप्रसाद जी (लखनऊ) १२६ १३८ १४४ १५६ १६७ १७६ १८७ १९६ २०५ २१७ २२९ २३५ ।

(५३) प० हनुमानप्रसाद जी (अयोध्या) २२८ ।

(५४) बाबू हरशंकरप्रसाद जी ६ २१ ३३ ४८ ६२ ७३ ८३ ८८ ९८ १०५ ११५ १२१ १३२ १४३ १५२ १६० १७१ १८३ १९२ २०१ २०९ २२१ ।

नोट - यह सूची वर्णों के क्रम से बनी है कुछ कवि की कविता की योग्यता के विचार से नहीं अर्थात् Alphabetical order से बनी है कुछ Order of Merit से नहीं ।

काशी कबिसमाज की

समस्यापूर्त्ति का तीसरा भाग।

पच्चीसवां अधिवेशन।

मिती माघ सुदी १ सम्वत् १९५१

मोपै रंग डारो ना।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

बागन के बीच आज राधिकाजी खेलैं फाग
सखिन की झुण्ड लिये घूंघट उघारो ना। कहै
रससिन्धु फेर बाजाहू अनेक बाजे गोपी ग्वाल
नाचे तहाँ चल के निहारो ना॥ गालन दै गु-
लचा गुलाल जो लगाइ गाल स्याम धरे कुच
कंज कछु बौ उघारो ना। जभी रंग डारे कृष्ण
तभी वह बोली बाल सारी ये नई है हाँ हाँ
मोपै रंग डारो ना॥

सारी है बसन्ती रंग घाघरोहू घेरदार सोरह

सिंगार साज आरती उतारो ना। कहै रससिन्धु आज खेलन चली है होरी नजर न लागे कहू राई लोन वारो ना ॥ ठाढ़ी ब्रजनारी देख पो-टरी चलाई लाल मारी पिचकारी भर घूंघट उघारो ना। उरझ गई है मेरी बेसर जो सारी माँझ ठाढ़े रहो नेक स्याम मोपै रंग डारो ना॥

आज बरसाने माँझ मची है रँगीली होरी झुण्डन की झुण्ड सखी घूंघट उघारो ना। च-मकै परेला चारु सूरज की खाबी परे नाचे ब्रजनारी ग्वाल सोभा जो निहारो ना ॥ राधा और कृष्ण खेलें उड़त गुलाल खूब बजत मृदंग डफ कोऊ रंग गारो ना । गोपिन पै प्रेमरग जैसो तुम डारो स्याम तैसो रससिन्धु कहै मोपै रंग डारो ना ॥

कालिन्दी-कूलन पर रविजा निकुंज जहाँ फूली द्रुमबेली खूब सोभा जो निहारो ना। कहै रससिधु तहाँ झुण्डन की झुण्ड गोपी मारे कु-मकुमा स्याम घूंघट उघारो ना ॥ चारो ओर

फेंके सभी बरसि है मेह मानो आँख को बचाय गेरो और अंग मारो ना। लाडू के गुलाल मलि चूमत कपोल कृष्ण ठाढ़ी रहो नेक प्यारी मोपै रंग डारो ना॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

काहे तन अबिर गुलाल सों लपेटो हिय रा- वरेही प्रेम से ऽनुरक्त है बिचारो ना। मार केही बानन सो जियरो लचार मेरो एहो बलबीर मार कुंकुम को मारो ना॥ बृथा पिचकारी भरि रंग को चलाओ जिन सारी जरतारी मेरी चूनरी बिगारो ना। रँगी हौं तिहारे श्याम रंग में गु- पाल याते सुनिये रसाल लाल मोपै रंग डा०॥

महामहोपाध्याय श्रीयुत पण्डित सुधाकर जी द्विवेदी खजुरी—बनारस।

कान्ह कान्ह मैं ही कहैं कान्ह सो सुनै ना कान बावरो सी बोलै चख मूंदि पाय सारो ना। साँवरे के बिरह अनंग अंग अंग दाह्यो हाहा जरि जैहै कर मो पर सो धारो ना॥ चारो ना

विरञ्चि सों विचारो ना उपाय रंच मारो ना मरोरि तन बसन उतारो ना। श्याम रंग रँगी रंग जा सँग लगै ना और तापैं अंग जारौं काहू मोपै रंग डारो ना ॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी।

बाजि रही डौंडी नन्दगाँव बरसानेहू लौं लावती कलङ्क सबै सुनत हमारो ना। संक द रसावै निसबासर मतारी मोहि ठाढ़ी होन देय द्वार खोलि कै किवारो ना ॥ आई हौं छपाइ कै केदार जू तिहारे पास केसर गुलाल भरि गाल तकि मारो ना। छारो पिचुकी न रंग सारी तराबोर ह्वै है सोर सरसैहै जोर मो० ॥

गैया के चरैया भैया नान्हो बलदाऊजू को माखनचोरैया कोउ सरिस तुम्हारो ना। हौं तो वृषभान की दुलारी सुता कीरति की लोक उ-जियारी रूपवारी रंग कारो ना ॥ गुंज गर माल कामरी पै इतरात केते भारी अनमोल है केदार जू निहारो ना। एहो बनवारी पिचकारी ना चलावो साँची तुमकों बबा की सौंह मो० ॥

पं० बचऊचौबे उपनाम रसीले कवि — काशी।

रोज रोज खाली दै बहाली सो निसारौ काम कहत रसीले तौन मन मे बिचारो ना। सारी सोफियानी कामदानी की मगाय देव तैसही दुपट्टा चारु चोचला बघारो ना॥ बाकी ओस्ताद को चुकाय सब दाम दाम घमासान खेलो फाग बात यह टारो ना। खाला को बुलाय बिनु राजी आजु एका एक कसम नबी की मुफ्त मोपै रंग डारो ना॥

ठाढ़े रहौ ठौरै ठकुराई जो अपानी चहौ छेंकि बरजोरी गैल छैल ललकारो ना। कहत रसीले तकि तानि पिचकारी मारि सारी जरतारी नई कचुकी बिगारो ना॥ हँसैगो सयानी सुनि बात ब्रजमण्डल में पाय के अकेली कान्ह इज्जत उतारो ना। अबै समुझाय कै चैताये देत बार बार जाति दधि बेचन सु मोपै० ॥

बा० माधोदास जी - काशी।

ऊधम करत कान्ह अतिही धधाने फिरो

लाजभरी गारी देत सङ्क उर धारो ना। माधव जू हीरन को जेवर जरावदार मारि के गुलाल लाल चाँदनी बिगारो ना॥ कमरी के ओढ़ैया हो गैया के चरैया ग्वाल लाल ये बिसाल माल कबौं तुम धारो ना। जौलों यह सारी जरतारी ना पलटि आऊँ तौलों है बबा की सौंह मो०॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी—बनारस।

रद छद पीक लीक अधर कपोल राजै जा-बक ललाट सो दिखाय बाट पारौ ना। गोंट ऑगिया की छतिया मों उपटी है लाल कहैं हरिशंकर सकोच सों सुधारो ना॥ याही मों भलो है नेक नजर बचाये रहौ अब लौं बनी है बात नाहक बिगारो ना। जाके संग जागे रँग राते रतिरस पागे जाहूए तहाँई आप मो पै रंग डारो ना॥

प० रामदयाल द्विवेदी (उपनाम दयाल कवि)

रामामहल बनारस।

ऐसी नष्ट चाल सो न लाल पतिऐहै कोउ

नन्द के दुलारे इन बीथिन पधारौ ना। मानौ घनस्याम मेरी आँख चुँधराय जैहै मारौ ना गुलाल मेरो घूघुट उघारौ ना॥ टूटै हिय माल है दयाल बरजोरी जनि कंचुकी उघारौ बँधी बेनी को बिगारौ ना। हाहा करि हारी अब गारी पुनि देन लैहौ भीजै सुकसारी स्याम मोपै रंग डारो ना॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

घालौ ना गुलाल कोऊ ग्वाल ह्वै उताल इते अबिर उड़ाय हाय बिबम बिगारौ ना। गावो ना धमार ललकार कै हमारो गेह ढोल डफ झाँझन बजाय कान पारौ ना॥ मोह्यो मनमोहन हमारो जा परोसिनी ने जाय सो उहाँ पै हौस होरी की निकारौ ना। रंग जो हमारो लूटि लपटि करैहै रंग वापै रंग डारौ नेक मोपै रंग डारौ ना॥

काहे बल एतो अबलान पै जनावत हौ आय कै इतै पै हौस हिया की निकारौ ना। निपट

गँवारी ए बिचारी ब्रजनारी सारी भरि पिच-
कारी तिन्है तकि तकि मारौ ना ॥ मलौ ना
गुलाल लाल गहि गहि गालन पै बैनी बरजोरी
यह मन में बिचारौ ना । देखौ अबै कैसो मैं
देखाती हौं तमासो तुम्है जो पै बड़े बांके नेक
मोपै रंग डारौ ना ॥

पण्डित अम्बाशङ्कर जी – काशी।

मूरत तिहारी श्याम चोवा सी भई है मोहि
दूर धरो चोवा यह चोवा को उछारो ना। नैन
रतनारे दोऊ उर मे हमारे लगे बार बार लाल
जू गुलाल लै बगारौ ना॥ केसर के सर सेज बर
पीत दुपटी है केसर की दारी पिचकारी भौंक
झारौ ना। संकर भयो है मन मेरो प्रेमरंग संग
याते अब झूठो पंग मोपै रंग डारौ ना॥

छबीले कवि – बनारस।

जानत भलेई कहा जानि कै अजान होत
अंग पिचकारी या अनारिन लौं मारो ना। सु-
कबि छबीले की धौं फाग अनुरागन में मगन

भये हो मति आपनी सम्हारो ना॥ कौन है प्र-
मान तुम्है ज्ञान समुझाऊं भरौ घट ना उतारौ
अरु घूंघट उघारो ना। साँचौ कहौं कानन है
सुनिये सुजान कान्ह रावरे रँगी हौ रंग मोपै०॥

काशीनिवासी ब्रजचन्द जो बल्लभीय।

कुहू ना पुकारौ पिक कुलिस पवारौ मति
त्रिबिधि समीर आजु अङ्ग को पजारौ ना। चन्द-
मुख चन्द को गरब मति गारौ आज रजनी सजन
बिन मोकहँ बिदारौ ना॥ हारौ ना दुकूल दिव्य
सौरभ सनित आजु रूप गुन भूषन ब्रजेन्दु सुधि
पारौ ना। पंचबान झारौ ना अनीति ना ब-
गारौ काम एहो रितुराज आज मोपै० ॥

अवध उजारौ ना बगारौ ना अजस जक्त बनमैं
पियारौ बिरहागि उदगारौ ना। मुखतैं उँचारौ
ना बसन्तपञ्चमी को नाम अति अभिराम राज-
मन्दिर सुधारौ ना॥ मदन बधाई चित भूलि ना
बिचारौ बर बसन अभूषन बसन्ती तन धारौ ना।
दाग प्रेम पट मैं न डारौ सत्रुसाल लाल फागु
माहिँ कोऊ कहूं मोपै० ॥

उचित बिचारौ आप परम बिचारवान बचन पिता को मेटि धरम बिगारौ ना। नित्य धाम माहिँ यह बात है नवीन तऊ भाव को निबाह को बिपति निरधारौ ना॥ खेद मति धारौ छेद होत है हिये मैं नाथ भेद यह जाइ निजमन्दिर बगारौ ना। कामता कृपाल करजोरि मैं सुनाऊँ बिनै भूलिहू भरत बिन मोपै० ॥

कहत सिवा सौं सावधान सिव बार बार अति गोपनीय यह काहू सो उँचारौ ना। मोहू सों कही है आप गोप ही रहन हेत बात बि-परीत करि सुजस सँघारौ ना॥ बिनय बिचारौ निरधारौ कछु और नाहिँ एहो ब्रजचन्द यामै अहित तिहारौ ना। चौचँद बगारौ ना चवाइन हैं चारो ओर रसिक रसाल लाल मोपै० ॥

महाराजकुमार श्री. गुरुप्रसादसिंह जी—गिद्धौर ।

हौं जो केती बेर करजोरि हाहा खाय कही डारि पिचकारी मेरी चूनर बिगारौ ना। फेंकौ कबि ग्वाल कहूं आंखिन परैगो गात भरिहै श्र-

बीर कुमकुमा भरि मारौ ना ॥ अबतौ पकरि ल्याई एक एक बातन कौ कसर मिटाऊँ ह्वैहै नेक निबटारौ ना। काल्हि बरजौ मै तुम एक नाहि मानी आज कैसे हौ कहत कान्ह मोपै रंग डारौ ना ॥

कोपागंजनिवासी मारकंडेलाल उपनाम चिरजीव कवि।

गारी देव चाहै जौन तुम्हैं मन भावै प्यारे ब्रज की बधूटिन में प्रेम को पसारो ना। दूरही सो बातैं करो औसर नहीं है यहां काठ में ह मारे ये अपानो भुज पारो ना ॥ कवि चिरजीव कोऊ भेद लखि जैहै जो तौ खेद ह्वैहै जीवन लौं सुरति बिसारो ना । भावै सोई करो यह अङ्ग है तिहारो लाल बिनती हमारी एक मो० ॥

धाये रंग घोरि ब्रुषभानुतनया पै स्याम रंगनि अन्हाय भाष्यौ सुरति बिसारो ना। आयो खेलैं फाग अनुराग की कला मैं दूते अङ्गनि लगाय कह्यौ प्यारी हिय हारो ना॥ कवि चिर जीव कह्यौ काँधे भिभिकारि राधे ये जू रंग स्याम

तूं हमारो कर धारो ना। हमैं नहि भावत तिहारो यह ढङ्ग लाल ह्वैकै बदरंग आज मो पै०॥

श्री ठाः महेश्वरबक्ससिंह जी तालुकेदार—रामपुर मथुरा।

श्याम आइ घेरि लीन्ह पेखि कै सशंकि भाष जात नन्दरानी पास फाग को बिचारो ना। स्वेत वस्त्र धारि तन जात अलबेली संग लाल धोखे आन पिचकारी को पवारो ना॥ पूछि है जिठानी रंग खेलि आई कौन संग सासु मो रिसाइ तब दौरि कै उबारो ना। बार बार जोरै कर हाहा करै फेरि फेरि आजु तौ महेश्वर जू मोपै रंग डारो ना॥

एक बेर सुन्दरी सुबस्त्र अंग धारि जात देखि रंग श्याम हाथ भाषो मोहि जारो ना। काल्हि रंग डारि दीन्ह वस्त्र भे कुरंग लाल नित्य की ठठोली मोहि भावै ना बिचारो ना॥ सासु पनखानी मो जिठानी बोल मारो कालि कान्ह संग रग खेलि आई लाज धारो ना। मोहि [illegible] भावै नाहिँ कहौं करजोरि लाल आजु तो कबि[illegible]र न मोपै रंग डारो ना॥

पं० गणपतप्रसाद नगापुत्र (उपनाम श्रीवर) अयोध्या ।

जाति हौं जसोदा तीर कहन सँदेस प्यारे आवती हौ नेक अबै लागिहै अवारो ना । खेलिहौं तिहारे संग फाग अलबेले श्याम श्रीवर मो कहिकै समाजन सम्हारो ना ॥ ढेर करवाउँगी गुलालन को चेरिन सो झाँझ डफ ताल की अवाजन बगारो ना । आप कहवावती सकारे हौं सो याकी बात रावरी दुहाई नेक मो० ॥

कोपागजनिवासी कवि सालिकराम जी ।

अबहीं नी फाग दिन है हूं ना गये हैं बीति एहो ग्वालबाल नेकु पिचुकी सुधारो ना । कैसे मग चलैगो सुनागरी कुलीनन की एतो उतपात ब्रज तुम में विचारो ना ॥ कहै सालग्राम मै तो सभही सुनाय भाषौं औसर कुऔसर की बात को उचारो ना । कंस सुनि पैहै तब कौन धौ हवाल ह्वै है याते कहौं बार २ मोपै० ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलालजी गयावाल ।

मैं हूं वृषभान की दुलारी सुनो घनश्याम

जानिहौं मैं नेक तोहि नन्द को दुलारो ना । करत हो सबही ते बरियाई एक भाँति कछू मन बीच ऊँच नीच हूं विचारो ना ॥ कहै गि-रधारीलाल कबहूं न कीनो दिन ऐसी बरजोरी दई सुनी ना निहारो ना । दियो है भिगाइ अग ग्वालन को सग लेइ कहत रहो है जऊ मोपै रग डारो ना ॥

पीक लीक लाये जाकी जावक लिलार लाये नैनहूं रँगाये जहँ तहँ क्यों पधारो ना । कहै गि रधारीलाल उर जाके दाग लाये वाही के उरज गहो मेरो उर जारो ना ॥ काको कहो प्यारी २ प्यारी है तिहारो कौन जाहि करौ प्यारो किन ताही को पुकारो ना । खेलि आवे संग जाके ताके अग डारो रग कीजै मत तंग अंग मोपै० ॥

श्री चन्दकला बाई—बूंदी ।

आई होत प्रात ही पठाई कुललोगन की जैहौं दधि बेचि धाम यामैं मोर सारो ना । तुम सजि होरी साज लीनी मोहि घेरि आज ह्वै है

मो अकाज लाज राखौ गाज पारो ना ॥ चन्द-कला सास सौति ननद जिठानी सदा रावरोही नाम लै दबात खात टारो ना । यातैं तन लेय मुख बिनती बिसाल करौं पाय परौं हाहा लाल मोपै रंग डारो ना ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

होरी अहै होरी अहै कहि मग छेकत हौ कौन कहै होरी अहै बादि हठ धारौ ना । कछुक हमारी विनय ऊपरहू कान करौ करत मना है कौन कबिर उचारौ ना ॥ आजही दई है सेत सारी मँगवाय सास पाँय परौं हाहा ताकि कोप को उभारौ ना । फरक बिचारौ जनि मोहि काहु बातनि सों प्यारे बलि जाउँ आज मो० ॥

आये हौ बटोरि दल ऊधम मचावन कों गरब गरूर भरे किंचित बिचारौ ना । कबिर उचारौ हठि आँचर उघारत हौ कौन कुल को है कौन नेकु होस धारौ ना ॥ अबिर गुलाल भरि झोरी होरी होरी करौ पिचका कुठौर मारौ

अचन सुधारौ ना। पै न मोहि जानौ उन गाँव की गँवारिन लौं कीरतिकिसोरी मैंहू मोपै० ॥

दासापुरनिवासी पं० बलदेवप्रसाद कबि।

दासी रावरे की सदा हासी को हिये में डर गाँसी सौ चितौनन सों मोहि झूमि मारौ ना। नीति को बिचार बलदेव रीति राखे रहौ या बिधि सों प्रीति के पयोनिधि मे पारौ ना॥ चातुर चवाई चरचैंगे चितचाहनन बाध धर बौंडर के ब्यौंत को विचारौ ना। अंग २ जागत अनंग पिचकारी लगे आलिन के संग लाल मोपै० ॥

श्रीकिशोरीलालजो गोस्वामी आरा।

होरी मैं न कीजै बरजोरी हाथ जोरि काहौं सुनिहैं सबै री अजू गारो यों उचारौ ना। सखिन समाज ब्रजबीथिन दराजन में मोहि भुज भेंटनि किसोरी पग धारौ ना ॥ केसर कुसुंभ टेसू रंगनि की धारनि सों छैल पिचकारिन लै चूनरी बिगारौ ना। मै तो सरबोर श्याम रंग मे रँगी हूं लाल अबिर गुलाल घाल मोपै० ॥

सखन समाज साज आज ब्रजराज तुम आये तौ पधारौ नेक सङ्क उर धारौ ना। डफन बजाइ त्यों धमारन कों गाइ गाइ लाजन बहाइ गारी गजब उचारौ ना॥ रसिक किसोरी होरी माहि बरजोरी कहा खेलौ मीत रीत अनरीत परिचारौ ना। सुन्दर सँवारी जरतारी लाल सारी पर झोरिन गुलाल झेलि मोपै० ॥

प० जानकीतिवाडी (इन्दु कवि) सूर्यपुरा (शाहाबाद)

बिगरि अवश्य जैहै नन्द के दुलारे श्याम जाके हो दुलारे ताकी कीरति उघारो ना। जानत जहान हौंहूं भानु की किशोरी ताते निपट हठीली दूजी बात चित धारो ना। केसरि कमोरिन अबीरन से हौज भरे सामुहे लखात 'इन्दु, नेसुक बिचारो ना। तैने काल्ह खेली है गँवारि गूंजरी सो होरी छलके छबीलो याते मोपै रंग डारौ ना॥

पाय परौं बचन हमारौ सुनि लीजै यह झूठहूं ललकि पिचकारी हाथ धारो ना। कसर

मिटाय हैं वधूटी ब्रज गाँवन की देखि अनहोनी दशा नेकहू प्रचारो ना ॥ मन बच काय सब भाँति सै तिहारो 'द्विंदु' घूंघट हमारो भूलि उर निरधारो ना । भेद खुलि जैहै कुप्यौ रोज रोज ही को अबै एहो ब्रजबीर आज मापै० ॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा ।

चलै न चलाकी चतुराई चटकीलापन चौज औ चरित्तन को चरचा उचारो ना । चूक ना कहौजू अब मूक ह्वै रहौजू याहू कही को सही जू कछुकही जो बिचारो ना ॥ राधिकाप्रसाद रात रङ्ग मे रमे हो जहाँ बेगहीं सिधारो मम-धाम पाँय धारो ना। बैन जो कढेगो जिय दुक्ख ही बढैगो अब रग ना चढैगो लाल मोपै० ॥

मिश्र सेवक श्याम कवि मऊगज – रीवा ।

ननद निगोडी इतै तिरछै निहारति है एक की लगैहै चार तनिक बिचारो ना। सासु सत-रैहै नेकहूं जो सुनि पैहै भौंजि सारी सब जैहै पिचकारी तकि मारो ना ॥ मानत कही ना

श्याम सेवक सुजान ह्वैकै ह्वैहौं बदनाम हटो घूंघट उघारो ना। वैसही चबाव चलैं दैंहुगी जबाब कहा पांव परौं प्यारे आज मोपै० ॥

प० सतीप्रसादतिवारी (सिद्ध कवि) काशी।

डॉकू सों डगर बीच काहे कों डरावत हौ अब हम जानी हौगे तन मन कारो ना। हौंतो अबला हौं तुम पूरे सबला हौ नाथ चलत कुपन्थ नेक सुपथ बिचारो ना॥ भूलि गई वा दिन की जा दिन दबकि भागे सिद्ध कहै अब पिचुकारी कर धारो ना। रंग में तिहारे पहिले ही सों रँगी हौं प्यारे नन्द के दुलारे नेक मोपै० ॥

गंधौली ज़िला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जी उपनाम ब्रजराज।

भोरही सों फिरत अनोखि पिचकारी गहै सारि को वगारि अजू नाहक बिगारो ना। चूनरी नसैहै उर आँगी रगि जैहै तन सुख बिनसैहै भूलि हठ हिय धारो ना॥ तुम ब्रजराज हम गूजरी गँवारि ब्रज चलिहै चवाव कुछू सुयस ह-

मारो ना। भैया सौं बिगरि जैहै हमसों कन्हैया दैया ननद रिसैहै खरी मोपै रंग डारो ना॥

मानो मयङ्क कलङ्क पखारत।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

प्रात समै अँगरात उठी तिय अङ्ग के भूषन हार सँवारत। त्यों रससिन्धु कलानिधि सी चली स्याम जो बिन्दु पै मैनहु वारत॥ ज्यों अरबिन्द पै बैठ्यो मिलिन्द है स्याम जो आइकै आप निहारत। न्हाय रही कर बिन्दु मिटाय कै मानो मयङ्क कलङ्क पखारत॥

संग सहेली लिये चली राधिका तारन माँझ ज्यौं इन्दु पधारत। त्यों रससिन्धु जू फूल उड़ावत न्हात लली कोउ अंग सँवारत॥ लै चुबकी निकसी जल तैं वह फेरत बार जो स्याम निहारत। कंजन से कर बार हटावत मानो॰॥

महामहोपाध्याय श्रीयुत पण्डित सुधाकर जी द्विवेदी
खजुरी—बनारस ।

खार तजो अब मान बिगोय सो सूरति खोय बिसूरि निहारत । हार तथा शर मार चुभे उर प्रीति निरन्तर अङ्ग पसारत ॥ सारत नैन न अंजन बैन कहे कटु ते मुख आँसु बगारत । गारत गात बिहारि निहारिये मानो० ॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी ।

आज चली बलबीर पै बाम सिँगार सबै तन सेत सँवारत । चाँदनी रैन मैं हीरनहार सुधार कै सारी सुपेदही धारत ॥ आननचन्द्र तें बार झकोरत बीर भली उपमा यों बिचारत । छीर समुद्र के अन्तर पैठि कै मानो० ॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी—बनारस ।

सोई निसा भरि स्याम के सग में आरती जाकी मनोज उतारत । न्हान को कालिँदीतीर चली पगही पग पै रँग जावक ढारत ॥ डूबक दीन्हो घनी हरिशङ्कर सो उपमा कवि ऐसी बि-

चारत। राहु अतङ्क ते छूटि निसङ्क ह्वै मानो मयङ्क कलङ्क पखारत॥

सॉवरे सों बिपरीति रची हरिशङ्कर त्रास न नेकु बिचारत। बार खुले लहरैं कुच पै कर दोऊ तिन्है गहि पीठ पै डारत॥ बारहि बार झुकै मुख चूमन सो उपमा कबि ऐसी सुधारत। राहु अतङ्क ते छूटि निसङ्क ह्वै मानो० ॥

काशीनिवासी प॰ केदारनाथजी।

आयो न कन्त अगार बसन्त दिगन्त अनन्त कृसान पसारत। फूलि गुलाबकली कचनार नखै हरि फूल पलास जथारत॥ कोकिल कूक मचा॰ वनि जोर केदार हनोज मनोज प्रचारत। यौं कहि आसु ढरयौ मुख पै अति मानो०॥

फूलन सों सुचि सेज सँवारि कै पुंज प्रमान चिराग न बारत। हौंस हजार भरी हियरे अँ-गना अँगना लगि बाट निहारत॥ आयो न पीय निसा नगिचान केदार जू सौतिनि शोक सँभा-रत। ढारत अंजन आसु दृगै मुख मानो० ॥

पं० बचऊचौबे उपनाम रसीले कवि—काशी ।

भेंटि सहेलिनि को गवने चली लाडिली गाउँ की ओर निहारत । माय के पॉय परे सुसुकै अति बारहिँ बार न धीरज धारत ॥ नैनन ते कजरा तेहिँ औसर ऐसे बहैं असुवान के ढारत । स्वच्छता हेतु रसीले कहै गुनि मानो० ॥

प० अयोध्यानाथ जी उपनाम अवधेश कवि काशी ।

राधिका के मुख की समता लहिबे को मनो नभ चन्द विचारत । सारदी रैन को राम समै अवधेश उयो छवि पूरन धारत ॥ पेखि बनी सी छटा मुख मैं कुल सोरहो तुच्छ कला निरधारत । कालिँदीतीर मैं दौरै दुरै निज मानो० ॥

बा० माधोदास जी काशी ।

बाचक का उतप्रेक्षन कों बर जो कविनायक हैं उर धारत । ईस के सीस को भूषन को सुठि दूषन का तेहि माझ बिचारत ॥ का कर ते पदपङ्कज को द्विज मौन सु आपन मे पग धारत । उत्तर माधव चार बिचारत मानो० ॥

छबीले कबि – बनारस।

भावती भोरै जगी कलाकेलि ते चौंकि इतै उतै नीके निहारत। है कुलकानि छकी लघुता अरु मैं गुरुलोगनहूं को बिचारत ॥ धाय धसी तबै भानुजा-नीर मैं न्हान को गोरो छबीले सुधारत। बूड़त यों कजरा दिसै आनन मानो० ॥

छैलनि छैल छबीलि मिलै चली जाति है चन्द्रिका चारु बगारत। हीरा को सीस लसै सिरफूल बसै छबि ऐसो अनग को वारत ॥ स्वेत में बारन की मिलि आभा सु कालिंदी नीर सी नीलता ढारत। नील पहार पै बैठि निसङ्क ह्वै मानो मयङ्क कलङ्क पखारत ॥

पण्डित अम्बाशङ्कर जी – काशी।

कीरतिजा को लखे सुखमा मुख मानि गलानि बिचार बिचारत। आवत नाहिँ न नेक मने करि भाँतिन २ व्यौंतन हारत ॥ जाय नहाय सुधानिधि मे पुनि आय मिलाय लजाय सिधारत। सङ्करसीस सरी सुर मे अब मानो० ॥

प० गिरधर लाल बनारस ।

जागि कै रात उठी परभात जम्हात लजात सकात निहारत । आँखि सुधा बिषबारुनी सो भरि मंत्र बसीकर सीकर मारत ॥ अङ्ग अनंग छटा दरसै सरसै ससि सारी सरीर सम्हारत । गिरधर पैठि कै रूप के सागर मानो० ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कबि ।

है कुच सम्भु सुमेर के मध्य मे मोती लरी छबि गंग को धारत । बेनी रोमावलि स्याम मनोहर श्री जमुना सी लखात निहारत ॥ ता बिच रेख नखच्छत की उपटी उपमा यहि भाँति पसारत । दोऊ को तीरथ संगम जानिकै मानो मयंक कलङ्क पखारत ॥

बाल मै लाल नहात लखी दृक जा सुघराई रती-मद गारत । टीको मृगम्मद को लग्यो भाल जो ताहि कनाल मे धोय पवारत ॥ बेनी मिलि कर आनन के उपमा अनमोल यही निरधारत । पाय सहाय सरोज सहोदर मानो० ॥

व्रजचन्द जी बल्लभीय—काशी।

देखतही मुख आरसी मैं कबरी निज हेरि जो स्याम समारत। औरै भई तिय बोलति नाहिँ बिलोचन कंज दुवो जल ढारत॥ अंजन आँसुन संग बहैं व्रजचन्द इही पर तर्क बिचारत। पावन प्रेम समुद्र तरंग मै मानो॰॥

कोटिन जन्म गवाइ दियो नित ज्ञान बिराग समाधि सुधारत। दोष गयो नहिँ बासना को वह कौन पस्यो मन जाहि निहारत॥ बल्लभ प्रेम मैं पागि रह्यो नहिँ नेकु गोपाल मुकुन्द बिसारत। पैठि व्रजेन्दु सुधा रससिन्धु मैं मानो॰॥

गयानिवासी पं॰ गिरधारीलाल जी गयावाल

केलि करी अलबेलि बधूनि करी पिय भौन ते केश सँभारत। कंचुकिडोर भली बिधि बाँधत औ सिकुरी चुनरी निज झारत॥ त्यौं मुसुक्यान कछू मुख ऊपर हीरे को हार हिये पर डारत। आरसि लै पिक लीक मिटावत मानो मयङ्क कलङ्क पखारत॥

कोपागंजनिवासी कवि सालिग्राम जी।

प्रात समै सरि मज्जन कों चलि जात अली बिछिया झनकारत। देखि दुकन्तहि तीर नगीच धर्यो लहँगा उपरैनी सुधारत ॥ सालिक या विधि कण्ठप्रवाह मे ठाढ भई छवि अंग बगारत। डूबै उबै लखि होत प्रतीत सु मानो० ॥

श्री ठाः महेश्वरबक्ससिंह जी तालुकेदार—रामपुर मथुरा।

दर्पण लै वृषभानुसुता मनमोदित आनन आप निहारत। कज्जल रेख कपोलहि पेखि भखी मन ताहि कुरूप विचारत ॥ नीर मँगाइ प्रक्षालत आनन बारहि बार सुछीटन मारत। मोदित चित्त बखान महेश्वर मानो० ॥

प० जानकीतिवारी (इन्दुकवि) सूर्यपुरा (शाहाबाद)।

आज मैं लाल लखी ललना इक जाको सुरूप सची मद गारत। न्हाइबे को धसी गंग तरंग मे जातट ध्यानी सुध्यान को धारत ॥ धोइबे को मृग अङ्क ललाट को ऊबति यौं उपराति ह्वै आरत। प्रात सुनिर्म्मल नीर समुद्र मे मानो मयङ्क कलङ्क पखारत ॥

गधौली ज़िला सीतापुरनिवासी बाबू युगुलकिशोर जो उपनाम ब्रजराज।

केलि कै भोर उठी नवला अधमूदे बिलोचन कोर निहारत। त्यौं ब्रजराज सखी मुसकाय भले बिथुरी अलकैं निरवारत॥ लाय दोऊ कर मै जल को मुख धोवत यौं उपमा बिसतारत। मानि हिये हित री जलजात को मानो०॥

श्रीकिशोरीलालजी गोस्वामी आरा।

चाल गयन्द सी सेजनि लौं चलि धार किसोरी जुन्हाई सी ढारत। मोहनै मोहि लियो रति मै श्रम खेदन मे कृतियान उघारत॥ प्यार खुमार भरी पिय सों सिगरी निसि बैन अमी से उचारत। टारत यों तिय आनन सों कच मानो मयङ्क कलङ्क पखारत॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी।

आजु लखी ललना इक लाल हौं कालिँदी कूल सों कुंज पधारत। सीस लगे मृग के मद टीकहिँ हाथ सों नीर मै पैठि निखारत॥ ता

खिन के श्री कर कों इमि सुन्दरता मन मोर बिचारत। पङ्कज बंसज बैरिहु कौ दया मानो०॥

देखि प्रिया मृग के मद बिन्दुहिँ सीस को आपने हाथ निखारत। मोद सुसील महा मन भो तिहि की उपमा इहि भाँति बिचारत॥ लोभी अमी अमीपावन कों फनि कंज भवानि सों धीरहिँ टारत। नागिनि बैनि हटाय हटाय कै मानो मयङ्क कलङ्क पखारत॥

दासापुरनिवासी प० बलदेवप्रसाद कवि।

है यह सो ब्रजमण्डल भूषण जा हित को हरि धीर न धारत। न्हान धसी यमुनै बलदेव जू चाल मतंगन बाल बगारत॥ भाल मृगम्मद लीक लगी तिहि धोवत जोवत कान्ह को आरत। टारि कै पन्नगी पङ्कज सों महा मानो०॥

श्री चन्द्रकला बाई—बूंदी।

बीति गई सब राति पिया सँग जागत केलि कलान पसारत। प्रात उठी वृषभानुलली अलसाय रही दृग नीठि उघारत॥ चन्द्रकला कल

कज्जल आनन फैलि रह्यौ वह ताहि निहारत।
धोवतही अपनो मुख बाल सु मानो० ॥

कोपागंजनिवासी मारकंडेलाल उपनाम चिरजीव कवि।

प्रात उठी पिय पै ते तिया निज आरसी मैं मुख इन्दु निहारत। बैठी दरीची लजाय कछू कर झारी लिये निज अंग सम्हारत॥ भाल को अंजन धोवति बाल कहै चिरजीव छटानि बगारत। आनन अङ्क को देखि ससङ्क ह्वै मानो मयङ्क कलङ्क पखारत॥

पं० गणपतप्रसाद गंगापुत्र (उपनाम श्रीवर) अयोध्या।

कै निसि केलि भली ललना परयंक पै बैठि सुगन्ध बगारत। श्रीवर या छबि कासो कहै अँग अंगन पै रति कोटिन वारत॥ झारी हिरन्य की तामे भरे जल चेरी लिये दुहूओर ते झारत। पाणि सरोज सो माजि रही मुख मानो० ॥

मिश्र सेवक श्याम कवि मऊगंज - रीवा।

नाइन लाय सनेह सुगन्धित केस छुटी दुलरी को सँवारत। औचकही तहँ आय गयो

पिय देखि भजी तिय घूंघट डारत ॥ सेवक श्याम कपोलन ह्वै कुच पै उचके कच यों छवि धारत । श्रौनन कौं मरवोरि सुमेर पै मानो० ॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा ।

श्री ब्रजनारि धमी जलधारहिँ बार बिगोवत धोवत झारत । कानन तान परी मुरली चित औचकहीं चहुंओर निहारत ॥ राधेचरन्न लख्यौ नँदनन्दन आतुरहीं पट सीस सुधारत । नीर चुये लट सौं बिधु आनन मानो० ॥

छब्बीसवा अधिवेशन ।

मिती फाल्गुन बदी १ सम्वत् १९५१

अनङ्ग की चढ़ाई है ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु ।

पवन निसान लिये उडत पराग धूल कोकिला औ कोयलहू बाजे जो बजाई है । कहै रससिन्धु फेर मोरन ने डङ्का दियो सोर होत

ठौर ठौर भोर भीर आई है ॥ आम कचनार टेसु सरसो गुलाबफूल चली है जु फौज साथ सोभाहू देखाई है। मन के मतंग चढ पंचसर धन्वा लिये संग रितुराज के अनंग को० ॥

सारी है निसान बाजा नूपुर को भनकार कुच मानो बरछी से नोकहु दिखाई है। कहै रससिन्धु तहाँ गोली कुमकुमा चली गोला जो गुलालन के पोटरी चलाई है ॥ भीर भई भारी होरी खेलै जहाँ राधा श्याम फाग को समर माभ सोभा सरसाई है। भौंह की कमान तान पंचसर आंखन तै मारत है प्यारी ये अनग० ॥

महामहोपाध्याय श्रीयुत पण्डित सुधाकर जी द्विवेदी
खजुरी—बनारस।

सौरभ रमाल भुकि भूमि भूमि बौरो भयो सुमन समेत मन बेदना बढ़ाई है। कहत करेजो करि कुहू कुहू कोयल हू पीव कै पपीहा जीव तन ते कढाई है ॥ बिकल परी है घर सुघर सयाने सुनो जार द्विजराज मार औरही पढ़ाई

है। व्यङ्ग बदरङ्ग भङ्ग अङ्ग अङ्ग अङ्गना के सङ्ग नाहीं नाह औ अनङ्ग की च० ॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

करना असोक आम केवड़ा कमल फूले फिरि गई ब्रज पंचवान की दोहाई है। कोकिल नकीब साँग बैहर बसन्त लाल टेसू बन फूले ज्यौं दवागि सी लगाई है॥ बिन बलवीर बलवीर की सौं एरी बीर धीर धरैं कैसे पीर चौगुनी बढाऽई है। फौजदार माधो सँग माधवविहीन लखि ऊधो आज ब्रज पै अनंग० ॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी बनारस।

कनखौ अनोखी विष आँजति सवति नैन कुच की कसनि छवि अतुलित छाई है। लट की लटक लखि आय है लरि उन्हें हारि है जतन जेती गुनिन बिताई है॥ सब तौ भलाई है बुराई इतनी ही भई साची कहो बात हरिशङ्कर दोहाई है। एक लरिकाई जाहि सुता सो खिलाई मेरो संग छोडि जाई जो अनग० ॥

काशीनिवासी पं॰ केदारनाथजी ।

आनन अनूप प्रभा पुंज सरसान लागी दाडिम गुलाब कज मंजु छवि छाई है । दुरि कै सुधाई अँखियान चपलाई बसी भौंहनि मैं भूरि बङ्कताई दरसाई है ॥ अकुर उरोजन की ओजता बिलोकि बनै सरसो समान ह्वै सुपारी सरसाई है। गोली ह्वै लगलिल की केदार जू बखानौं सोय अगना के अग [illegible] अनंग॰ ॥

करि कै बसन्त सोभा सरस अनन्त आछे प्रबल पराक्रम दिगन्त दरसाई है। कोकिल की कूकनि अवाज है भुसुण्डिन की सारँग को सोर घोर सुभट सहाई है सुर नर नाग मुनि मोहित किये केदार का[illegible] विलास को हुलास चित चाई है। छाई दुहुं लोक मैं दुहाई अतनीको आज सिव के समाधि पै अनंग॰ ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

फूलो है गुलाला औ गुलाबकलियान लाग्यो भाग्यो जोर सिसिर बहार बेस छाई है। श्रामन

को डारैं बौरि बौरि कै झुकी हैं भूमि तापै बैठि कैलिया कुहूकुहू मचाई है ॥ बेनी द्विज गुंजत मतंग भौंर चारौ ओर मोरन को सोर येही प-रत जनाई है। फिरत दोहाई रितुराज की ज-गत आज मानौ गंगधर पै अनंग० ॥

तारे संग सुभट करारे बिकटारे जोर चोप दै चकोर डङ्का सोर कै बजाई है । कुंजर से झूमत मतग भौंर भीर धाई कोकिल नकीब बोलै बिरद बढाई है ॥ कन्त बिन अबला एकान्त पाय बेनी द्विज चैत चाँदनी के ज्वाल जालिम जगाई है। पाइ बर कुमक निसाकरनरेस जू की बीर बिरहीन पै अनंग० ॥

पं० गिरधरलाल जी बनारस ।

कहाँ मेरे पाँयन की गई चचलाई माई काहे ते नितम्बन मै मीनता समाई है। कारन कहा जो छीन भई करिहाँव मेरी येरी देख आँ-गिहू सुअंग तंग पाई है ॥ खेल गुडियान मे न नेकहू लगत चित्त टेढ़िये चितौन आँखि कानन

लौं छाई है। गिरधर भये हैं सब औरै के औरै ढँग तेरे तन तरुनी अनंग० ॥

इत वृषभान की कुमारी सुकुमारी संग फाग के उमग ब्रजबीथिन मे आई है। उत नँदलाल संग लीने सब ग्वालबाल ख्याल मिलि दोउन परसपर मचाई है॥ चलो इत उत ते पिचकारी अबीर उडी माची धुंधकार कछु पड़ै ना देखाई है। गिरधर दुहूं के रंग रँगे है दुहून तैसे दुहुन के अंग पै अनंग की च० ॥

बा० माधोदास जी - काशी।

धूंधर कै मचाई धूम धरनी अकास धुंध धारा धर धार सी सुरग पिचकाई है। गैल गैल गोपी सब गजब गुमान भरी गहि कै गोपाललाल ग्वा-लन पै धाई है॥ मैन मदमाती मतवारी भई माधव पै मारि मारि मूठ महा मोद मे मढ़ाई है। होरी मिस गोरी बरसाने की मचाई जंग मानो गंगधर पै अनग की० ॥

छबीले कवि – बनारस।

सीतल समीर सोई सुघर सिपाह वर सुमन सिपाही साज दलन मढाई है। सुकबि छबीले मन्द सरस सुगंध सोई छैल मद छाके मग पगन बढाई है॥ कूकन सो कोकिल बजावत बिगुल आली चटक्यो गुलाब सोई है नली कढाई है। मानो रितुपति के सहाय करिबे को ऐसे सुभट प्रसंग लै अनंग० ॥

रंग चढ्यो आनन उमंग अंग अंग चढ्यो ढंग चढ्यो औरहि छबीली छबि छाई है। सुकबि छबीले चित चंग लों चढ़्यो है अरु दंग चढ्यो सौति पै दिखैयन दवाई है॥ संग चढ़ी सुन्दरता तरल तरंग लैकै गंग सो चढी यों बैस लूटि लरिकाई है। तंग चढी अँगिया अली को आजु मेरी आली जंग चढ्यो जोबन अनंग० ॥

काशीनिवासी पं० सिद्ध कवि।

विदित भई है महा महिमा मही मे जाकी बन उपवन प्रफुलित छबि छाई है। उमगि चली

हैं सबै सरिता पयोनिधि पै द्रुमन लवङ्गलता लोनी लपटाई है ॥ जाने एक छिन मे छकाय दीन्यो शङ्कर को सुमन समूह जाकी बिपुल बड़ाई है । हाय अब व्यथित बियोगिनि पै सिद्ध कहै अङ्ग बिनु कैसी या अनंग० ॥

बाबू छेदी कवि काशी ।

मत्त गज मारुत समस्त मतवारे मधु बिरद बखाने पिक कबि से सवाई है । फहरैं निमान लहराने सरसानी छटा पुहुप दरसाने कोकुन्त से अढ़ाई है ॥ छेदी कहै चहूँओर सुभट प्रचण्ड कीर बिरही डेराय भागि चलत पराई है । दुर्जन प्रमस्त धीर गढ़ के ढहाइबे को कुमक बसन्त लै अनंग की च० ॥

लाली लहरान ओठ ललकैं द्विजवेलिन की चंचला छटान दन्त दमक दबाई है । कुच दरसाने चारु लङ्क पतरानी खचित हरखाने श्याम लखि मन भाई है ॥ छेदी कबि सरस समूह मुख जोवै चोखै लोचन कराल बान असिन झुकाई है ।

गवन मतंग जंग जीतत उमगभरी अग२ बाल पै अनग की चढ़ाई है ॥

काशीनिवासी ब्रजचन्द जी वल्लभीय।

देखि अति सुखमा नबेलिन की कम्प होत अंगनि सकल पुलकालि अति छाई है । होत स्वरभंग मुख होरी ना कढत रंच चक्रित भई है मति गति बिथकाई है॥ पिचकी चलति नाहिँ गौरव गँभीर हेरि होइ ब्रजचन्द जिय ऐसी कदराई है। आई जुरि फाग की उमंग मैं सकल ग्वारि मेरे जान भई जू अनंग० ॥

खग मृग बिपिन बिनोद उपजाइबे को सीर धीर सौरभ समीर सुखदाई है । सुभग सँयोगिन के सुख सरसाइबे को चैत चन्द्रिकाहू पै अनूप ओप छाई है ॥ छाकि रस आम्र मौर माधौ भरि कोकिलाहू फेरति दिगन्त रतिकन्त की दुहाई है। बिरही बिदारिबे को सन्त पन टारिबे को होति रितुराज मै अनंग० ॥

श्री कमलापति जो अयोध्या ।

सुभट उरोज है निकारि लरिबोई चहैं अ-
गनित सैन रोमराजीहू कढाई है । प्रान हरिबे
को दृग कान ते कहैं ये कछू भौंहनि कमान
त्यौर बरछी बढ़ाई है ॥ सौंह कमलापति की
साँची तौ बताव बीर कौन बड़ भागो कोक
कारिका पढ़ाई है । सौतिन को रंग बदरंग
करिवे को अरी अंग २ तेरे या अनंग० ॥

मिश्र सेवक श्याम कवि मऊगज—रीवा ।

शासन को पाय बीर जोबन वजीर आय प्र-
थम सफाई तन दीपति बढाई है । खोय चच-
लाई थिरताई को सुथिर थापि उरज निसान
नोक बरछी मढ़ाई है ॥ मिश्र कबि धुस जुग
मोरचा नितम्ब चढ़े नैन कामनैतन को चातुरी
पढ़ाई है । खिल रंग रागी लरिकाई कै सु जग
छिल तेरे अग देश पै अनंग० ॥

बाँकि बीर सैनिप बसन्त को बोलाय मैन शा-
सन सुनायो झूमि सूरता बढ़ाई है । मानी मा-

निनीन के सु मान गढ़ तोरो जाय करि कै उ-
पाय जैसी हमने पढ़ाई है॥ फूल धनु बान मेरे
भौंर भीर फौज मिश्र लेहु बिषबोरी बीर बरछी
गढ़ाई है। चौहूं कूक कोकिल की फेर दो दो
हाई अब भाई बचे रहियो अनंग० ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलाल जी गयावाल

होन पतझार लागे बीर आम डार लागे ता-
पर झकझोरनि बयारहूं बढाई है। कहैं गिर-
धारीलाल अरु चहुंओरन ते कोकिला की क-
एठन ते मजु धुनि छाई है॥ सूझत उपाय नाहिँ
पीर नित अधिकाय देखि मन बीर री अधीर
ते मढ़ाई हैं । कैसे कै बचैये प्रान राखिये सु
कुलकान प्रीतम नहिँ संग औ अनंग० ॥

जबहीं ते पिया परदेश को पधारे बीर त
बहीं ते दुःख देन लाग्यो दुखदाई है। कहैं गिर-
धारीलाल बारि ना सोहात खान पान ना मो-
हात अंग छाई पियराई है ॥ कहत सकुचाऊँ
पर तुम से दुराऊँ कहा याही ते सदाहीं जिय

रहै अकुलाई है । संग की सहेली तू है औषधी बताय ऐसी जाते नहिँ होय री अ० ॥

श्री ठा॰ महेश्वरबक्ससिंह जी तालुकेदार—रामपुर मथुरा।

बाजत नगारे मेघ चातकी नकीब बोलैं कूकत मयूर सूर क्रूरता टुराई है। बिज्जुली चमंकै बीर आयुध दमंकै मानो झिल्ली दादुरादि शब्द बाजै सहनाई है ॥ भाँति भाँति मेघपाँति सिन्धुरादि चारि भाँति सैना कोपि कैधौं चहूँओर चलि आई है । प्यारी को बिदेश में महेश्वर बिचार कीन्ह पावस न होइ या अनंग० ॥

पं॰ गणपतप्रसाद गंगापुत्र (उपनाम श्रीबर) अयोध्या।

लखिये परस्पर कहानी बिरची अनूप उतै है पलास इतै ओठ पै ललाई है। अङ्कुरित अम्ब उतै कलित उरोज इतै उतै पतिझार इते कटि की छिनाई है ॥ श्रीबर जू डोलत समीर सो लफत डार इतै गति लङ्क लफै प्यारी सुखदाई है। जैसे रितुराज चढ़्यो बिपिनि समाजन पै वैसे नवबाल पै अनंग को० ॥

बाबू शिवपालसिंह – भिनगा ।

चोप-भरे चोपदार कोकिल कलापत हैं पाँति २ पुलिस पलासन सजाई है । भाँति २ सुमन सिपाहीगन राजि रहे अलिकुल सिवपाल करखा कढ़ाई है ॥ साजे पील पल्लव नवीन तरु मोहैं भले बोलि बोलि उठैं खग जीत की दुहाई है । सैनप बसन्त संग दल रंग रंग साजे देखो सखि आज यों अनंग० ॥

गंधौली जिला सीतापुरनिवासी बाबू युगुलकिशोर जी उपनाम ब्रजराज

कोकिल करौल पिक निकर हरौल भौंर पुंज गुंज बन्दीजन विरद पढाई है । किंसुक अनार पैन्हे बसन सुरंग बीर सहित समाज सैन सकल कढाई है ॥ बिन ब्रजराज ब्रजबचन दुलाज कौन राज हित चित चौप चौगुनी बढ़ाई है । आली या बसन्त समै अबल बियोगिन पै रोस युत सबल अनंग की० ॥

श्री चन्द्रकला बाई—बूंदी ।

हैं न घनस्याम पाँति लागी गजराजन की

धुरवा न बाजिन की दौर दरसाई है। मुरवा न बोलैं ताप तोलत कवादि रोपि गरज न दुन्दुभी की धुनि सरसाई है ॥ चन्दकला दामिनी न दमक हथ्यारन की चातक चिकार नाहिँ फिरत दुहाई है। सोचि न बिदेश तें बियोगिन भगावन कौं पावस न है गी या अनंग० ॥

दासापुरनिवासी प० बलदेवप्रसाद कवि ।

अहिकुल केश कारे कुवन छ्वान लागे बलदेव बिसिख कटाच्छण कढाई हैं । लोनी लङ्क लसन लगी है मृगराज कैसी उन्नत उरोजन पै मौज की मढाई है ॥ लोभवस लोपै लगी लाज की ललित लीकताई बरुणाई सिसुताई की काढ़ाई है। चातुरी प्रसंग रंग औरै अंग अंगन के उदित उमंग मैं अनंग० ॥

पण्डा घनश्याम जी कवि कांकरौली मेवाड ।

सीतल समीर लागे सुमन सुगन्धन तें पंपा सरोवर मध्य झंपा करि आई है। घनश्याम प्यारे काकपाली कीर कोकिलान केकिन कदम्बन पै कुहुक मचाई है ॥ जैसी चन्द्र चन्द्रिका पराग

पै मधुप गुंज मो सम बसन्त पाय सयन सजाई है। धीर ना धरै री पंच तीर लै चल्यौ है आज बीर बिरहीन पै अनंग की० ॥

कोयल न जानों ये तिलंगन की फौज मानो गुंजत मधुप नाहिँ तोपन चलाई है। घनश्याम प्यारे चले मारुत मतंग गति अतर अनेक रंग बाज छबि छाई है॥ चन्द्र चन्द्रिका न जानो समर समैया दृढ़ कोकिला की कूकन नकीब टेर आई है। साज दल पंचबान राग की कृपान लिये धायौ बिरहीन पै अनग० ॥

सिहोर (काठियावाड) निवासी कबिगोबिन्द गीलाभाई।

बोलत बिरद बन्दी मंजुल मधुप महा केला दल केतन की आभा अधिकाई है। बाजत बिबिध भाँति बाजन बिहंग बानि कुन्त केवरा की रही सोभा छहराई है॥ गाजत गुलाब केरी बहुधा चटक सो तो शब्द सूर बीरन के सोहे सरसाई है। गोबिँद सुकबि ऐसो निकसो बसन्त कैधौं चालो बिरहीन पै अनंग०॥

जसुमति नन्द है ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज

उपनाम रससिंधु ।

गोपी ग्वाल झुण्ड लिये दोऊ ओर ठाढ़े भये बाजत है ढोल डफ नाचे कृष्णचन्द है । कहै रससिंधु तहाँ रमियो जो गावैं सभी भाव को बतावे स्याम आनँद के कन्द है ॥ उडत गुलाल घन छाय रहे लाल मानो चचला सी दौड़े बाल हँसि मुख मन्द है । राधिका के संगे खूब जाव ओबठेन माझ खेलत हो रंग आज जसुमति० ॥

खेद मकरान के जु मन्दिर बिसाल बाग फूली फुलवारी जहाँ अतिही सुगन्ध है । कहै रससिंधु तहाँ रंग के फुहारे छूटे रंगन सो हौद भरे न्हात कृष्णचन्द है । बाज रहे बाजा सब गावत धमार होरी नाचे ब्रजनारी ग्वाल आनँद के कन्द है ॥ खेल रहे होरी आज नवलकिसोरी स्याम देख रहे खड़े तहाँ ज० ॥

बाबू रामकृष्ण बर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

एरी बीर बारबार तोसों करजोर कहौ प्यारो मनमोहन हमारो सुखकन्द है। केहूं बिधि लाय ताप हिय को नसाय मेरो मानस जुड़ाय क्याय दै री तू अनन्द है॥ भूलै मत तोहिँ पतो नीकै कै बुझाऊँ जाहि जमुना की तीर जहाँ ठाढ़ो ब्रजचन्द है। बेनु को बजैया चित चावन चोरैया व्रज गैया को चरैया वही जसुमति०॥

महामहोपाध्याय श्रीयुत पण्डित सुधाकर जी द्विवेदी
खजुरी—बनारस।

राजत दुकूल अनुकूल घनश्याम अङ्ग घनश्याम सङ्ग मानो चञ्चला अमन्द है। मुरली सुरीली सुधा अधर अघाय बोलै गूंजै अलिमाला जनु कंज मधि बन्द है॥ होय कै अनेक शशिशेखर निहारै एक होय लटू प्यारी शशिशेखर सुछन्द है। आनंद को कन्द जगबन्दन अनन्द भरो कीरति दुआरे अरो जसुमति०॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी।

आयउ मथुरा सों ब्रजमाहिँ अक्रूर आली

देडू कै बहाली बनमाली सुखकन्द है । रथ पै चढाय लै गयो री ना कहो री जाय कूरता कठोर कीनी दीनी दुखदन्द है ॥ जाग्यौ भाग कूबरी को खूबरी केदार सांची ब्रजबनितान प्रान बाभ्यो प्रेमफन्द है । भूलै ना भुलाये काहू भाँति रूप नैनन ते पीतपटवारो प्यारो ज० ॥

चातुरी पयान ह्वै है प्रान के पयान होत कफ पित वायु कण्ठ छाये दुखदन्द है । उद्यम अनेक करि संचित किये जे दाम रहिहै यहांही तजि तोको मन मन्द है ॥ मार मद ह्वै के दार करत पियार पुंज लैहै ना छुराय सोऊ बभे यमफन्द है । ताते छलछन्द छोड़ि भजु पद कंज मंजु दीनबंधु दूसरो न जसुमति०

बाबू हरिशंकरप्रसादजी—बनारस ।

जा दिन ते देख्यो तुम्है न्हात जमुना के तीर वाके तन व्यापी पीर मैन दुखदन्द है । गिरि गिरि जाति सारी सीस ते न ख्याल कछू ननद सुधारै तासो खीझै मतिमन्द है ॥ भनै

हरिशङ्कर न खोलति नयन नेकु बोलति तौ याही बात अमित पसन्द है। प्रेम रजु फन्द है कौ सागर अनन्द है कौ मोह नभ चन्द है कौ जसुमति नन्द है॥

प० गिरधरलाल बनारस।

सोरह कला को ससिपूरन मुखारबिन्द जाहि लखि होत अरबिन्द चन्द मन्द है। सोरह सिंगार सजे भूषन बसन अंग छहरैं छबीलो छटा छाये छलछन्द है॥ सोरह बरस की सोहान सखियान संग तारागन जुक्त फिरैं टहरत चन्द है। गिर्धर गरूर गात जोबन सरूर भटू देखि ते लटू से भये जसुमति नन्द है॥

जिनकी कहानी इन कानन सुनात हुती तैंहूं तो बतात हुती आनँद को कन्द है। सीस पै मुकुट कर लकुट बैजन्तीमाल मिलगे तमाल तरे मिट्यो दुखदन्द है॥ परि २ पाँय करी बिनती हहाऊ भरी एकहू न मानी खाई सौ सौ सौगन्ध है। गिर्धर आज ते न बाहर कढ़ौंगी भूल भादौं चौथ चन्द किधौं जसुमति०॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

जाकी गोद खेलि मोद दीन्हों भाँति भाँतिन को मचल मचाय माँग्यो जासों नभचन्द है । जाकी दधि मथत मथानी गहि बेनी द्विज छीन छीन खाते छाँछ दधि जो पसन्द है ॥ माटी मुख घालते जो साँटी ले पहेटती थी कहती कहो तो कियो काहे मुखबन्द है । ऊधो यही माधो सों हमारी नेक पूछियो तो आवत कबौं सो याद जसुमति० ॥

कृष्णजन्म सुनत समस्त ब्रजमण्डल मे छायो गोप गोपिन के अमित अनन्द है । गावत बधाई धाई भीर नर नारिन की पायो वही माग्यो जौन जोई के पसन्द है ॥ दीन्हे गजराज बाजि सुन्दर सुसाज साजि गौवैं दई जाको दूध मीठो मनौ कन्द है । दान दैदै द्विजन महान सनमान करि दारिद को फन्द काट्यो ज० ॥

छबीले कवि – बनारस ।

अबला न कैसी कैसो निबल भई हैं लखो

प्रबिस बियोग रोग लूटत अनन्द है । सुकबि छबीले गति भोर के तरैयन सी ह्वै गई सु गोपिन की ओप अति मन्द है ॥ कीरतिकिसोरी कहै कब लौं सहौंगी पीर रावरे बिलोकि कस्यो और दुखदन्द है। आये कहा तुमहो अकेले ब्रज ऊधव जू निर्दई निपट कहां ज० ॥

बारन बनाय कै सिंगारन बनायो करै बसन पिन्हायो करै दै रँग पसन्द है। सुकबि छबीले सुचि सरस सुगन्धन को रुचि सों लगायो करै अंगन अमन्द है ॥ मेरे जान आली कीधौं मन्त्र मोहनी को पढ्यो आज लखि आई यह अचल अनन्द है। कीरतिलली के अनुराग मे मगन ह्वैकै पगन पलोटै वह ज० ॥

बा० माधोदास जी काशी।

औरिन गुलाल लै उड़ावै नभमण्डल में ताकि ताकि मारै पिचकारी छलछन्द है। ग्वाल बाल संग लिये डफ को बजावै गावै धावै करि धूंधर मचावै फरफन्द है ॥ माधव जू कौन यह

साँवरो सलोनो बीर धीर ना धरात मोपै देखि मुखचन्द है। आनँद को कन्द कृष्णचन्द है सु-नाम आली जननी जनक याको ज० ॥

ब्रजचन्द जो वल्लभीय—काव्यो।

अद्वुत तेजोमय पूरन अनन्द ब्रह्म व्यापक बिराट परब्रह्म परानन्द है। योग ईश नित्यहो निरजन औ बासुदेव अग ये दमो हैं अंगी परम स्वछन्द है॥ बल्लभहि मिल्यो गिरिराज की गुहा तैं कढ़ि उदैपुर माहिँ जाकी महिमा अमन्द है। प्यारी मुखचन्द को चकोर ब्रजचन्द सोई परम उदार प्यारो जसुमति० ॥

जैसी तू रसिक रिझवारि कलिकन्दिनी है सुकवि गुबिन्द त्योंही कलुष निकन्द है। सिवा सिव जू की स्वस्वरूपानन्दिनी है ज्यों तू जीवन को त्याहीं हरि पौरुष अमन्द है। भाग औ सु-हाग भरी जैसी तू जगतवंद्य स्वय भगवान श्री-गुपाल त्यों स्वछन्द है॥ जैसा ब्रजचन्द वृषभान-नन्दिनी तू नित्य भक्त उर चन्द त्योहीं ज० ॥

श्री पं० लक्ष्मीनारायण जी उपनाम कमलापति अयोध्या ।

मोर के पखौवन को मुकुट सुहायो बीर कुण्डल किरीट दुति देखी मै अमन्द है। सोहै पीतपट मोहै मन बनमाल उर बाँसुरी बजाय बरसावत अनन्द है ॥ मृदुमुसुकानि कमलापति बिलोको आनि मै तो बावरी सी भई देखि ब्रज-चन्द है। आनँद को कन्द संग ग्वालन को वृन्द आज मन्द २ आवै अरी जसुमति० ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलालजी शर्म्मा ।

अखिल अनन्त श्री अकाम अज निराकार निर्गुन निरामय निरीह सुखकन्द है। गिरधारी लाल तीनलोक मे प्रसार जिहँ बेद थाकि गाइ जौन गौरीपतिवन्द है ॥ बिधि नहिँ पावैं पार तरसैं सुरेस शेष काँपत हैं जाके डर तारा रवि चन्द है। सोई परतच्छ तेरो पूत ह्वै बिराजै गोद धन्य री तिहारे भाग ज० ॥

गैल रोकि गात पै गुलालन अबीर डारो गारी बकि मन महा मानहु अनन्द है । कहै

गिरधारीलाल मरे पै लपेटि भुज भोरी बनिता को कुच गहो निर्द्वन्द है ॥ नई नई रीतैं नित ठानो यह गोकुल मे करौ नयो नयो उत्पातहू अमन्द है। कोऊ ब्रजबाम जो कहैगो कहुं कंस से तो काम नाहिँ रहैं स्याम ज० ॥

श्री ठा० महेश्वरबक्ससिंह जी तालुकेदार —रामपुर मथुरा।

अच्युत अरूप रूप रूप मे विराजमान अगुण गुणाकर प्रसिद्ध सुखकन्द है । वन्दनीय पूरण पुरान अज तीनि देव कारण बखानै वेद आगम स्वछन्द है ॥ देवता मुनीश नर नाग वृन्द ध्यावैं जौन ताहि निजधाम देत काटि भवफन्द है । जासु यश गावत महेश्वरादि तीनिलोक प्रगट बिराजै सोई जसुमति० ॥

पण्डा घनश्याम जी कवि कांकरौली मेवाड़ ।

दसही दिना को होत पूतना पछार डारी मार डार्यौ कंसहू को मेटौ दुखदन्द है। घन-स्याम प्यारे कर धार्यौ गिरराजहू कों शक्र मान तोर्यौ वही आनँद को कन्द है ॥ अजामेल

तास्यौ और नाथ डास्यौ काली अहि गोपिन तें लीनों दान सोही ब्रजचन्द है। देख वह दुलही ले आयौ सिसुपालहू को अब तुम जान्यो कैसो जसुमति नन्द है ॥

मिश्र सेवक श्याम कवि मऊगज रीवा।

मंजुल चरन कोकनदश्री हरनहारे लाजैं लखि तारे नख जोति यो अमन्द है। काछनी विचित्र कटि फेंटा पीत अम्बर को बंशी पानि उर वनमाला सुखकान्द है ॥ मिश्र स्यामसेवक सुकानन मे कुण्डल त्यों राजै सीस सुन्दर मुकुट मोर चन्द है। देखि छबि जाकी कोटि मार छबि मन्द मेरे फन्द को कटैया सोई ज० ॥

गुंजन की माल गरे सोहत बिसाल लाल झलक कपोलन पै अलक अमन्द है। पान खात मंजु मुसुकात बतरात कहूं सखन समेत चाल चलत गयन्द है ॥ गावत सुगौरी बंशी मधुर ब-जाय बाँकी तान लै अजूबा अति छावत अनन्द

है । देख मुखचन्द दूर होत दुखद्वन्द मेरो आवत सु मन्द २ जसुमति० ॥

श्रीचन्द्रकला बाई – बूँदी ।

जब गज मारि धसे रंगभूमि माहिँ स्याम नारिन नैं जान्यो आयो काम सुखकन्द है । मल्लन नैं बज्र रूप दुष्टन नैं दण्डदानि कंस जान्यो काल मोहि करन निकन्द है॥ चन्द्रकला जान्यो पुरुषोत्तम महन्तन नै ज्ञानिन नै जान्यो तत्वदायक अनन्द है । गोपन नै जान्यो हम लोगन को पुन्यपुंज प्रानन तैं प्यारो यह जसु० ॥

बाबू शिवपालसिंह – भिनगा ।

सारी जरतारी धारि गई घन कुंजन में त्रिविधि समीर जहँ हरै दुखद्वन्द है । साँझ भई लौटत अकेली बनबीथिन मे दौरयौ मोपै वृष एक मारि क जकन्द है ॥ शिवपाल आय कै बचायौ इन श्रीचकही धाय कै ओढ़ायो कारी कामरी सुछन्द है । राम की दुहाई प्यारे भाई की कसम मेरी इज्जत बचाई माई जसु० ॥

गधौली ज़िला सीतापुरनिवासी बाबू जुगुलकिशोर जी उपनाम ब्रजराज।

नजरि नसीली सिर पाग जरबीली अति गति गरबीली मुसकाति मुख मन्द है। मुरली बजावै अलि मीठी तान गावै नित चित लल-चावै ब्रजजन सुखकन्द है॥ राजत कपोल पर कुटिल अलक लोल बोलन सुधा सी मृदु दायक अनन्द है। नन्दजू को छैया बलदेवजू को भैया हिय मेरे को बसैया एक जसु० ॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा।

बाँसुरी बजावै ललचावै मन मेरे कों सुन्दर अनोखो अतिलोनो ब्रजचन्द है। देखै बनि आवै फिर और ना सुहावै कछू धीरज नहिँ आवै जिन देख्यौ सुखकन्द है॥ राधिकाप्रसाद जिय भावै जब गावै लाल हिय हुलसावै मुसकावै छलछन्द है। आनँद को कन्द चन्द सुन्दर मुखारबिन्द डारै दृग फन्द बीर जसु० ॥

पं० गणपतप्रसाद गंगापुत्र (उपनाम श्रीवर) अयोध्या।

दारिद्‌-दरनवारे तारन-तरनवारे असरन सरनवारे कीरति बन्द है। दुख के हरनवारे सुख के करनवारे जस के भरनवारे प्रमुद अमन्द है॥ गिरि के धरनवारे शेष पै परनवारे श्रीवर सुखदवारे पेखु ब्रजचन्द है॥ मोर के मुकुटवारे अम्बर सुपीतवारे ऐसे गुण नीतिवारे जसुमति नन्द है॥

सिहोर (काठियावाड़) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई।

राजत ललाम रंग २ के सुमन कैधौं बेश बनमाल यह शोपत अमन्द है। बिकसे बिसाल यह सरसों सुमन कैधौं पीतपट भाय भूरि आनँद के कन्द है॥ गुंजत है भौंर कैधौं सोर सुभ बंसिन को तरु है तमाल कैधौं स्याम सुखकन्द है। गोबिंद सुकवि ऐसे स्वामिनि छलन काज आयो ये बसन्त कैधौं जसुमति नन्द है॥

सत्ताईसवां अधिवेशन ।

मिती फाल्गुन सुदी ' सम्बत् १९५'

मानो मेघमंडल धरापै आनछायो है ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

उमड़ घुमड़ घटा चारोओर घेर घेर गरजत बादरहु विज्जु चमकायो है । कहै रससिन्धु फेर बरसे है बेर बेर अतिही घुमड कर बडा भार लायो है ॥ बंसी को नाद सुन मन मे आल्हाद भयो प्रेमरस पुंज लाय तहां बरसायो है । इत घनश्याम उत राधिका जी विज्जु रूप मानो मेघमण्डल धरा पै आन छायो है ।

उड़त गुलाल घटा घेर रही चहुओर धुरवा सो बुक्का धूजा मदन पठायो है । जुगनू से हीरा हार नूपुर की झनकार दादुर धो करतार कोयल सो गायो है ॥ कहि रससिन्धु डफ गरजे ज्यों मेघ चारु आय घनश्याम प्रेमरंग बरसायो है । बिजुरी सी नाच रही राधिका जी कृष्ण संग मानो मेघमंडल धरा पै० ॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

नित को उराहनो मिटाऊँ सुन एरी बीर आज ब्रजराज साज होरी को सजायो है। अबिर गुलाल घाल बादर बनायो लाल चलैं पिचकारी मानो मेघझर लायो है॥ चलो चल मेरे संग जिय में सकावै जिन बीर बलबीर ऐसो धूंधर मचायो है। सूझत न हाथ सखी पास को दिखातो नाहिं मानो मेघमण्डल धरा पै०॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी।

खेलत रँगीली फाग रगभरे स्यामा स्याम रंग रग बागे पाग सुरँग रँग यो है। रंग की कमोरी गोरी ढोरी आन माधव पै लै लै पिचकारी भारी नारिन पै धायो है॥ रगैं को हजार हौद झरना झरै रगही को छूटत फुहारे महा रग बरसायो है। रंगन की रेलारेल माचो है सुरंगही को मानो मेघ०॥

छबिले कवि - बनारस।

आजु ब्रजमण्डल अखण्ड फाग खेल्यो हरि

अति अनुराग भयो रस बरसायो है । सुकवि छवीले राग गावत धमार मिलि सब सुख सार प्यारो बाँसुरी बजायो है ॥ उडत अबीर पुंज प्रसयो अपार छवि ता छन की सोभा अस बरनि बतायो है । उतरि अकास ते प्रभाकर प्रकास लिये मानो मेघमण्डल धरा० ॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी ।

आई भानुजा पै वृषभानुजा सखीन लै के नन्दलाल ग्वालबाल संग जुर आयो है । होड़ करि लागी होन होरी दुहुंओर जोर गोरी थोरी वैस की अनंग अंग ठायो है ॥ कुंकुम गुलाल भरि मारत गुविन्द राधे भारि २ झोरिन अबीरन उड़ायो है । छाडैं पिचकारी औ फुहारे रंगवारे भरे मानो० ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

आये संग ग्वाल लै गोपाल राधिका के द्वार घेरि चहुंओर घोर रंग बरसायो है । बेनी द्विज उडत गुलाल गोल गोरिन ते धूंधर अबीर को

अकास जाय छायो है ॥ देखि देखि सोभा वा समै की और मेरे मन कौतुक अजायब अनूप यही आयो है। गरजि घुमड़ि घहराय घेरि धाय २ मानौ मेघमण्डल० ॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी - बनारस।

मोतिन की लरी माँग मोई बकपाँति जानौ आभरन बीजुरी तड़ित छहरायो है। दादुर ज माति जोर नूपुर करत सोर चुरवा ठनक घोर घहर सुनायो है ॥ स्वेदकन बुन्द से गिरत हरि-शंकरजू गात नवला को बरसातहि लजायो है। जूरो खोलि केस चहुंदिस जो पसारि दीन्ह्यौ मानो मेघमंडल धरा पै० ॥

काशीनिवासी ब्रजचन्द जी बल्लभीय।

छायो है मयक मधु मानस अमल मंजु बंसी-बट जमुना निकट स्याम आयो है। आयो है तहाँही ब्रजगोपिन को मुख्य जूथ पुलिन पुनीत ब्रजचन्द मन भायो है ॥ भायो है हिये मैं रस-रास को उमंग लहाछेह मैं सकल निज संग पिय

पायो है। दामिनी सहित गरजत अति मन्द २ मानो मेघमण्डल धरा पै० ॥

संग लिये आये ग्वाल-गोल श्रीगोपाललाल बरसत रंग त्यौं गुलाल बरसायो है। इतै ब्रज-चन्द बरसाने की सकल बाल अबिर उड़ाइ अति ऊधम मचायो है ॥ दसो दिसि लाली किरनाली अति भोडर की कोऊ ना चिन्हात ऐसो फाग सरसायो है। बसंत गरजि मन्द कौं-धनि कला के सग मानो मेघ० ॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा।

नूपुर मंजीर मोर कोकिला चकोर सोर बा-जनो मृदगन को खन खहरायो है। गावनो म लार राग धमक धमारन की फागुन कौं फेर मनो सावनो सुहायो है ॥ राधिकाप्रसाद मुर हंसन नबेलिन की दामिनी दमक इन्दु धनु दरसायो है। उडत गुलाल धुंध छाई ब्रजमण्डल मैं मानो मेघमण्डल० ॥

श्री ठाः महेश्वरबक्ससिंह जी तालुकेदार—रामपुर मथुरा।

संग लीन्हे ग्वालबाल मोदित गोपाललाल अबिर गुलाल भरि झोरिन चलायो है। गोपिका अनन्त सग प्यारी के बिचारि फाग आइ मिली दुहुओर मोदही बढायो है॥ डारै एक दूसरे पै गाइ गाइ राग फाग भूमि नाक छाइ रंग आदि तै छपायो है । उपमा न आन चित्त आनिय महेश्वर जू मानो मेघ० ॥

दासापुरनिवासी प०बलदेवप्रसाद कवि ।

मरकत मणि दुति गात द्विज बलदेव अतसी कुसुम स्याम तामरस तायो है । तड़ित बसन त्यों हँमनमे दसन दुति ब्रन्दावन बीच ब्रजचन्द चलि आयो है॥ मुरली मधुर रव करत गिरा गरज पानिप अपार भरो गौर करि गायो है । मोरपच्छ मण्डल धनुषकार कुण्डल सो मानो०॥

मिश्र सेवक श्याम कवि मजगज – रीवा ।

साज निज साजि २ तरनितनैया तीर गोपी ग्वाल जुरि ख्याल होरी को मचायो है। तान

की तरङ्ग उठैं बाजहिँ मृदङ्ग डफ मन्द घन गरज समान शब्द भायो है॥ चलैं पिचकारी मिश्र कुंकुमा दुहू दिसि ते सूझत न नेकहू अबीर यों उड़ायो है। भौंडर चमंक चारु दामिनी दमंक युत मानो मेघ० ॥

श्री चन्दकला बाई—बूंदी।

रामचन्द्र जू कि राजतिलक समाज माहिँ आयो महिमण्डल को भूप सरसायो है। कपिगन भाल लिये वस्तुन बिसाल खरे अस्तुति करन वेद बन्दी तनु पायो है॥ चन्दकला देव यच्छ किन्नर अपार आय अप्सरान पूरन प्रताप यश गायो है। चारौंओर जोर तति लागी यौं बिमानन की मानो मेघ० ॥

बाबू शिवपालसिंह—भिनगा।

अलक सँवारि श्याम घटहि घटायो बाल मुकुतालरी सो बकपाँतिहि सतायो है। सूही सारी कंचुकी सों दामिनी दमन कीन्ह्यो सेंदुर को माँग इन्द्रधनुष लजायो है॥ शिवपाल पि-

चकी लै कीरतिकुमारी आज होली खेलि खेलि जलधार बरसायो है। सकल समाज साथ सखि मास फागुन मे मानो मेघमण्डल० ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्द गोलाभाई।

न्हाइ के गुलाब नीर राधिका रसाल जू ने सूखन समूह केश बेश बिखरायो है। पीठ पै पसर सोई कोमल कमर ह्वै के कुइ के छवा को अति छोनी पर छायो है॥ गोविँद सुकवि ताकी उपमा अपूर्व एक भाखन को भाव मेरे उर उफनायो है। चारु सीस अवर ते धाइ के उताल आज मानो मेघमण्डल० ॥

इन्दिरा सागर बीच रही है।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु।

सोवत शेष पै विष्णु चतुर्भुज नाभि ते नाल मे कंज सही है। त्यों रससिंधु विधाता भयो फिर चारहु बेद उचार कही है॥ सो प्रभु आप

सकार विराजत सृष्टि भई उनही ते मही है । दावत पाव निहारि के रूप को इन्दिरा० ॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी ।

खारी निकाम भयङ्कर भूरि सुमाधुरी नेक लखात नहीं है । ग्राह बड़े जलजन्तु भयानक क्रूरता की उपमा न कही है । रूप की आगरी सागरी सील की नागरी जामी न दूजी लही है । कौन बिसास करेगो कहो यह इन्दिरा० ॥

द्रव्य को देखि धरा मैं चहूंदिसि खानि खुदायो समस्त मही है । वायु के माण्डल तार लगाय गुबारो उडाय कै किर्त्ति लही है ॥ सोच बनायो जहाज यही अँगरेजन बीर बिचार कही है । रत्न को आकर है रतनाकर इन्दिरा०॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

पुर्ष करै पुरुषारथ जो तेहि के चित की सब होति चही है । पौरुष कै हरि सिंधु मथ्यौ दस चारि अपूरब बस्तु लही है ॥ दै द्विज बेनी दई कछु देवन संकर बोलि दयो बिषही है । आपु लई सब से जो अजायब इन्दिरा० ॥

छबिले कवि—बनारस।

तू बड़ी दाता तिहूपुर की जग तो सम और धरा पै नहीं है। दीनन को दरिआव दया की मया की महानद ऐसी कही है॥ जाहि बिलोकि छबीले कह्यो विधि पूरन ब्रह्म की सक्ति यही है। बन्दना ताकी करौं करजोरि जो इन्दिरा सागर बीच रही है॥

सुजान सुनो सबै कानन दै कछु बेद प्रमाण कही को कही है। अखण्ड तिलोकनहू में प्रचण्ड अपूरब सोभा समूह सही है॥ सु सक्ति अनादि पुरातन ब्रह्म की कीरति ताकी छबीले यही है॥ यह जो बृषभानु पै राधा भई सोई इन्दिरा सागर बीच रही है॥

प० केदारनाथ जी बनारस।

है जगनायक देवन को सुखदायक सन्तत बानि गही है। ध्यावत ध्यान लगाइ रिषी मुनि देह सुखाय अरन्य डही है॥ पेखि परै ना तबौं प्रतिबिम्ब केदार सो आसन सेस लही है। पंकज पाय पलोटिबे को पिय इन्दिरा०॥

आनन आछि कलाधर की अति पूरन पुंज प्रभा उमही है। बानी सुधा से केदार कहै व सुधा की मिठाई सिठाई लही है॥ बरुनी बर-छीन की नोकै महा बर भौंहनि बङ्क कमान सही है। नैन सरोज से लोल लसै मनो इन्दिरा० ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी।

को धरनी धरनीधर की बर बेद पुरान पुकार कही है। सो धरनी को पिता कहु कौन जु ता पितु की सुखमा को सही है॥ सो सुखमा जो करै निज मन्दिर सोऊ कहो निरधार यही है। उत्तर चार बिचारत माधव इन्दिरा सागर बीच रही है॥

ब्रजचन्द जी वल्लभीय—काशी।

काम निरै प्रद ता की तिया रति ता छबि लौं कबि बादि कही है। सारद बाकछली सम जो कहै ता मति नीच को मीच गही है॥ है न रमा सम भानुलली ब्रजचन्द बिचारिय बात सही है। देखहु बारुनी औ बिष के सँग इ० ॥

चल जानि चराचर को नितही अति चंचलता सबही सो गही है। हरि के पदपंकज को थिर जानि तहैं थिरता नित जाइ लही है ॥ थिर राखि सके न अनीसहु ईस तबै तिहि चंचला हारि कही है । अचला न भई जग मैं कतहूं जऊ इन्दिरा० ॥

श्री ठा० राधिकाप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा ।

बिन देखे न ये दृग मानत हैं दुख ठानत हैं छबि छाय रही है। हँस हेर के लाल हरो हियरा जियरा कसकै हठ पीर सही है ॥ मन तो मनमोहन के सँग गो तन राधेचरन् कुलकान गही है। अब नेह के सिंधु उमंग धसो जिमि इन्दिरा सागर बीच रही है ॥

श्री ठा० महेश्वरबकसमिंह तालुकेदार रामपुर—मथुरा ।

देखि प्रिया तव आनन की छबि लज्जित आप निवारि गही है। क्षीणित इन्दु भयो उर श्याम बढ़ै औ घटै समता न लही है ॥ संबरधाम लजाइ बसो रति और नहीं कछु बात

यही है। सुन्दरता सुनि तेरी महेश्वर इन्दिरा सागर बीच रही है॥

गयानिवासी पं॰ गिरधारीलालजी शर्म्मा।

एक समै एक सुन्दरि नारि गई यमुना चित चाव चही है। जाइ के तीर पै न्हान लगी लेइ के बुडकी जलधार गही है॥ दामिनि सी न दुराति दुती तिन ऊपमा दूजी न जात कही है। ऊपर ते छबि यों छहरै जनु इन्दिरा॰॥

पं॰ गणपतप्रसाद गंगापुत्र (उपनाम श्रीवर) अयोध्या।

बैठी सिँगार किये कुरसी पर सोहै सुरंग की चीर सही है। है कुच शृङ्ग मनौ कलधौत के श्रीवर है भुज कंज लही है॥ कैते करोरन वारे मयङ्क को आनन की उपमा न गही है। धौं यह रूप धरे हैं सोई जोई इन्दिरा॰॥

मिश्र स्यामसेवक रीवां।

बारि मे पैठि अन्हाय रही लली जाय हरे जमुना सुवही है। हीरनहार न सङ्ग कहूं जल सेत लसै जनु गङ्ग सही है॥ सेवक श्याम खरे

तट सोहत यों उपमा मनमाँहि लही है। आ-
गर रूप की सोहि मनो यह इन्दिरा० ॥

श्रीचन्द्रकला बाई – बूँदी।

है वृषभानुलली गुन आगरि नागरि तो सम
आन नहीं है। रूप निहारि सची सरमाय सुरा-
लय जाय पनाह गही है॥ चन्दकला रतिआदि
अनेक रही दबि धाम न देह दही है। त्योंही
लजाय मनो बच कायक इन्दिरा० ॥

अट्ठाईसवा अधिवेशन।

मिती चैत बदी ७ सम्बत् १९५१

लाल दशरत्थ के।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

बडो है बजार चौक भीर भई भारी तहाँ
अतिहीं चलाक बाजी खूबहि अरत्थ के। कहै
रससिंधु फेर राजा हैं हजार साथ बड़े गुनवारे
चारु सभी समरत्थ के॥ चली रनवास मे ते जा

नकी जी देखन को सुन्दर हैं अश्व लगे रानिन के रत्थ के। तबहीं गुलालन की पोटरी चलावे संग घोडन पै खेलैं फाग लाल दशरत्थ के॥

बाज रहे बाजा चारु हाथी को निसान आगे साँडनीसवार डङ्का भेजे मनमथ के। कहे रससिंधु फेर कोतल सवार घोडा लाखन पियादे साथ चले खूब गथ के॥ उडत गुलाल औ अबीर कुमकुमा रँग फूल बरसावे सभी हाथहु जो नथ के। हाथिन पै बैठे खूब राजा हैं ह जारो संग खेल रहे होरी चारो लाल द०॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी—बनारस।

जादिन तें हरि नारि हरि लायो मन्दमति जानि राज खेत बीज बोयो अनरथ के। अंकुर जम्यो जो दूत आय केते भट मार्‍यो केतिक बिकल लोटे भूमि बिना हत्थ के॥ ध्यान हरिशंकर बिसारि दियो सान करि चौगुन बढ़ैगो पाय जल मद गत्थ के। चौंकि चौंकि परै भाखि रानी दसभाल सेज हाय जीति लैहैं लङ्क लाल दशरत्थ के॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी।

बडे बडे बीरन ते छाड्यो ना पिनाक भूमि हारे करि दाप सूर सुभट सुमत्थ के। जनक नि-रास होइ निरादर बैन बोल्यो माखि सुनि लखन क्रोधकर्ता अकत्थ के॥ अज्ञा पाय गुरु को उठाय धनु लीन्हे राम तोरि डार्यौ चाप ज्यों तिनूका तानि नत्थ के। माच्यौ मोद मिथिला समाज मैं केदार सीय डार्यौ जयमाल ग्रीव लाल दशरत्थ के॥

एरे मतिमन्द दसकन्ध अन्ध निश्चराधि त्रि-सिरा बिराध बीर बिक्रम अकत्थ के। बालि बलसालि जेहि काँख मे रख्यौ है दाबि बीरता चली ना नेक तापै दसमत्थ के॥ आयसु दियो ना मोहि करुनानिधान नातो बदन बिदारि जीह काढतो कुकत्थ के। बोरि देतो बारिध मों लंकहि उपारि आजु जाता लेइ सीय सोहैं ला०॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

येई आय मार्यो है सुबाहु ताड़का को

बीर येई मुनिब्रुन्दन करैया हैं अरत्थ के । बेनी द्विज इनके समान हैं न दूजे और धरमधुरीन औ चलैया पुन्य पत्थ के ॥ येई धनुभंजिहैं ह-मारी जान साँची सुनौ येई अभिमान हैं ढहैया मनमत्थ के । येई जयमाल सिय हाथ सों लहैंगे गल ठाढे मुनिसाथ जौन लाल० ॥

बा० माधोदास जी - काशी ।

आई हैं बरन राम पाँचहू कुमारी मिलि लज्जा औ कीरति प्रीत दीनता सुगत्थ के । मा-धव जू भूमिसुता ठान के परन आई तोखो है पिनाक नाक राम जू समत्थ के ॥ लजा बस्यो मानी भूप कीरत दिगन्त चली प्रीत रही औध माह आनँद अकत्थ के । दीनता बिचार करै पकरूँ परसराम सीता कण्ठ मेली माल लाल दशरत्थ के ॥

बाबू छेदी कबि काशी ।

पीतपट नभ छ्रत कटि मे कछोटा काछि धाराधर अंग रंग राम समरत्थ के । जुत्यपति

जुत्थप सखान सग सोभमान हस्तप्रति हस्तप्रति बंस बहु सत्थ के ॥ कहै कवि छेदी कपत भार्गव शिष्य हेरि लोहितांग रूप है जितैया मनमत्थ के । होत गत्थ पत्थ देखि दानव अकत्थ वीर समर समत्थ भत्थ लाल० ॥

हृजचन्द जो बल्लभीय—काशी ।

कारन रमेस सेस सैन अरु बासुदेव चारिह्व परेस पाल महिमा अकत्थ के । कौसिला सों सौगुनी प्रतीति प्रीति भीलिनी को आजु लौं सराहत समाज मैं सुपत्थ के ॥ पितुह्व सों सरस सनेह गीधराज जू पै ऐसे सुद्धभाव बस्य काल दसमत्थ के । रामजम मानस प्रकासक महेस मनमानस मराल बाल लाल० ॥

सन्तजन पच्छ सों निरन्तर रहत पूर बधे बालि भये मीत दास असमत्थ के । सती के के हिये मैं सिव बचन दिढाइबे को कौतुक दिखाये निज सकल समत्थ के ॥ भाव अनुकूल प्रतिकूल प्रतिकूलनि के हरन सबै के दुःख ज-

नित कुपत्थ के । सहज सगाई स्वामि सेवक स्वभाववारी जग मैं बगारी खूब लाल० ॥

स्वामी जासु बाबा बालकृष्णलाल श्रीगुपाल प्यारे लालजीवन सजीवन सुपत्थ के। सभाध्यक्ष कृष्णलाल सुकवि मुकुन्दवारे मन्त्रिराज रामकृष्ण महिमा अतत्थ के । सरदार सुकवि प्रसंस रत-नाकर जू सभासद सबै सुद्ध कविता समत्थ के। बल्लभ रु बिट्ठलेस गिरधर कानि मानि राखैं श्रीसभा को चारौ लाल० ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलालजी शर्म्मा ।

बेद औ पुराण के उठन चरचान लाग्यो गिरधारीलाल बढ़े चरचा कुपत्थ के । होत हरसाल ही अकाल को बिसाल ज्वाल करत कुचाल केते पेट के अरत्थ के॥ परधन परनारि लेइबे को यत्न सोचे सोचत ना कोऊ बात ज्ञान गुण गत्थ के। घोर कलिकाल बिकराल रूप धार्यो अब हूजिये दयाल बेगि लाल० ॥

धारौं ना धनुष जो न एतो करि डारौं नाथ

कहत हौं करि प्रभु पद कै सपत्थ कै । सारौं काज कसक निकारौं सब रोजई के खून के फुहारों ते डुबाऊँ सब पत्थ के ॥ गिरधारीलाल कहै लङ्कही उजारौं औ बिदारौं सबे असुर समर समरत्थ के । टारौं सुर इन्द्र भय गारौं गर्व रावण के मारौं मेघनाथही तौ लाल० ॥

कोपागजनिवासी कवि सालिग्राम जी ।

आये रंग भूतल मै भूप देश देशन के औरहूं असुर सुर मानी समरत्थ के । बिश्वामित्र साथ रहे कोशलनरेश तहाँ देखतहीं भूलि गयो शोभा मनमत्थ के ॥ कहै सालग्राम तबे गुरु को अदेश सुनि लियो है उठाय वेगि हाथ दोउ गत्थ के । तोरे शंभु भारी चाँप कहै लोग आपुस मैं अति सुकुमार गात लाल० ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

गीध गज गनिका अजामिल की बार तौन नेकहू बिचार कीने प्रेम नेम तत्थ के । जाहि हेत हते बालि जग अपबाद सहे चाहक बिभी-

षण सुकराठ सोर पत्थ के ॥ तिन पै अपार कृपा नितही बनाय राखि कौन पार पावै रीति रावरी समत्थ के । एहो दसमत्थ के बिनासक कृपाल प्यारे बनिहै बनाये मेरो लाल० ॥

दासापुरनिवासी प० बलदेवप्रसाद कबि ।

सागर सनेह को सरूप धरि आयो आज हेरत अपान तजि मिथिला मै पत्थ के । द्विज बलदेव कहै होय व्याह प्रण तजि होय जॉय रत्न तौ हमारे हिये हत्थ के ॥ करन धनुष बान सूरन की साजे सान हेरत हरत मान मन मनमत्थ के । चन्दन बिसाल भाल मोतिन की गले माल लखत मुदित बाल लाल० ॥

मिश्र सेवक श्याम कवि मऊगज – रीवा ।

जडित सुकीट सिर कुण्डल कलित कान कान्तिमान देनहार आनँद अकत्थ के । जामा जरकसी पायजामा चारु फेटा फबै लिये धनु बान हिये बिहरैं प्रमत्थ के ॥ चान पद पंकज सुकारक है दास चान हरैं रामसेवक गुमान

मनमत्थ के । दीन छलहीन पै दयाल ह्वै सु
ख्याल करि पल मैं निहाल करैं लाल० ॥

श्री चन्द्रकला बाई—बूंदी।

आई देखि आली मैं तमासे अति आनँद
के तूह्र चलि देखिइै री सुख सैं अकत्थ के। पा-
यन मैं घूघुरू हैं किङ्किनी कटिन माहिँ उर पर
हार कानकुण्डल सुगत्थ के ॥ चन्द्रकला बसन
बनाये बहु भाँतिन के पास खरी मैया जो ब
लैया लेत हत्थ के। देय देय भाँवरि चहूंघा मन
मोद भरे दौरैं वर आँगन मैं लाल० ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगोलाभाई।

पेखि पर नारही कों मोह पाइ मानस में
विपथ मे बहे सब चाहक सुपथ के। बानी को
बिलोक मोहे बिमल बिरचि पुनि भीलनी पै
मोहे भव मार मनमथ के ॥ अहिल्या पर इन्द्र
अरु तारा पर तारापति नहुष तो धायो धाम
सची समरत्थ के। गोबिंद सुकवि ऐसे मोहे सब
देव पर मोहे बिन रहे एक लाल० ॥

बाजि गजराज दीने ऊँट के समाज दीने गाय अरु भैंस दीने दीने वैल रत्थ के । धाम धरा धन दीने बसन बिसाल दीने मोतिन की माल दीनी कडे हत्थ के ॥ हीरन के हार दीने असन अपार दीने रसन ते मान दीने दीने नग नत्थ के । गोबिँद सुकवि ऐसे दीने बहु दान दीन जाये जग माहिँ जब लाल० ॥

साँच मैं पाँच निसाकर देखे ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

आज चलो री निकुंज मे व्याह है देव सभी तहँा आय बिसेखे । ईस के सीस गनेस के भाल मे राधिका इन्दुमुखी फिर लेखे ॥ आप कलानिध ताके जो बस मे कृष्णचन्द पुनि लीन सु भेखे । त्यों रससिन्धु जु नाच उवाच ये सांच में पांच निसाकर देखे ॥

कुंजन मे गए श्याम सखी लई प्रेमतरंग उ-

मंग बिसेंखे । चूम कपोल मिलाय कै श्चंग नि-
सङ्क है रूप को चित्र सुलेखे ॥ श्याम गह्यो कुच
प्यारी को एकहि मैन की छाप नखछित रेखे ॥
त्यों रससिंधु जु नाच उवाच ये साच मैं० ॥

प० केदारनाथ जी बनारस ।

जामै बिखान ना सीस शृगाल के भाखै कोऊ
कबि बात अलेखे । कास ना फूलै अकाश के
माहिँ बसै नहिँ बीजुरी भूतल सेखे ॥ पगु पहार
चढै ना केदार जू बानी कढै नहि मूक के मूखे।
कैसे प्रतीत परैगो कोऊ कह सांच० ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी ।

दम्पत दै गल बाहीं बिलोकत आरसी मैं
प्रतिबिम्ब बिसेखे । वै पिय को उर माल सँवा-
रत वै जु सँवारत काजर रेखे ॥ कालिँदीकूल
दुकूल सुधारत माधौ मयङ्क मरीचिन पेखे। को
सुनि कै करिहैं परतीत ये सांच० ॥

बाबू छेदोलाल जी बनारस ।

सीस पै क्रीट लसे नदनन्दन श्रावत हेरि

रही अवरेखे। दानै पचास जड़े रँग चार मो
ताकी कहो उपमा केहि लेखे॥ छिटी भनै बुध
पैंतिस मंजुल तीन शनीचर सोभित पेखे। सू
रज सात रहे तिन मे अरु साच०॥

वायू के तत्व पै ब्रह्म रहै शुभ ब्रह्म के तत्व
पै वायू हि पेखे। तापै कहै कवि छिट्टी रहै जुग
नाक की बांक कला अवरेखे॥ अग्नि पै चारु
सुहैं जल सोभित मन्द प्रभा न प्रत्यक्ष बिसेखे।
ए अवधेश के लाल के सीस पै साच०॥

बाबू हरिशंकरप्रसाद जी बनारस।

साजी बिलौर की बारादरी खँचे नीलम
के प्रति जोड पै रेखे। कञ्चनतार की राजैं चिकैं
परदे कमख्वाब लदाव के पेखे॥ चौमुख सीसे
लगे तेहि बीच लसै बनिता चित मोद बिसेखे।
मानौ हमारी कही हरिशंकर साँच०॥

काशीनिवासी ब्रजचन्द जी बल्लभीय।

आनँद सों बन आनँद में हर आनँद मन्दिर
जाइ परेखे। गौरि गनेस गनादिक के सँग मुक्ति

लुटावत हैं अवरेखे। दण्ड उदण्ड लहैं खल को गन आरत ताप निवारत पेखे॥ पाँचहु भालनि मैं बिसुनाथ के सांच० ॥

नख काटि कै नाइनि लेइ चली तिय संजुत रुद्रनि लूटत पेखे। नित बीसहु भालनि मैं इहि कारन बीस मयङ्क निसङ्क परेखे ॥ इन बीसहु मैं न कलङ्क कहूं मनबांछित दानि सदा अवरेखे। प्रिय के पद पंकज मैं परिपूरन सांच मैं पांच निसाकर देखे ॥

जोतन लागे धरा को दुवौ हल हाथ हिरण्य के हैं अवरेखे। काह कहौं महिमा बड भाग की एक तहाँ घट कंचन पेखे ॥ सो न खुल्यौ तब आरत ह्वै परमारथ पैज प्रचारि परेखे ॥ औघट संभव राजसिरीजुत सांच मैं० ॥

कोपागंजनिवासी कवि सालिकराम जी।

कोऊ कहै यह झूठ समस्या है कोऊ लहै यह बात अदेखे। कोऊ कहै अबलौं न सुनी अस कोऊ कहै हम ग्रन्थ न देखे ॥ कोऊ कहै

सो सुनो कवि मालिक ए भुलवात न जानि कै लेखि। शंभु के पूजन मैं तो गयो तहाँ साँच० ॥

दासापुरनिवासी प० बलदेवप्रसाद कवि।

गौरि गणेश रिझावत हैं क्रत ताण्डव को बलदेव बिसेखे। गंग प्रसंग भुजंग लसैं गल भंग पिये त्यों बिभूति के भेखे ॥ मुण्ड की माल धरे मृगछाल दै गाल की ताल सुलीक के लेखे। जाँच कै शङ्कर के सिर नाच में सांच० ॥

पटनानिवासी बाबू पन्ननलाल जी।

काल गई हो अली जल लावन कौतुक एक तहाँ अति पेखे। मीन बिधी बिबिचन्द प्रतेकन कीर प्रतेकन एकक लेखे ॥ बिम्ब फलैं प्रति एकन मे प्रतिएकन के मध बिज्जु बिसेखे। मावस की अँधियारी निसा इमि साच० ॥

राधिका माधवी औ ललिता बनमालिनि त्यौंही बिसाखहिँ पेखे। घेरि सबै घनश्याम सुसील कहीं चलिहैं अब मीन न मेखे ॥ लालन गाल गुलाल मली अरु बोर दई तन रंग बि-

सेखे। लाल कहैं धनि या विध आज री सांच
मैं पांच निसाकर देखे ॥

मिश्र स्यामसेवक जी रीवा।

झार फनूस गिलास सजे जहँ चित्र रचे हैं
मनो चित रेखे। आमुहे सामुहे सीसे लगे बिच
प्यारी सजै सुलजै रति पेखे ॥ सेवक श्याम दुहूं
दिसि के प्रतिबिम्ब सुधानन सजुत लेखे। कौ-
तुक लाल लखाऊँ चलो तुम्हैं सांच० ॥

श्रीचन्द्रकला बाई – बूँदी।

कामै सबै हित मानत हैं अरु को जन काज
करै श्रम पेखे। चैन चकोर कुमोदिनि के मन
कौं न करै परिपूरन पेखे ॥ चन्द्रकला बहु भाँति
कथी किहुं बातहि हाँ करिये किहिँ लेखे। उ-
त्तर यौं सबही को दियो हठि सांच मैं० ॥

सिहोर (काठियावाड) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई।

आज लखि हमने इक कौतुक सो नहि कान
सुने दृग देखे। चन्दन के परियङ्क परी इक क-
चन को लतिका शुभ देखे ॥ सोई लता पर कं-

चन की युग गोबिँद गौल गिरी पुनि पेखे । सो गिरि पै सुखदा सखि दूज के सांच० ॥

उनतीसवा अधिवेशन ।

मिती चैत सुदी १ सम्बत् १९५२

आनँद उमङ्ग ते ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु ।

बाज रहे बाजा चारु नाचि रही ब्रजनार गाय रहे होरी ग्वाल सभी सुर संग ते । कहे रससिन्धु तहाँ झुण्डन की झुण्ड सखी छोडे पिचकारी भरि जमुनाजी रंग ते ॥ अबिर गुलालन की धूधर मचाइ खूब मारे कुमकुमा तकि मदन तरग ते । राधिका के साथ स्याम कोकिला जुबन माझ खेल रहे होरी आज आनँद उमङ्ग ते ॥

पं० केदारनाथ जी बनारस ।

कचुकी कसनि मैं बढन चित चाह लागी सोभा सरसै केदार उरज उतग ते ॥ दुरिगो सु

धाई अँखियान मैं तिरोक्षो छाई भौंहनि कमान तानि राखी जीति जग ते। बदन कारी है कैधों बारनि समै नचाऊँ सुमन गुलाब आब सोभित सुरग ते। अंग२ फैलिगो अनंग की छटान छिप्र चीर ना सँभारै अंग आनंद० ॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी —बनारस।

मोहै बाग मैन मन नीर के बड़े सो मीचि छूटत फुहारे पाँति २ बहु रंग ते। ताही समै नवला अनेक लीन्हे आलीगन हाँसि की करत बातैं अमित प्रसग ते॥ आवतही पीतम यों खबरि जनाई कोऊ फूली हरिशंकर मनोज की तरंग ते। फूलछड़ी कर मो रविस पटरी पै घूमि बैठो जाय कौच बीच आनद० ॥

बा० माधोदास जी काशी।

फूली है गुलाब बारी ललित बगीचा बीच दूर लों दिखाई देत सुखमा सुगन्ध ते। बँगला बुलन्द बेस बन्यो है गुलाबही को नीको है गुलाब को गिलीचा बड़े रंग ते॥ गादी गोल

गिन्दुक गुलाब की बहार हार चारु गुलेदान आस पास धस्यौ ढंग ते । पाटल पर्यङ्क पै अनंग की तरंग लेत माधव मयङ्कमुखी आनद०॥

बाबू छेदी कवि काशी ।

खासे खसखाने सजि सुन्दरी सरस चारु रुचि सों सजत सेज बसन सुरंग ते । मोतिन की झालरैं झलक अग सारी स्वेत अरुण किनारीदार दमकि पतंग ते ॥ कहै कवि छेदी इन्दुवदनी झमकि झुकि मोद मदमाती मन्द गवन मतग ते । मन्दिर सँवारि पिय आगमन जान प्यारी झांकती झरोखे भरी आनद० ॥

ब्रजचन्द जो बल्लभीय—काशी ।

आयुध सहित निज दुभुज स्वरूप भूप अति ही अनूप जोहै अमित अनग ते । मातु के कहे ते किये अति लघुरूप राम जानत सुजान सुभ सुमति उतग ते ॥ परब्रह्महू ते मुख छवि की निकाई खरी प्रगटे अवध हर मानस उछग ते । कौसिला महल माहिँ सिसु को रुदन जानि धाईं सब रानी अति आनद० ॥

आनँद उदधि सिय रामही को जानि संभु कबहूं किये ना भिन्न क्योहूं निज सग ते। दृष्ट यह साधिबे को जुगति उपाई एक सुन्दर सुजान सुभ सुमति अभग ते॥ दपति सयोग ही है सिद्धि सब सिद्धिन को सियही में राम जानि सन्तनि प्रसंग ते। याते ध्यान धरि कै सिया को रामनाम मंत्र सन्तत जपत नित्य आनद०॥

गयानिवासी प० गिरधारीलालजी शर्म्मा।

तजि मोह कोह लोभ काम द्रोह दंभ हैत करत सुसंग सदा बचि कै कुसग ते। कहै गिरधारीलाल तीरथ मे बास करै नितही पखारै अङ्ग गङ्ग के तरङ्ग ते॥ काहू को न बदी को सुनावै नहि ल्यावै मन काहू को दुखावै नहि वचन कुढग ते। नर तन पाइबे को फल जब याही बिधि भजो करै राधा कृष्ण आनद०॥

चारु उजियारी करि झाड औ फनूसन की साजि के सृङ्गार मन पूरित अनंग ते। कहै गिरधारीलाल मोद उपजावति है पियही रिझा-

वति है उरज उतंग ते । ॥ नूपुर झन्काई कटि किङ्किनी बजाई मुखमन्द मुसुकाई औ मिलाई अग अंग ते । रग भौन भीतर पलंग पर पीय संग करै रसरग तिय आनद० ॥

कोपागजनिवासी कवि सालिग्राम जी ।

दुखद तपस्या करि शिव कों चढायो माथ भयो है लकेश बर पाय सोसगग ते । याते अभिमानो जानै तृण के समान जग सब से पुजायो पाद इन्द्र औ अनग ते ॥ कहै सालग्राम धन्य कृपा रघुनाथ जू को सोई राज दियो है बिभीषन प्रसंग ते । दीनानाथ हिय में लगाय लीन्हो दर्शतही कहि नहिँ जात जैसो आ० ॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा ।

गाफिल कर डारै गोप गाल को बिडारै गह गोबिंद मुख माड़ै छावै गुलाल रग ते । कोई गहि ल्यावै सिर चूनरी उढावै कोई नाचिबो सिखावै है अनंग की तरंग ते ॥ राधिका प्रसाद नई नागरी बनावै दृग अंजन अँजावै

गुलचावै एक संग ते । होरी मिल गावै फाग रहस कों रचावै सब एक संग धावै बाल आ०॥

कोपागंजनिवासो मारकंडेलाल उपनाम चिरजीव कवि।

साजि कै सुठाम पट मण्डप प्रमान टाँगे झाड औ फनूस फूल वारे नाना ढंग ते। बजत चिकारे और ढोलक रसाल ताल लै लै मुरचग को दिखावैं भाव अंग ते ॥ काशिका के बुढवा सुमंगल मैं चिरंजीव गंग ह्वै रही हैं सारो लाल लाल रंग ते। नावन पै नाचि नाचि खेलि रहे फाग सबै बालक औ वृद्ध ज्वान आनंद० ॥

लाल ह्वै रही है सारी धरती अबीरन से बीरन सी टीसत खिलार खिलि अंग ते। धूर सी दिखात धुन्ध सारे नभ मण्डल मैं उठत बवण्डल गुलालन के रंग ते ॥ कवि चिरजीव कान्ह कीरति-किसोरी आज बाज की छटा को बिथराये नाना ढंग ते। खेलत सुफाग अनुराग मैं चढाये भंग जंग ह्वै रह्यौ है मानो आनंद० ॥

श्री चन्द्रकला बाई – बूंदी ।

गायन चराय लै सखान संग नन्दलाल गमने घरहि गात नाना राग चग ते । गैरक लगाय भाल धारि कण्ठ फूल माल टॉकि सौम गुच्छ जाल सार्ने जो सुरंग ते ॥ चन्द्रकला चलत अनूठी चाल गोप बाल कॉख सींग बॉसरी बजात बर ढंग ते । गोरज निहारि अनुरागभरी देखन कौं धाईं ब्रजबाला अति आनद० ॥

महाराजकुमार श्री. गुरुप्रसादसिंह जी—गिद्धौर ।

खन मुख चूमत सु दुरत लतान ओट दौरि मिलि जात ज्यों जमुनाजल जंग ते । भुजन लपेटि गल झूमत भ्रमर खन लपटि लपटि घूमै चग जिमि चग ते ॥ खन रपटाइ गिरैं फूलन के सेज पर झपटि मचान मानौ जुरत कुलंग ते । बृन्दाबन बीथिन सुबेलिन बितान बीच करत कलोलैं दोऊ आनद० ॥

बाबू शिवपालसिंह – भिनगा ।

कमे तुर्रा जरकसी ज़रबफ़्त जीनन मौं

चंचल चलॉकि अति चपल कुरंग ते । सुन्दर मे-
वाडी मारवाडी हाड़वाती बीर साजि अस्त्र शस्त्र
सुवसन वहु रंग ते ॥ रथन के ताते ना समाते
मग सिवपाल धाई धूरि आसमान युत्थन मतग
ते। राणा श्रीप्रतापसिंह दल चतुरंग संग चल्यौ
अकबर पर आनँद उमंग ते ॥

श्री ठा० महेश्वरबकससिंह तालुकेदार रामपुर—मथुरा ।

बाजत मृदंग नभ गावत सुरेश बाम देवपुर
मोद छायो भागो दुख संग ते । जहाँ तहाँ दे-
वता महेश्वरादि छाइ रहे रामयश गाइ रहे
मोदि ढंग ढग ते ॥ सुनि अवतार राम अवध-
नृपाल देत दीनन को दान भूमिपाट रग रंग
ते । कौशलेश मोद कौन बरणि बताइ सकै
भूले गणनाथ आपु आनद० ॥

मिश्र सेवक श्याम कवि मऊगज - रीवा ।

आगम पियारे को सुनत सुख छायो हिय
छलकन लागी छवि औरै अंग अंग ते । द्वार पै
छनक मग हेरति किवार लागी छनक झरोखे

झाँकै महल उतंग ते ॥ नाह मुखचन्द देखि बाढ्यौ मन सिन्धु मोद नैन भरि आये मिश्र मानहु तरंग ते । फरकी सु दोनों भुजा तरकी तड़ाक तनी दरकी अमोल अँगी आनद० ॥

पटना निवासी बाबू पत्तन लाल जी ।

कहियै पियारे प्रेम कतहूं छुपाये छपै प्रथमहिँ पकान हौं गईही रंग ढंग ते । ज्योंही वह नागरी उजागरी नकारी त्योंही आपहू नकारे किते अमिल प्रसंग ते ॥ पै अब निहारा तुम्हैं देखि कै सुसील ठाढ़े बिलग भई है सब सखियन के सग तें । गग जिमि सागर पै आती इहि आर चली प्रेम मदमाती प्यारी आनद० ॥

बैठी मन मार कहा कर पै कपोल धारि चिन्तित तिहारो चित सूचै अँग अग ते । प्यारी बलिहारी जाउँ कारन बताय बेगि अधिक सताय नाहिँ या बिधि कुरग ते ॥ तेरे अरि अमरो संहार मकौं एकै बार गिनती कहा है नर बापुरे पतग ते । सुनि कै दसरत्थ बात कैकेई हरखि उठी साजै अँग अग लागी आनद०॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्द गोलाभाई।

जाकी काय कंचन सी राजत ललाम महा जाके कमनीय केश भ्राजत भुजंग ते। जाके मन भाय मुखचन्द ते सुहाय पुनि जाके निरमल नैन कौंधत कुरंग ते॥ गोविंद सुकवि ऐसो राधिका रसाल साथ रूसिबो न घटे लाल प्रेम के प्रसंग ते। चलो मेरे साथ आज मोदहीं ते मिलि वाकों करो कमनीय केलि आनद॰॥

सागर औ गुनआगर प्राणी।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

बात करै सच आदु हजारन जोतिषि पंडित वेद प्रमानी। त्यों रससिंधु कहै जु कविश्वर गानहु विद्या सबहि बखानी॥ सूरज इन्दु के बंश मे कृष्ण जी पाण्डव की जग कीरत जानी। नागर है नट नाम उजागर सागर औ॰॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

सोई है ज्ञानी गुनी कवि पंडित रामकथा जिहिँ हर्षि बखानी। सोई जती औ मुनी सोई सिद्धि है जासु हिये हरिभक्ति समानी॥ है द्विज बेनी वही जग उत्तम जो मुख सों जपै सारँग-पानी। धर्म उजागर पूरन सील के सागर० ॥

प्यास मिटावत है जन की अरु राखत है सब की पति पानी। देत हरो मन जीवन को करि है इनसों जग में अवदानी॥ सानी नहीं इनकी छिति पै द्विज बेनी दयाल उदारता खानी। नागर नीत के सीलउजागर सागर औ गुनआगर प्रानी॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी।

सपुट सीप कढ़ै मुकता कवि के रसना ते सुधा सम बानी। दाम प्रमान पै आँकि विकात वै छन्द को मोल अमोल बखानी॥ हार ह्वै राजै केदार हिये महँ भारती कण्ठ बसै सुख खानी। दोउ उजागर हैं रतनाकर सागर०॥

लाखन सीख सिखाइ थकी बरु काहू कहूँ कहि कै पछितानी । तू तो अयान भई धौं कहा हकनाहक भौंह कमान सी तानी ॥ ये तो सयानप नाहि केदार है मूरखिनी की महान निसानी । रारि करै को बिसारि भलो सुख सा० ॥

बाबू हरिशंकरप्रसाद जी बनारस ।

आदर हो या निरादर हो रहै एकही भाँति हिये सुखमानी । चाहैं जहा बरसै छिति पै ठटि कै चलो आवत सिन्धु मो पानी ॥ खूब बिचारि कहौं हरिशंकर व्यासहू ऐसो पुरान मों भानी। आपनी ओर को खैंचि बोलावत सागर० ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी ।

होत अपार महामनि खावर गौरव गात गँभीरता बानी । उच्च सिंघासन आसन पावत हालत दीनन की गति ठानी ॥ वै रतनाकर वै धन आकर दोउ हिये हरि की रजधानी । माधव एकहि भाँति बिलोकत सागर औ० ॥

बाबू छेदोलाल जी बनारस।

स्वेत सजे अँग सारी सँवारि कै मल्लिका मांग सुधा रस सानी। छूटी छटा छितमण्डल लौं दुति छावत छाजति चन्द समानी॥ छेदी कहै पिय पास चली तिय चौंकि चकोर भये खग बानी। नागरि जात मिलै को जहां छवि सागर औ गुनआगर प्रानी॥

जा दिन ते परदेश गये पिय तादिन ते बिरहा नहि मानी॥ कासे कहौं कहँ जाउँ अली अब आवन की कह औध बितानी॥ छेदी कहै मोहि हाल बताव री आखिर बाम भये बिधि बानी। हाय कहां होइहैं सजनी छवि सागर०॥

काशीनिवासी ब्रजचन्द जी बल्लभीय।

सादर श्री कमला कमलापति दोउन सों अतिही रति मानी। पूरनचन्द ब्रजेन्दु बिलोकि उमंग बढ़ै नहि जाइ बखानी॥ सेवत हैं जन जो श्रम सो तिनको नितही मनबांछित दानी। पूर गँभीर अलोल अछोभित सागर०॥

सन्तनि सेइ सरूप पिछानि भजैं नितही हरि सारँगपानी। कालहु तैं मति बाधित ना नहिँ मोर औ तोर के हाथ बिकानी॥ कोटि गुनी निगुनी सँग मै सब एक ते एक महा अ-भिमानी। लीन रहैं नहिँ दोउन मैं तज सा०॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलाल जी शर्म्मा।

आपन कोउ कुटुम्ब नहीं जहँ नाहिँ सुभूपति की रजधानी। नाहिँ जहाँ पर बेद पढ़ो अरु नाहिँ जहां पर स्वारथदानी॥ ज्ञान की ना चरचा जहँ पै जहँ पै गिरधारी न नीति की बानी। भूलिहुं ना बसिये जेहि धाम न सागर०

कोपागजनिवासी कवि सालिकराम जी।

सब से समभाव रहै मिलि कै हिय जाकि रहैं नित सारँगपानी। सतसंग सदा मिलि सज्जन ते अपमान ते जान न आपन हानी॥ कवि सालिक सो बिधि धन्य किये अपने कुल को जो निबाहत कानी। कुलवन्त सोई सब विद्या बिचक्षण सागर औ गुन०॥

श्री ठा० राधिकाप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा।

ध्यान धरै नँदनन्दन को जुग नाम अकाम रटै वर बानी। भक्ति अनन्य करै ब्रजचन्द की राधिका के चरनै मुद मानी॥ श्रौन सुनै जस नैन लखै छबि कोबिद सो बर पण्डित ज्ञानी। नागर श्री जग मांझ उजागर सागर०॥

ला० मारकण्डेलाल उपनाम चिरीवी कवि कोपागंज।

कहै क्षुद्रनदी की कथा को वृथा छन मांह करैं जो सबै बनि ज्ञानी। दिन चारि मैं धूर उडावै लगैं दिन चारि मैं ढाहत कूलहू आनी॥ चिरजीव जू सिंधु पै ध्यान धरो जो सदा सम-रूप रहैं सुख मानी। एहि हेतु तें लोग सराहैं सबै जग सागर श्री गुन०॥

फूलिबो पेट भरे पै कहा बर बस्त्रनि पै बनिबो कहा सानी। त्यों कहा बेस बिभूषन पै पद उच्चन पै कहा होइबो मानी॥ सज्जन प्यारे सुनो चित दै सनमानो भले चिरजीव की बानी। औरन को लखि औज बढ़ैं सदा सागर०॥

श्री चन्दकला बाई—बूंदी।

होय सुशील कुलीन महा मदहीन नवीन प्रवीन प्रमानी। कारक काज अकाजनिवारक धारक सौंज समाज समानी॥ चन्दकला कल बैन उचारक हारक मीतन को मन ज्ञानी। लोभग्रस्यो नहि सोहत है मति सागर॰॥

श्री ठा॰ महेश्वरबक्ससिंह जी तालुकेदार—रामपुर मथुरा।

देत बलाहक नीर अनन्त किती सरि धाइ मिलीं उमडानी। पै न बढै जलराशि कबौं मरयाद बिहाइ कहैं कवि ज्ञानी॥ त्यौं नृपता धन कोटि लहै न गुणी इतराइ बनै अभिमानी धन्य महेश्वर हैं जग मे युग सागर औ॰॥

बाबू शिवपालसिंहजी - भिनगा।

चन्द तजै नित चाँदनी चारु कुहू निसि में सबही जग जानी। सूर तजै नित तेज जबै शिव पाल भनै घन घेरत आनी॥ ग्रीष्म दवागि में काननहू मृग आदि तजै लखि जीव की हानी। पै कबहू मरयाद तजै नहि सागर॰॥

मिश्र सेवक श्याम कवि मऊगज रीवा ।

छोड़ैं नहीं कबहूं मरयाद अथाह सदाहीं लसै वुधि पानी । गौरवजुक्त गँभीर दोऊ गुण त्यों मुकतादि जवाहिर खानी ॥ सेवक श्याम सु औज भरे निज मौज सो पूरे अहैं सुखदानी। नागर नेक घटैं न उजागर सागर० ॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी ।

दोऊ गँभीर अगाध अथाह हैं मीम दुहूं कर जात न जानी । कौन सो वस्तु अहै जग जो इन दोउन के नहिँ पेट समानी ॥ को जग माहिँ सुसील अहै जो सकै इनके गुन गान बखानी । ईश्वर के परपंच बड़े दोउ सागर० ॥

आपने बाढ बढ़ैं पुलकैं अरु खेद करैं लखि आपनि हानी । ऐसे अनेक अहैं जग मे सरिता सर लौं नर घानिन घानी ॥ पै लखि बाढ़ मयङ्क बढै अरु होय प्रफुल्ल उछालत पानी । सागर ज्यों बिरले जग त्यों जस सागर० ॥

सिहोर (काठियावाड) निवासी कबिगोबिन्द गीलाभाई।

सागर में रचि सेतु मनोहर बानर रीछ मिले मनमानो। टिट्टिभ ने रतनाकर ते लिये अंड अनामत संप कों ठानो॥ स्वामि के रचन स्वान करे पुनि कीर कथे मुख मानव बानो। गोबिँद क्या न करे जग मे मति सागर०॥

तीसवा अधिवेशन।

मिती वैशाख बदी १ सम्बत् १९५२

सुहागफल पूरो है।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु।

करत सिँगार आज जुल्फ को सँवार खूब चोटी में किनारी डार बाँध्यो फेर जूरो है। कहै रससिंधु बाने ढाका खेत सारी सजी कमर में करधनी पेख लोग घूरो है॥ कानन में कान चारु हाथन में भूषनहू खिमटे जु बालो बाल रूप न अधूरो है। बैठी आय कुरसी पै हुक्का पेचवान पिये गनिका को देखो ये सुहागफल०॥

सबन में व्यापक जो एक तें अनेक रूप बेद तिन्हे नेति २ करि कहै दूरो है। त्योंही रससिन्धु भक्ति करी प्रहलाद जी ने पासही ते खभ फार आये न अधूरो है ॥ प्रगटे नृसिंह रूप तबही डरानो दैत बड़े २ नैनन तें देखि ताहि घूरो है। इनहीं को अश वंश तैंतिस करोड़ देव ब्रह्म तें जु माया को सुहागफल पूरो है ॥

बाबू रामकृष्ण बर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

जाकि नाम ध्यान मे मगन हैं सुरेस सेस जाके गुनगानही में चहूं बेद कूरो है। जाकी महिमा से चर अचर प्रचारित है रिद्धि सिद्धि जाके सब रहत हजूरो है ॥ ताकी दशा प्रेमबस देखो ब्रजमण्डल में राधिका रसीली सग राग रंग चूरो है। बीर बलबीर खड़ो नृत्य करै आठौ जाम कीरतिकुमारी को सुहागफल पूरो है ॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी –बनारस।

भूषन बसन खान पान सेज गेह नेह पी· तम विहीन सातौ आनद अधूरो है। सेंदुर र-

चित मॉग केवल चुरी हो हाथ छला लौं न रहै तापै परम गरूरो है ॥ पूरब जनम पुन्य बीज के बये ते जमै भनै हरिशकर विटप यह रूरो है । डार पात फूल राजैं दूध पूत धन धान बनिता के भाग मों सोहागफल पूरो है ॥

बा० माधोदास जी - काशी ।

बैठी है सुभौंहैं तान मान कही मेरी बीर होत हैं अधीर बलबीर नेहसूरो है । नेक ना परत चैन मैन के मरोरनि ते मुख ते न बोलै बैन नैन जलपूरो है ॥ तेरे मुखचन्द को चकोर होत माधव जू तेरे गुन गान को सुजान मृग रूरो है । भामिनि तिहारे नाल भाल मे विधाता लिख्यो पी को अनुराग औ सोहागफल पूरो है॥

प० केदारनाथ जी बनारस ।

बानी दृगहीन कवि कहत प्रबीन आछे कमला सहोदरी सराब बिष भूरो है । पाहन ते प्रगट भई है गननाथ अम्ब जनककुमारी बास कानन अधूरो है ॥ तुही वृषभानु की दुलारी

अति दिव्यवारी रूप तौ केदार अतिनी को छवि तूरो है । तेरे मुख कंज पै मलिन्द मडरात स्याम भांवरोई भरत सुहाग० ॥

छबीले कबि—बनारस ।

निज छवि पावत निसाकर निसा मै जैसे दिवस दिनेस दीपै दुन दुति टूरो है । सुकवि छबीले सुचि सुन्दर स्वरूप को सिँगार सरसावत समस्त रस रूरो है ॥ पण्डित प्रवीनन को परम प्रमान मान तैसोई बखानत हौं जानि यह कूरो है। और सब झूठ है सुहाग फल पूरो होत नाहैं कुल नारि को सुहाग० ॥

ब्रजचन्द जी बल्लभीय—काशी ।

हाय अनजाने मै बिचारी कुबिचारी तिन्है मूढ मैं महान मेरो ज्ञान मद भूरो है । कार्य रूप आपी अहौ कारन स्वरूप नाहि इतै चलि आये कछु कारज अधूरो है ॥ कारन रु काज पर परम स्वतन्त्र रूप भाव बस जासु जस जग मुख थूरो है । ऐसो निज प्यारो नँदनन्द को दिखायो मोहि ब्रजबनितान को सोहाग० ॥

चक्रवती दशरथ राय के कुमार राम आयो लङ्क जीति कियो यज्ञ जस हरो है। यज्ञ बाजि संग चतुरंग सेन सत्रुसाल जीति कै दिगन्त अरिमद चकचूरो है ॥ लव कुश के युद्ध माहिँ अनुज समेत राम मोहि महि गिरे सीय नैनजल ढूरो है। आपने पतिब्रत सो सकल जियाई सेन जनकलड़ैती को सुहाग० ॥

श्रीकिशोरीलालजी गोस्वामी आरा।

अतर फुलेल डार प्यार सों सँवार बार माँग पार प्रीतम सुधारै सीस जूरो है । बेंदी भाल जावक दिठौना नैन अंजन दै मीसी रेख दाँतन धरावै हाथ चूरो है ॥ नखसिख भूषन बसन चटकीलो तापै कसि कुच कंचुकी निरेखै रूप रूरो है। कीरतिकिसोरी नँदनन्दन मजूरो कियो पायो अरी अचल सुहाग० ॥

अमल अनूप अकलङ्क मुखचन्द तेरो देखि देखि होत इन्दु आतुर अधूरो है। मदन महीप जू के ऐन केलिमन्दिर को उन्नत उरोज यहै

सुन्दर कँगूरो है ॥ ऐसो रूप पाइ छल छन्द सों छबीलो हँसि छैल मन मोहि कीनो मोहन म जूरो है । ठगन ठगोरी वृषभान की किसोरी सुन तैने एक पायो री सुहाग० ॥

पटनानिवासी बाबू पन्ननलाल जी ।

जात जमुना जल कों अबहीं निहाख्यों ताहि चलि लै निहारि तुहू कौन बड़ि दूरो है । भौं-हन बँकाई नैन नासिका निकाई तसी सुन्दर सिन्दूर सीस बँध्यो केस जूरो है ॥ हीरन को हार गरे खीन कटि पीन कुच बाहु बाजुबन्द औ विजायठ सचूरो है । रूरो भरपूरो काहु बात न अधूरो जानु मानु अग अंगनि सुहाग० ॥

एरी बड़िभाग तेरे भाग को बखानि सकै बाँधत बिहारी लख्यो सीस तेरे जूरो है । दीनो कर चूरो वही अंजन रच्यो है नैन बीरो मुख दीनो नहीं भालहू सिंदूरो है ॥ लोह जिमि चु-म्बक लौं पलहू न दूरि रहै प्रीति में तिहारे लोक लाज टन तूरो है । बन्यो है मजूरो तेरो करन मजूरो रुख धनि री पियारी तो सुहाग० ॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा।

कैसो री सुमान मोह नेकहू ना जान परै एरी सुखदान बान कहा धौं बिसूरो है। साँचहु अजान नाहि जानत तूं लाभ हानि प्रेमसुधा छान नेह करत अधूरो है॥ राधिकाप्रसाद सीख मान या सुजान होइ रहै ना गुमान यह ठान नाग भूरो है। तो मैं मन प्रीतम को पाग्यौ अनुराग लाग तेरो बड भाग औ सुहाग० ॥

कोपागंजनिवासी कवि सालिग्राम जी।

गौरी को तपस्या तुम करी है अनेक भाँति वाको फल पाइ तू तो एकै बेर कूरो है। याहो हेतु प्यारे नदनन्दन लुभाय रहे सग नहि छोडै नेकु परम मजूरो है॥ कहै सालग्राम धन्य भाग महारानी राधे तू तो पतिव्रत को साँच प्रन धूरो है। औसर कुऔसर मै बिमन न कीजै प्यारो मेरे जान तेरो तो सुहाग० ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोबिन्दगोलाभाई।

कोऊ कहै काजर समूह दृग दीपन के कोऊ

कहै छायासुत रूप लसै रूरो है । कोऊ कहै सालिग्राम राजत रसेन्द्र जू के कोऊ कहै सोभा सर सोहत सिँधूरो है ॥ ऐसे अनुवाद करि कामिना के धम्मिल की उपमा उचारै केते कोविद अधूरो है । गोविंद पै मेरे जान बाला तनु बल्लरी मे लागे रमणीक है सुहाग० ॥

दासापुर निवासी द्विज बलदेव कवि ।

कमठ की पृष्टि से कठोर धनु शङ्कर को सुकुमार राज के कुमार तानि तूरो है । प्रबल महीप आये सागर गरब धारि तिनहि निहारै तू भ्राता लौं मुख भूरो है ॥ द्विज बलदेव जो जनक योग जन्म भरि कीन्हों तप तीनहीं अनन्द रूप रूरो है । जागो भाग जग को निबाहो अनुराग विधि राग रंग साजै री मोहाग० ॥

मिश्र स्यामसेवक जी—रीवां ।

आलस-बलित अंग कलित कपोल पीक मरगजी चीर रह्यो छूटि कच जूरो है । स्वेदकन सोहैं तन टूटे बन्द कचुकी के खण्डित सुग्रधर

तमोल रस भूरो है ॥ मिश्र स्यामसेवक निहार
वेई जोग यह तेरो आज औरै रङ्ग राजत सुरूरो
है। येरी भागवान विधि मोहि तो सोहाग
दियो तोहि दियो सुन्दर सोहाग० ॥

श्रीचन्द्रकला बाई—बूँदी ।

जाकी भौंह भगही तें भसम त्रिलोकी होत
जाकी कृपा होत रंक राव हीन सूरो है । जाको
रुख देखत गणेश औ महेश शेष सासन धरत
सीस कोऊ नाहिं दूरो है ॥ चन्द्रकला जाको
चाह करत रमादि रानी बानी औ भवानी धरै
पायन मै जूरो है । त्रिभुवननाथ सो पलोटत हैं
पाय तेरे तैंही पायो राधिके सुहाग० ॥

अयोध्यानिवासी कविराज लछिरामजी ।

बार लफवारहि लपेटि गुण बन्धन मै मन-
मथ चक्र लौं सवारि मग रूरो है । मंजु मणि ब-
लित बहार जा वमन भयौ राहु रवि संगमो बि-
लास ब्रज रूरो है ॥ लछिराम राधे अंग चम्पक
बरन पर सौहैं करै सौतिन गरब चकचूरो है ।

समद सुमन स्यामसुन्दर सरूरो फल्यौ जूरो सुभ सिखर सोहाग० ॥

कैधौं राहु छाती पै अपार अवतंस अंग आसन सँवारि मारतण्ड मगरूरो है । लछिराम कैधौं जम्यौ जमुना तरंग पर अरविन्द अरुन पराग रँग रूरो है ॥ मंगलीक मरकत मन्दर सिला पै कैधौं मंगल मजेज सुभ साहिबी सरूरो है । मण्डित मनीन मनमोहन पलक राधे सीसफूल तेरो कै सोहाग० ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

जाके पूत अदभुत खडानन गनेस ऐसे जासो बेस देव ना अदेव गुन रूरो है । बेनी द्विज पति है प्रवीन तीन लोकन मे नैन तान बाँधे जटा जूटन को जूरो है ॥ बन्दत सुरेस औ दिनेस सेस आठौ जाम रहत सुरेस द्वार ठाढ़ो ज्यों मजूरो है । चन्दमुख सभु को चकोर सी तकोई करै गिरिजाकिसोरी को सोहाग० ॥

बाँसुरी तान जो कान परैगी।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

बाजि रही मुरली वह स्याम की वेगि चलो नहिं धीर धरैगी। त्यों रससिंधु जु वस्त्र अभूषन सोरहो आज सिँगार करैगी। जावक आँख लगाय लियो झट रोकि हमै फिर ताहि लरैगी। देख सखी सुन ले री भला अभी बाँसुरी तान जो कान परैगी॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

वृथा मारि लै गाल गवारिनी तू तौ मरैहौं जो सामुहे धीर धरैगी। व्रजचन्द को रूप अनूप निहारि चकोरिनि सी नहिँ नेक टरैगी॥ बलवीर विलोकतै री सुनु बीर चलैगी न एक तू कोटि करैगी। कुलकान उतान परैगी उतै इतै बाँसुरी तान जो कान परैगी॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

आई अबै दिन चारिक ते इतराय कै एतौ

कहा धौं करैगी । मोही सी मोही बतावती जो अब तूही तो लाजहि सैति धरैगी ॥ जाय है जो जमुना तट पै द्विज बेनी न ता समै एकौ सरैगी । मोहनमन्त्रनखानि भरी वह बा० ॥

बाबू हरिशंकरप्रसाद जी बनारस ।

काहे को बात बिगारती हौ चले साथ मेरे न बनी बिगरैगी । क्या मरजाद रहैगी भला जब पाय पिआदे पयान करैगी ॥ साँझ समै मुरली के बजे हरिशंकर कोउ न धीर धरैगी । मान गुमान ये काम न आयहै बाँसुरी तान० ॥

बा० माधोदास जी - काशी ।

मानत नाहिन मेरी कही यह ठान कै रार कहा धौं करैगी । माधव मोहि पठाई बुलावन तूं चढी चंग न नेकु टरैगी ॥ बोलहिंगे जब मोर सु कोकिल मैन-मरोरनि गात गरैगी । मान को बान पयान करै अलि बाँसुरी तान० ॥

छबीले कवि - बनारस ।

का समुझावती हौ हम को समुझाइबो

नेक हिये ना परैगी । झाँकिबी जौलौं न रूप वहै तबहीं लगि येती बिचार करैगी ॥ कान्हही कान्ह छबीलि कहै अवलोके बिना दिना रात ररैगी । जानि परैगी अरी तबहीं कबौं बाँ० ॥

पं० केदारनाथ जी – बनारस ।

जाके सुने सुर मोहत हैं सुर जोगिन आँखि ढपी उघरैगी । ह्वैहैं बिरागी सुरागी सबै मन माहिँ उमंग की धार भरैगी ॥ द्वार को कौन केदार कथा कहै मार तरंग मैं तीखी तरैगी । मान गुमान सबै टुटिहै भटू बाँसुरी तान० ॥

ब्रजचन्द जी बल्लभीय—काशी ।

पूरब पुण्य को ह्वैहै बिकासु री जान की फाँसुरी दूरि टरैगी । नासुरी आसु महा ममता वह भाग सुहाग प्रभा उघरैगी ॥ सोकहू पासु री आवै नही मति मैं अहलादिनि आनि अ-रैगी । होइहै आसु री कानि बिनासु री बाँसुरी तान जो कान परैगी ॥

सिवहू की समाधि टरै अचला अचला हू

कठोरता दूरि धरैगी । जड़ चेतन हूं बिपरीत परैं भ्रम मों मति देवहु भूरि भरैगी॥ पतिदेवता हू गरिमा सो भरी कुलकानि मैं क्योंहुं न आनि अरैगी। नहिँ रोको रुकैं ब्रज को ब्रजचन्द की बासुरी तान जो कान परैगी ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी।

भूली रहैगी सदा मगरूर में काहू की बात न कान करैगी। जो करि कै हित दैंगी सिखापन बादि सुसील जू तासों लरैगी ॥ काह परी है हमैं तुमकों जिहि की बिगरैगी भटू बिगरैगी। जान परैगी तबै इहि को वह बांसुरी० ॥

लाज करौ कुलकानि रखौ सबही को सदा उपदेस करैगी। देखि दसा हमलोगन की हँसि दाँत निकारि ठठोल भरैगी॥ या जो बनो गुरुआनी अहै सुधि सारी सबै छिन में बिसरगी। फाँसुरी आप लगैगी गरे हरि बांसुरी० ॥

श्री ठा० राधिकाप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा।

याकी दसा जो कहै तो कहा जब मोहन

कै अधरान धरैगो । ऐसो सुभाव बसावन हो कुछ दाव परै तब घाव करैगी ॥ ज्ञानहु ध्यानहु लोक की आन गुमानहु राधेचरन हरैगी ॥ हान है खान को पान को मान की बांसुरी० ॥

कोपागञ्जनिवासी कवि सालिकराम जी ।

सुनती हो कहाँ सुनिबे के न योग सुनै सिर भार हजार परैगी । कुलकानि छुड़ावनिहार भली उर भीतर तू वह कैसे धरैगी ॥ कवि सालिक देत सिखावन है कुलकानि नसै तब काह करैगो । रहिहै पछितात्र हमेस हिये वह बां० ॥

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिद्धौर ।

करिकै सुधि यों निसिवासर मे यह नैनन त्यों नित नीर भरैगी । हकनाहक होत दुखी तुमहूं अब और कछू नहिँ धीर धरैगी ॥ यह व्याधि को और उपाय नहीं बिरहागिन ज्वाल तैं खूब जरैगी । बस प्रान सखी बचिहै तबहीं सुनि बां० ॥

यह कौन सी बानि पड़ी तुम्हरी अपनो हँसौ तू जग आप करैगी । मानतो हो नहीं मेरे कहे

फिरि आपही तू हिय पीर भरैगी ॥ देखती हौं बिन बादन को यह मान भलो कब लौं तू धरैगी। आय मनाय लै जैहै तुम्हैं वहै बासुरी०॥

बनि ऐहै सखी वह नन्दकुमार सु देखि नहीं भ्रम कोऊ धरैगी। करि सैन सखीन को लै ढिग मे मनमानतो अंक मे त्योहीं भरैगो॥ फिरि बात अनेक बनाय सखी इत ते कतहूं नहिँ नेक टरैगी। रहिहै नहि संक कछू चित मे सुनि बां० ॥

दासापुरनिवासी प० बलदेवप्रसाद कवि।

हेरन को छबि कानन माहिँ भ्रमै महा नैनन नीर भरैगी। तीर सी तान हरी कुलकान को कौनिहूं भाँति न धीर धरैगी ॥ मानि ले नेक बिनै बलदेव की प्रेम बिथा न तौ आनि अरैगी। कान करैगी अधीर ह्वै बोर तू बाँसुरी०॥

मिश्र सेवक श्याम कवि मऊगंज – रीवा।

ज्ञान तिहारो न रैहै जबै इन आँखिन वा छवि आन परैगी। भूलहिगी सिगरी यह रीति अनीतिहि नीति पछान परैगी ॥ सेवक श्याम

सनेही सनेह मे भार सबै कुलकान परैगी ।
जान परैगी बखान कहा करौं बांसुरी० ॥

श्री चन्द्रकला बाई – बूंदी ।

कानन मूंदि रहौ निसिबासर आन उपाय न व्याधि टरैगी । कै धसि भौनन बैठि रहौ न तु दामिनि सी उर आय अरैगी ॥ चन्द्रकला किल चूकि चले पर आय व्यथा सब सीस परैगी । नींद क्षुधा तिसहू नसिहै कहुँ बासुरी० ॥

इकतीसवां अधिवेशन ।

मिती वैशाख सुदी ? सम्वत् १९५२

धूप दुपहर की ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु ।

जेठ अति तपै आली लूकै की भभूकै चलैं पावहु न धर्यो जाय गैल है सहर की । कहै रससिन्धु तहां खसन की टाटी लगी छूटत फुहारे चहुं सोभाहू नहर को ॥ झरना पहारन ते चादरें जु परे खूब देख प्यारी सैल आज जल के

लहर की। आवतही प्यारे लाल ठठक हिये मे भई ग्रीषम जो भाज गई धूप दुपहर की॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

दोऊ तुम एक से मिले हौ बनवारी रीति ऐसी हौं विलोकी ना अनोखी हरबर की। जैसे तुम बिकल भये हौ बिन वाके कान्ह वैसी वह रावरे वियोग-ज्वाल भरकी॥ देहुँगी मिलाय तुम्हे लाल आज श्यामा संग गजब करौंगी हरी बात या कहर की। धीर धरो एजू बलबीर मिटि जैहै पीर नेकु पियरान देहु धूप दुपहर की॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी बनारस।

तन उपटाय न्हाय बैठी मसनद आय प्यारे पिय ध्यावत ही बाँई आँखि फरकी। भनै हरि-शङ्कर सगुन अति चोखो पाय खडी भई बेगि तिय चुरी कर करकी॥ पोखराज जडित सकल आभरन ठ्यो मारो जरतारी उमदाहट सुघर की। झपटि झमकि चली मोहन मिले के काज चन्द तें अनूप लागी धूप दुपहर की॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी ।

कोऊ रावटी में बैठ बिजन बहार लेत कोऊ घने सौरभ उसीर टाटी तर की। कोऊ तहखाने रहै सीतल सु पाटी पौढि चन्दन चरचि अंग केवरा अतर की ॥ कोऊ सेज सुमन सुगन्ध पट पूरि राजै बन्द कै झरोखनि केदार द्वार घर की। उषा माहिं अबला करैंगी किमि जोग ऊधो अनल समान लागै धूप दुपहर की ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी ।

ननद निगोरी भोरी सासुरे सिधारी आज राह लई सास कहूं तीरथ डगर की । देवर जिठानी की कहानी ना बखानी जात बाग में बसेरो कियो भूले सुध घर की ॥ माधव जू भौन है इकन्त कन्त देस मांह ताप ते कढत नाहि परजा नगर की । छाँह तरवर की न सर है बटोही कहूं जेठ की जलाकेदार धूप दुपहर की॥

काशीनिवासी ब्रजचन्द जो बल्लभीय ।

आगे है उजागर बन नगर बजार नाहिँ

नखसिख छाई श्रम अतिमैं डहर की। नदी नद नाहिँ कूप बापिका तड़ाग उतै आतप निहारि तृषा बाढ़ि है कहर की ॥ उपही अकेल तुमैं जानि बटपार घेरि लूटिहैं ललकि राह रोकिहैं सहर की। बिरमौ यहाँही दूहि बंजुल निकुंज मंजु लागिहै पथिक पन्थ धूप० ॥

सादर नहाये गंग चले मुनि संग दोऊ गही है रुचिर राह मिथिला सहर की। डहरत हंस डावरे से अति मन्दमन्द कहा लौं बखानौं वह सुखमा डहर की ॥ दाहिने मुनीस के दिपति दुति राम जू की बाम ओर मूरति सुजान मनहर की। दुहूं ओर मानहु मयङ्क की मरीची मजु बीच अति ओजभरी धूप० ॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—घहरा।

चित्त मे उछाह बाल नन्दलाल मिलैं काज अली जो लिवाय चली कुंजन डहर की। पहुँची सुकुमारी दृग लखे ना बिहारी तौ रही ना सम्हारी भारी बाढी ब्यथा हर की॥ राधिकाप्रसाद

लली अली को छिपाय पीर जर्द अंग अंग गर्द मन के लहर की। मूंदि दृग दोऊ मुरझानी झूमि गिरी सेज लागी जिमि ग्रीषम की धूप० ॥

अंग २ साज के सिँगार अंगराग लाय संग ना सहेली चली येरी पंचसर की । ठीक अर्ध दिवस में स्याम के मिलन काज जात छकताक झाँक सक छोड घर की॥ ग्रीषम की तापैं झापैं नेकहू ना व्यापैं जापै भरी है उछाह राधिका-प्रसाद हर की । मग मखतूल ऐसो भानु जो कलानिध सो चाँदनी सी लागै जाहिँ धूप०॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी ।

कौन बडिभागि भूमिवास करि धन्य करी करिहौ अब धन्य भूमि कौन से नगर को । कौन ये तुमारे दोऊ स्याम गौर रूपवारे पूछैं गाँव बारन तें चरचा डगर की ॥ मुनि को बनाये वेष छत्र पद त्रान नाहिँ बाहन बिहीन क्यों तयारी या सफ़र को। जियर घबराय देखि देखि तुम लोगन कों कैसे सहि जैहैं हाय धूप०

श्री नवनीति कवि – मथुरा ।

चण्डकर तपत प्रचण्ड भुअमण्डल पै भानु की मयूखैं विष ज्वाल जाल भरकी । नवनीत चन्दन चमेली चारु घनसार पङ्कज गुलाबफूल माल मूल सर की ॥ सीतल उसीर नीर नहर कहर भई जहर जलाका गन्ध लागत अतर की। प्रीतम वियोग दूजे ग्रीषम सँयोग पाय भीषम लगत हाय धूप दुपहर की ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलाल जी शर्म्मा ।

पावस में घोर अँधियारिन में घूमी बन कारी परवाह नहिँ बारिद की झर की। शरद मे रास रची नाच नची लाज तजि जाके लिये हँसहीं बधून घर घर की ॥ हिम औ सिसिर में न सीतहूं की भीत करी खेली है बसन्त हारी काहू की न डर को । तेई स्याम मेरे लिये योग ये पठाये ऊधो जाके लिये सही ग्रीष्म धूप० ॥

कानपुरनिवासी प० ललितप्रसाद जी त्रिवेदी ।

घर की सुवाय सबै आई कुंजकेलि प्यारी

करि कै उमाह भरी चाह गिरधर की। ललित
लखो न बनमाली का बिहाली कहौं धरकी
लगी है उर भारी भरी डर की॥ भार भये भू-
षन सँभार करै कौन तन सीरी सी समीर फु-
फकार हार हर की। भयो ताप-आकर सुधा-
कर प्रभाकर सो चाँदनी अनूप मानौ धूप०॥

ब्याकुल बराह परे खोहन कराह करैं दुरद
दरीनन मे दुरे भरी धरकी। तोरि तहखानन को
फोरि खसखानन को दौरी फिरैं भूकैं लूकैं मि-
ली तापकर की॥ ललित अगारन मैं मलयज
गारन मे फबित फुहारन मे भरी झार झर की।
तीखन तरल बिन धीर करै ग्रीषम की भीषम
प्रबल बरै धूप०॥

लाला हनुमानप्रसाद कबईटोला – लखनऊ॥

फूल सूल तारे निसि जगत अँगारे लागैं गान
तान लागे बिथा दूनी पंचसर की। सेज लागै
साँपिनी प्रलापिनी सहेली लागैं नींद भूख लागै
नाहिं दसा बन घर की। अवध के बाँधे प्रान

पलक कलप लागै हनूमान चन्दन चहल फेनु हर की। विन बलबीर बीर निसिभानु भानु लागै चाँदनी लगत मोहि धूप० ॥

स्वेद अग कढत मढत जात अतर सों लपट लपेटी लूक चन्दन चहर की। परत धँधूरन में जोगिनी जनीन जाने हनूमान मगन सहाइ पंचसर की ॥ भोगी परे महलन जोगी परे गुफनन सिंह परे कन्दरन संक दिनकर की। लाल प्रेम बाल फूली फूल दुपहर को सो जात चली लागै भली धूप० ॥

गंधौलो निवासी बाबू जुगुलकिशोरजी उपनाम ब्रजराज।

आजु दिनही मैं अभिसार की तयारी करि धारी तन केसरि सिधारी बाम हर की। चपई दुकूल हेम भूषन अतूल माल सोनजुही फूल सों बढ़ी है सोभा गर की॥ लगन लगी है ब्रजराज के मिलन हेत श्रम को गनै न औ न त्रास कछू घर की । भानु सीतभानु सो तपनि काल वारो अरी चाँदनी सी लागै खरी धूप० ॥

नूतन अवास अवनीतल बनाय रचे केवरे गुलावन सों सींचि मही तर की। बिछवाई आछी पाटी सीतल उसार टाटी लागी लखि अंगन अनंग आँच भर की॥ छूटत फोहारे करैं बीजन सखीजन त्यों ऊजरे बसन बास बासित अतर की। येतै उपचारन निवारियत ग्रीषम को तऊ भार जारे देत धूप०॥

दासापुर निवासी द्विज बलदेव कवि।

घामै सो घनेरो घेर घेंघरो सरस भारी कैसी है नगीनै मैं कलित काति कर की। धाई सों बधाई पाय मिलन सिधाई समा सैनन सरस सफरी की सान सरकी॥ बलदेव बिसद कपूर धूर धारे अंग रंग को निहारतै अनंग आँच अ-रकी। किरण किनारी को कछू न भेद जानो जात रूप के सरोवर मैं धूप०॥

मिश्र सेवक श्याम कवि मऊगंज रीवा।

पवन प्रचण्ड चलै भारसहिँ लोनी लता वरसहिँ आग सी मरीची चण्डकर की। आई जल लेन

मैंह्न पहुँची सिथिल कैहूं तजि तट होति जान इच्छा नहिँ घर को ॥ मुख भो अरुन मिश्र रावरो स्रवत स्वेद मोरि है नेवारि लेहु गरमी डगर की। बैठि कुंज लीजिये लहर जमुना की प्यारे कहर मचाय रही धूप० ॥

श्री चन्द्रकला बाई – बूदी।

सीस धारि सारी जरतारी की किनारीदार कंचुकी सँवारि तैसी सोचित अतर की। पहिरि सुरग बर लहँगो जरावजरे भूषन बिशेष धारि टीकी जोतिकर की ॥ चन्द्रकला सरस लगाय अंग अग माहिँ केसर को अंगराग खौर भाल बर की। चाली पिय मिलन मनोरथ बिचारि बाल मानी नाहिँ जेठवारी धूप० ॥

काव्यतीर्थ श्री रघुवीर मिश्र जी।

अन्ध धुन्ध न्याय का अँधेरी निसा लेश नाहिँ कपटी उलूक हिये हाय हूक कर की। रूसराज मण्डल भयो है फूसकान ज्यों कहर परी है दाव पावक लहर की ॥ भारत सरोवर खिल्यो है

धर्म कंज मजु गूंजत द्विरेफ घाट बैठि बडहर की। प्रबल प्रताप पुंज श्रीमती बिजयिनी के छायो है मही मैं मानो धूप० ॥

सिहोर (काठियावाड) निवासी कविगोविन्द गीलाभाई।

प्रीतम पधारे परदेश में मकारे तातें सुखद दुखद सबै वस्तु भई घर की। गोविंद सुकबि ताको कहा लौं बखानौं आली व्याल सम माल लागी कुन्दकली बर की॥ दमुना से दीप अरु शूल सम सेज लागी भूषण भुजंग अरु पौन आगि भर की। सूरज से चन्द लागे चिनगी से तारे पुनि चाँदनी सु लागी मनो धूप० ॥

सरद की चाँदनी में सोरह सिंगार साजि राधिका-रसीली गई पास बसीधर को। गोविंद न लखि तहाँ उर में उदास बनि बिरह तें व्याकुल ह्वै भूली राह घर की॥ वा समै सुखद सबै दुखद बने री आली चित्त में सतान लागी वस्तु विश्वभर की। सूरज से चन्द लागे चिनगी से तारे लगे जोन्ह लागी जारन ज्यों धूप० ॥

मालती की माला सी ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

आज चलु बेग प्यारी स्याम ने बुलाई तोहिँ ग्वाली कहा करे बैठी पानी माँझ वाला सी । कहै रससिन्धु तब कर के सिँगार चली गैल बीच देखि लोग धूप के उजाला सी ॥ खसन की टाटी तहाँ छूटत फुहारे खूब प्यारे पास लाई जहाँ भूमि लगै पाला सी । अतिही चतुर चारु कोमल बडी है लाक आवत में कुम्हिलानी मालती की माला सी ॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सपादक भारतजीवन काशी ।

एहो मनमोहन जू रसिकबिहारीलाल रा वरे हिये में जो बसी हौ मैनबालाला सी । बिनती करी हौ तुम जाहि के लिआइबे की लाई ताहि लाल भौन फूली गुललाला सी ॥ मदन सतायो बिरहागिन तपायो तन सीतल करौ जू बलबीर लाय पाला सी । भुजन सकेलि राखो,

हियरे हुमेलि राखो, उर में सुमेलि राखो मालती की माला सी ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

आई ब्रह्मलोक ते अपार अंबु रूप धारि पापन बिनासिबे को राजै नोक-भाला सी । बेनी द्विज महिमा महान महिमण्डल मे छाई स्वच्छ बिमल मसी मे सेत आला सी ॥ माधुरी अमी सी मुनिजनन जनाई देत लाग जमराज को करोर गर्ल ब्याला सा । शङ्कर के सीस पै सोहाई गंगधार ऐसी मानो है चढाई काहू मालती की माला सी ॥

बाबू हरिशंकरप्रसाद जी बनारस । सवैया

कैतिक मैं ततबीर करी तब ल्याई यहाँ लगि हाल बेहाल सी । देर लगी परजङ्क के साजत स्याम देखाय परो तुम आलसी ॥ खोजे न पाइहौ कोटि करो हरिशङ्कर ह्वै गई ख्वाब खयाल सी । बेला चमेली की क्यारिन मे कहूं जाय लुकी तिय मालती-माल सी ॥

पं० केदारनाथ जी बनारस।

अंग अंग अंगना अनंगरंग-रांची रम्य धा-रति ना पाव मूधौ चलत उताला सी। चंचल भरी है अंग अंचल उघरि जाइ अँखिया ति तीछी बरुनी की नोक भाला सी॥ आनन अनूप छबि छीनो है छपाकर की निसि मैं केदार देह दीपति उँजाला सी। मिली नन्दलाला सौं अ-केली आइ कुंज माहिँ गर भुज मेलि मनो मा-लती की माला सी॥

बा० माधोदास जी - काशी।

चिल्कदार चाँदनी सु चन्दा सी चमंकै चारु चहकै चकोर मोर देखि के हिमाला सी। नीर भरी नहरैं नदी सी चलैं चहूँओर फर्फरात फ-रसैं फुहारैं मेघ-माला सी॥ माधव के मास मध्य माधवीलता मे मिले दम्पति बिहार करैं गावैं राग माला सी। पाला सी प्रजङ्क पै नि-राला पाय बाला आज लगी नन्दलाला कण्ठ मालती की माला सी॥

ब्रजचन्द जो वल्लभीय—काशी।

कामद-लता सी काम कलित कला सी लली सुखमा सोहागभरी दिव्य देव-बाला सी। बारने रहति नित्य नवला त्रिदेवन की रहति नवाये नैन रति छबि जाला सी॥ सबै ब्रज दे-विन की स्वामिनी सरोजमुखी बोलति मधुर काम कोकिला रसाला सी। आपहू तें अति रिझवारी वृषभानवारी सुठि सुकुमारी प्यारी मालती की माला सी॥

छबीले कवि- बनारस।

परम बिरंचि जु करम सुघराई दच्छ धरम धुरन्धर सुरन बर बाला सी। सुकबि छबीले वृ-षभान की कुँअरिनी कलंकित कुलीन देव सरि सुख साला सी॥ आजु लखि आई मनमोहन की मोहनी मै चन्द मन्द कै दई अमन्द सुख आला सी। आली दिन चारि ते बिवाहि घर आई अबै लाल हिय ह्वै रही सुमालती०॥

श्री ठा० राधिकाप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा।

देखो गंगधारा पाप काटिबे को आरा भई नाम जानुजा को जस जोर है बिसाला सी। भागीरथ काज सुरपुर तें जो गौन कियौ दियौ है छुड़ाय कलिकाल बिकराला सी॥ राधिकाप्रसाद अति निर्मल करनहार धोखे हू निहार अघ छार सुख साला सी। करत बिहार बलिहार अवनी मे आय सीतल करनहार मालती०

भरे हद्द हौदन गुलाबनीर झलाझरैं सन्दल खुसबोई साज फूलन रसाला सी। चाँदनी चुनावदार चन्दन चहल कीच खासे खसखाने छुये लागती हैं पाला सी॥ राधिकाप्रसाद सींचि सीतल उसीर सीर सुन्दर सरोज सेज साज कै बिसाला सी। आनन उजाला ब्रजबाला चित्र साला बीच राजै नन्दलाला संग मालती०॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी।

तूही सुकुमारी प्यारी प्रानन अधार अहै तूही अहै सरद हिमन्त में दुसाला सी। सिसिर

कसाला जब होत महा पाला पड़े तूल तुलाई सी तुही गर्म अति ज्वाला सी ॥ तूही है बसन्त मे अनन्त सुखदाई तूही प्रद बरसा मे मोद मंजु कुंज साला सी । चलु ना हवाला करु बेगि नंद-लाला पाहिँ ग्रीष्म गर लाग सुख दै मालती० ॥

कोपागजनिवासी कवि सालिकराम जी ।

साजित महल बीच चाँदनी चमकदार देखि मन मोहि जात मानो मैनसाला सी । सखिन समाज लिये बैठे नन्दलाल तहाँ करत कलोल बोल बोलत रसाला सी ॥ कहै सालग्राम सबै बारुनि बिबस जानि पाय भल औसर भो आ-नँद बिसाला सी । करिकै छलछन्द सब सखिन ते न्यारो कै मालती लपटि गई मालती० ॥

श्री नवनीति कवि — मथुरा ।

रूप बनमाली नवनेह की लतान चुन चोप चित चाह दै सुधारी कर जाला सी । नवनीत प्यारे नेह सूत बिच पोहि ताहि थिरता लगन थाक ग्रथित बिसाला सी ॥ हेरतही हेरत हिये

कों हरि लेत हाय सरकि २ कराठ कैलि रस ख्याला सी। सीतल सुखद स्याम हीतल सुहाग भरी उर लपटात जैसे मालती० ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलालजी शर्म्मा।

मान जो धरी है तो मनाय दैहौं छनही मे मेरी कही मानी नहिँ कौन ब्रजबाला सी। जाके मुख सुने हौ कठोर से बचन फिर वाही से मुनाय दैहौं अमी को पियाला सी॥ धीर उर धरिये न चिन्ता चित कीजे लाल होत नहिँ ज्वाला कोई चिन्ता घोर ज्वाला सी। नीकै कै मिलाय दैहौं सेज पै बिठाय दैहौं गरे मे लगाय दैहौं मालती को० ॥

कानपुरनिवासी प० ललितप्रसाद जी त्रिवेदी।

हीरन की खानि की सुहानि सो गलानि गलै बर मुकुतान की प्रसूति मान ताला सी। चाँदनी लजानि चपलानिलानि हँसन की ल-लित सकानि मुखमानि की सुसाला सी॥ कौन धौं बखानि कहै राधे जी सकानि बस उर दर-

कानि परी दाड़िम के माला सी। मन्द मुसु-
कानि की प्रभानि मुख कंजही ते निकसि परो
है मनौ मालती की माला सी॥

लाला हनुमानप्रसाद झवाईटोला—लखनऊ॥

माखन से पद गति दुरद कदलि जंघ दु-
न्दभी नितंब लंक कमल मृनाला सी। पुरट
की पाटी पीठि बेनी पन्नगी सी तापै सीसफूल
भानु मोती माँग शुक्र माला सी॥ त्रिवली त्रि-
बेनी नाभि-कूप कुच कंबु ग्रीव हनूमान लाल
लखि वारौं मैनबाला सी। आनन उजास चन्द
पूरन प्रकास तास सुखराम हास मन्द मा०॥

गंधौलो निवासी बाबू जुगुलकिशोरजी उपनाम ब्रजराज।

करि रति रीति बिपरीत हारि जीति नीति
पीतिमै अभीत रही सोय काम-बाला सी। थाकी
रतिया की मख मूर त्यों नशा की ताकी ताकी
छवि बाँकी री तहाँ की सुखसाला सी। झीने
पट भीने रस सीने मे सखी ने लखी पीने कुच
दीने औंधि मैन मधु प्याला सी। भोरहीं नि-

हारी ब्रजराज हिय लागी प्यारी भरी छविवारी खरी मालती की० ॥

पीरे अँग राजत भँवर चहुँ ओर ब्रजराज ढिग सोहै भरी रूप गुन जाला सी । सेज पर सुषमा बढावति सुबास जुत हीतल कै सीतल जुडाय देति पाला सी ॥ हिय मे लगे तै टलिमलि मुरझाये जाति अतन जगाय देति आछी मैनबाला सी । नाह गहि कर सौं नवायो गल माह चहै एरी नौल बाला आजु मालती० ॥

दासापुर निवासी द्विज बलदेव कवि ।

स्यामै के सनेह सानी स्यामो स्याम अम्बर मैं स्याम घन घटा घेर सौरभित साला सी । कारे केस बेस सहकारे प्यारे आभरन मखतूल कारे लोक ललित दुसाला सी ॥ भाई सो सदा हीं प्रभा बलदेव भावते को भाँति भरी भृकुटी कटाच्छ भूरि भाला सी । मदन मयंकमुखी आई मणिमन्दिर मै मरकत तार मंजु मालती० ॥

मिश्र सेवकश्याम कवि मऊगंज रीवां।

सन्दली बसन सोहै फैलति सुगन्ध चौहूं जेब देति चोली तनजेब भीन जाला सी। जड़ित जवाहिरात भूषन अमोल धारे चन्द्रमुखी अधर ललाई गुल लाला सी॥ मिश्र स्यामसेवक बिराजै खसखाने बीच फूलन की सेज लगै परसत पाला सी। प्यारे चलि चैन जुत चाखहु पियूषप्याला राखहु लगाय हिय मालती० ॥

श्री चन्द्रकला बाई—बूंदी।

आये बहु दिवस बिताय परदेश पति सुनि हरखानी बाल रति मद गाला सी। सोरह सिंगार साजि सखिन समेत आय बैठी वर आँगन मैं सोभ सुख साला सी॥ चन्द्रकला मन्द मन्द हँसि बतरावत ही तबहीं निहारि पिय दौरी दीपमाला सी। हँसि हरखाय हेरि लीनो प्रानप्यारी बाल लीनो गल लाय लाल मा० ॥

बत्तीसवां अधिवेशन।

मिती जेठ बदी १ सम्बत् १९५२

प्यारी उर लागै ना।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

सघन निकुंज अत भानु की सुता के तट बट के जो वृक्ष तरे घाम कहीं लागे ना। कहै रससिन्धु तहाँ खस की जो रावटी पै छीटे जल चहुँ ओर तपी पौन लागे ना॥ राधिका के संग स्याम बैठे देख भाजी सखी कितने बुलावे बात एक ताहि लागे ना। दौर गहि लाये वाहि मानहु मनाये फेर चूम मुख बोले नेक प्यारी उर लागे ना॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा संपादक भारतजीवन काशी।

जब तें गई हौं लाल रावरी पठाई बलि तब सों हमारी बात ताके मन पागे ना। हाहा गिरधारी सौंह लाखन दै हारी पर कठिन कठैठी वह नेक अनुरागै ना॥ चलिये बिहारी

तुमै देखतै पियारी मन रसिकबिहारी कैसे काम हठि जागै ना। मैं तौं पचि हारी बलबीर जू तिहारी सौंह लाख समुझाई एक प्यारी उर०॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी।

मेरे मुखचन्द की सुचन्द्रिका प्रकाश देखि भीर ये चकोरन की मेरे तीर लागै ना। लोचनबिसाल के हवाल ना बखाने जात जानि जलजात पात भौंरा कहूं लागै ना॥ माधव जू श्रीफल तें सौगुने करेरे कुच उच्च हैं नोकीले ये चोटीले कहूं लागै ना। लागि है कलङ्क चंक चुभै कहूं पीतम के याही ते निसङ्क होय प्यारी उर लागै ना॥

प० बचऊचौबे उपनाम रसीले कबि—काशी।

पौढी पट तानि अनखाय केलिमन्दिर मैं आय प्रात पीतम जगाय हारे जागै ना। कहत रसीले कर छूवत करोंटे लेति नजर न जोरै मुख मोरै प्रेम पागै ना॥ सौसौ सौंह खाय बार बार बिनती कै थकी गजब हठीली तऊ नेकु

अनुरागै ना । बिछलि बिछलि परजङ्क ते मचलि परै करै भौंह वंक कमौं प्यारी उर० ॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी ।

सोई मान करि कै कमान सम भौंहै तानि हित की सिखाऊँ सीख तू तो हठ त्यागै ना । परम सयानी होइ बनत अयानी वृथा क्रोध के तरग मैं जगाये जाम जागै ना ॥ दीन ह्वै मनावै खरो आंखिन केदार हेरु छाड़ि निठुराई काहे मन अनुरागै ना । सौतिन की सूल को बिसारि कै गॅवारिनी तूं क्यों न मनमोहन सों प्यारी० ॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी—बनारस ।

फूलदान पानदान चौघड़े अतरदान गाज से देखाई देत नैन सुख पागै ना । हाटक घ-टित हीरा मानिक-जटित नोखी ऐसी परजङ्क मिले काम तन जागै ना ॥ सुनौ हरिशंकर कहौं मैं यह साँचो बात दीपक-विहीन जैसे गेह अनुरागै ना । तैसिही तयारी कालकूट तैं दुगुन मोको सपथ तेहारी जौलौं प्यारी उर० ॥

श्रीकिशोरीलालजी गोस्वामी आरा।

प्रात मनभावन को आवन किसोरी पेखि
रति विपरीत की छटानि अनुरागै ना। विकल
भई सी परी कल ना हिये मे रही मंजन सुअं
जन सिँगार मन पागै ना॥ सखिन दुराइ करि
छलनि छबीली जाइ सोई सीसमन्दिर जगाये
नेक जागै ना। हारे करि बिनती बिचारे प्रान
प्यारे तऊ मानत मनाये पै न प्यारी उर० ॥

गंधौली निवासी बाबू युगलकिशोर जी उपनाम ब्रजराज।

रजनी बिताय कहूं आये ब्रजराज तिन्है देखि
अनखौंही भई एरी प्रेम पागै ना। मनमैं ममूसि
रही टूसि गुन भावन के ईछन तिरीछन सों
नेकु अनुरागै ना॥ सेज पै सहमि परी जागति
जऊ है तऊ सोइबे के मिस सों जगाये बलि
जागै ना। रूसि खट पाटी की करौंट सों ल-
गीये रहै प्यारो हिय लावै तऊ प्यारी उर० ॥

लाला हनुमानप्रसाद झवाईटोला लखनऊ।

होइ नैनी निपुन निगम निरधारे सदा समा

सम एक रस अन्य रँग रागै ना। श्रवनी सचेत सुनि श्रवन गमन करै तप जप जोग जग्य जागै भूलि भागै ना॥ नासा अलि आसा बासा पद कंज हनूमान पावै तुरी ताछिन अमरलोक तागै ना। सोई राममीत जाके आठौ जाम राम रट सोई काम जीत जाके प्यारो उर० ॥

वृष को तरुन तेज सजल अजल कीन्हे चराचर बिकल मयूर खात नागै ना। सिहन के छौना मृगछौना छपे एकै छाँह प्रानन की परी कोऊ काहू देखि भागै ना॥ ऐसे समै चन्दमुखी तजि के बिदेसी होत कहै हनूमान कहूं मैन आग जागै ना। चन्दन ते चाँदनी ते चौगुनी चढ़ैगी ताप सीतल न ह्वैहै जौलौं प्यारो उर०॥

पटनानिवासी बाबू पन्ननलाल जी।

सीतल सुगन्ध मन्द पौन ना सुहाय नेकु फूली फुलवारी भली नेकु नीक लागै ना। चन्दन अगर घनसार ना सुहाइ नेकु नीके तहखाने खसखाने नीक लागै ना॥ भाँति भाँति

व्यञ्जन त्यों बिविध विधान वस्त्र सुख की समग्री जग एक नीक लागै ना। जौलौं पिकबैनी गज-गामिनी मयङ्कमुखी पीन कुचवारी प्रानप्यारी०॥

एरे रितुराज तौलौं मोहि तू सताय लैना तौलों रतिराज तुहूं खोरि खोरि दागै ना। तौलों मतिमन्द पौन तौलौं चन्द्र चन्द्रिका त्यों तौलों सुखकन्द भौन देहि दुख भागै ना॥ तौलौं अँग अंग सदा संग कै रहैया मेरे दैलौ दुख तुम्हूं तुहूं तौलौं भाग जागै ना। सब सुख फेरे रहौ लाख दुख घेरे रहौ कर लो जनाव जौलौं प्यारी०॥

पं० गणपतप्रसाद गंगापुत्र (उपनाम श्रीवर) अयोध्या।

लाई है भुलाय नारि नवला निकुंज बीच बचन सुनावै जौलौं रतिरंग पागै ना। आय गयो ताही समै साँवरो सु ताही ठौर अवलोकि ना-गर को मोद तन जागै ना॥ श्रीवर उझकि झुकि लङ्क गहि लीनो धाय भौंह मटकाय थहराय अ-नुरागै ना। छटकि छुटाय स्वेदवन्त ह्वै ससङ्क आज कोटिन उपाय किये प्यारी०॥

कानपुर निवासी पं० ललिताप्रसाद जी त्रिवेदी।

कोयल प्रभाउ री देखाउ कूकि कूकन सौं जू गुनू जराउ कै जमाति जोर जागै ना। छटा चमकाउ बरसाउ घने घन बूँद नीपन उडाउ भौर भीर भूरि भागै ना॥ ललित लगाउ उर लाइ सी समीर सीरी रागन बढाइ मैन दागन सो दागै ना। का बस बिदेस बसि पावस करौ मै कहा तौलौं तू सताउ जौलौं प्यारी उर० ॥

सासु को सुवाइ चुकी दीप को बुझाइ चुकी ससुर जिवाइ चुकी कोऊ घर जागै ना। कन्त को पठाइ चुकी माइके बताइ काज फरिक लगाइ आइ कैसे अनुरागै ना॥ कौन काज ताइ रही भौंहन चढाइ रही केलि के निकुंज मै सराहु निज भागै ना। हिय सियराइ के थिराइ मन स्यामरे के ऐसो समौ पाइ धाइ प्यारी० ॥

कोपागञ्ज निवासी कवि शालिकराम जी।

कछुक बहानो करि दूती लिये आई बाम जोहै अति त्रास भई प्यारे देखि भागै ना। चतुर च

लाक छैल सेज पै बिठाय लीन्ही देखतही सूखि गई नेकु अनुरागै ना ॥ कहै सालग्राम हँसि २ के हँसायो चहै सुनो अनसुनो करि रति अंगरागै ना। कोटिक उपाय करि हारि गये मोहन जू तदपि सकोच बस प्यारी उर० ॥

श्रीचन्द्रकला बाई - बूँदी।

करि रति रंग संग मोहन के सारी रैन सोई ह्वै अचेत यौं जगाये पर जागै ना। ताही समै स्वप्न माहिँ स्याम के सुअंगन मैं लखि परै नारि चिन्ह चिमकी सुरागै ना ॥ चन्दकला लाल समुझावैं बर बैन भाषि अकसभरी सो बाल क्यौंहू रिस त्यागै ना। करि मनुहारि कर ठोढ़ी लाय बांह गहि लाख ललचावै तऊ प्यारी उर० ॥

मिश्र स्यामसेवक जी—रीवां।

आलस-बलित अङ्ग कलित कपोल पीक हेरि रही मौन रोस जाहिर सु जागै ना। जा दिशि पियारो खरो होय मुरि ता दिसि ते दूजी ओर बैठे फिरि नेक अनुरागै ना॥ पानि जोरि पांय

परि विनती अनेक करै ह्वै कै स्याम सेवक पै कैहूं प्रेम पागै ना। बॉह गहतेही वङ्क ताकि झिझकारि भागै कारी लीक पेखि ओठ प्यारी० ॥

दासापुरनिवासी प० बलदेवप्रसाद कवि।

बीतत है अब तौ मनावतही दिन रैन साजै अभिसार मान सान जोर जागै ना। द्विज बलदेव व्यौंत बिसद बिचारन कै मत पंचबाण कै प्रपंचन को पागै ना ॥ बावरी सी बनी है बसन्त की बयारि बहै कैसे ज्ञान रैहै जो न ऐहै फबि फागै ना। धीर धरि रोकि रहौ मन को ब्रजेन्द्र आज आपही सों आय जौलौं प्यारी उर० ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगोलाभाई।

घोरि घनसार कैसे काय में लगावत हौ उन ते अनंग दुख देह मेरो त्यागै ना। चन्दन लगाइ चारु सीतल करत पर हीतल ते हाय विथा विरहा की भागै ना ॥ अरगजा अनूप अरु कोमल कुसुम माल बोझ वपु करन कों लाव मेरे आगे

ना। गोबिंद मिटेगो नाहिँ तौलों तन ताप मेरो जौलों भरि अंक आइ प्यारी उर० ॥

मदन दुहाई है।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाल जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

सुन्दर जु चौहट पै गोकुल में खेलें फाग झुण्डन की झुण्ड सखी राधा संग आई है। कहै रससिन्धु ग्वाल लटपटी बाँधे पाग मोर की कलंगी सीस सोभा सरसाई है ॥ बाजत है फड तहाँ उडत गुलाल खूब करी सब जाके आज जैसे मन भाई है। स्याम मुख चूमे कभी कुचन पै डारे हाथ फागुन के मास माझ मदन दु० ॥

बाबू रामकृष्ण बर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी

कैसे तुम रसिक अनोखे बनवारी ऐसी चलन अनूठी धौं कहाँ ते सिख पाई है। सौ सौ बेर तुमको बुझाऊँ पै न मानो तुम रावरे हिये में यह कैसी धौं समाई है ॥ नाहक ही रंचक सी

बात में रुसाय देत बान यह रावरी परम दुख-
दाई है। लाख मनुहार करि हारी बलबीर लाई
कोटि बार दीनी जब मदन दुहाई है॥

प० केदारनाथ जी बनारस।

देख्यो जाइ ब्रज में वियोग बगरानो बड़ो
जोगकी कहौं क्या कथा भोग चितचाई है। बिरह
पयोधि माहिँ मगन भई हैं दार दीसत न पार
सोक भँवर भँवाई है॥ बूडि उतरात छिन ऊ
रध उसाँस लेत पीर परिलंभ की गँभीर उर छाई
है। रावरी दुहाई कहैं काँची नहिँ साँची स्याम
माची ब्रजमण्डल मै मदन दो०॥

बा० माधोदास जी—काशी

आनन अनूप ये अरस के अमीकर से अंबुज
तें अम्बक मे सौगुनी लुनाई है। जोरदार जो-
बन ये ज्वानी के जलूस भरे जर्जरे जवाहिर तें
जेवर जराई है॥ माधव परयङ्क पै निसंक अंक
भेटिये जू लेटिये लपेटिये समेटिये बधाई है।
ल्याई हौं तिहारे भौन कौन कौन छन्द करि
कीजिये अनन्द आज मदन दोहाई है॥

असि चमकाइ बिज्जु दुन्दुभी बजाइ घन पावस फिरति देत मदन० ॥

श्री ठा० राधिकाप्रसाद साहब जागीरदार – पहरा।

पावस नियरायो चहत ग्रीषम सिधायो शब्द कोयल सुनायो बकपांतिहू सुहाई है। घनघुमड़ाई नभ मध्य धुन्ध छाई अत तरनतेजताई नव नखत अवाई है॥ राधिकाप्रसाद बारि सीतल सुहाई कर बीजन गहाई उष्णताई अधिकाई है। करों का उपाई बीर मेरे मनभाई ल्याओ प्रीतम बुलाई फिरी मदन० ॥

गनपतप्रसाद गंगापुत्र अयोध्या।

मधुकर गुंजै चहूं बेलिन की कुंजै बैठि पुंजै कोकिलान की कठोर छबि छाई है। मदभरे झूमत रसालन की डारन पै विकसे पलासन अं· गार दुखदाई है॥ श्रीबर समीर सने गरल अमन्द डोलै तोलै बिरही के प्रीति रीति दरसाई है। आई है बसन्त रितु ब्रज में कन्हाई बिन· फेरैं दै नगारे हाय मदन० ॥

कोपागंजनिवासी कवि सालिग्राम जी ।

राजै चतुरंगिनी दुखद बन बागन को चारो ओर घेरि घेरि ओज भरि आई है । सिलीमुख मौन जोर सनासन चलै लागे कोकिल कुबोल गोला घमासान छाई है ॥ कहै सालग्राम भई सिसिर की हार यातें बिचलि कुभागबस बाहिनी पराई है । कैसे कै बचोगी हाय प्रीतम बिदेश आली देखो तो चहूंघा फिरी मदन० ॥

पटनानिवासी बाबू पन्ननलाल जी ।

एरे काम मीत जग जाहिर प्रताप तेरो दीन अबला पै का दिखावै प्रभुताई है । हौं तो बिनु प्रीतम के आपही मरी री जाति जानत न होति मुए मारन हँसाई है ॥ जाय कै जनावै जोर साजन सुसील पाहिं जिन सब भाँति सुधि मेरी बिसराई है । याही में बड़ाई तेरी भावती बुलाय लाउ तोहि रितुराज आज मदन० ॥

मेरे प्रानप्यारे कब लेहिंगे सुमेरी सुधि उन्हैं कौन मेरी सौति बनि बिरमाई है । ऐसे एक

बारही बिसारि क्यौं दिये हैं हाय जब ते गये ना पाती एकहू पठाई है ॥ उनकी समैया कहा अबहू फिरो ना बीर कौन सो भदेस देस देति ना बुझाई है । ह्यां तो रितुराज की अवाई अब ही से भई परत सुनाई कान मदन० ॥

लाला हनुमानप्रसाद झवाईटोला—लखनऊ ॥

पूरब बसन्त आइ कुसुमित कीन्हे बन अब सैन ग्रीषम की अति उग्र आई है । मीरे खस-खानन तहखानन मे भासकर सेस खॉस बिजन समीर सरसाई है ॥ ब्रजचन्द घनस्याम सीतल-हरन-ताप हनूमान मान तजि मिलु सुखदाई है। कौन ठौर ठहराई पैहै सियराई आजु दिस दिस फैल गई मदन दु० ॥

गंधौली निवासी बाबू युगलकिशोर जी उपनाम ब्रजराज ।

तजि चंचलाई मन्दताई आई पायन मैं लंक मैं बिहाय गुरुताई लघुताई है । कुचन उचाई अधरान मैं ललाई छाई नैनन मैं स्यामताई अ धिक सुहाई है ॥ अलक कराई औ कपोल चि-

कनाई भाई भौंहन सुधाई तजि पाई बंकताई है। बदन गोराई सिसुताईहूं पराई अलि अंगन तिया के फिरी मदन० ॥

दासापुर निवासी प० बलदेव कवि।

धीर दलदलित दरेरो द्विज बलदेव बावरी बिलोकनि बिसिख बरसाई है। लीन्हो नन्द लाल को लखत लोकलाज लूटि दुन्दभी उरोजन की लसत लोनाई है॥ पावै सनमान लाग्यो मान मनमंत्री महा छबि रासि सौरभ सिंहासन सोहाई है। मन्दहास सदन रदन दामिनी सी दुति राधे जी के बदन पै मदन० ॥

मिश्र सेवकश्याम कवि मऊगज रीवा।

मन्द २ चलत सुगन्धित समीर सीर तालन में सुन्दर सरोज सरसाई है। कानन कुसुम कमनीय अलि गुंजि रहे बृच्छन की पल्लव ते सुखमा सवाई है॥ मिश्र स्याम सेवक ललित लहराहिँ लता कोकिल की कल धुनि चारो ओर छाई है। देखहु पियारे ऋतुराज की सोहाई प्रभा जग फिरि गई मानो मदन० ॥

श्री चन्द्रकला बाई — बूंदी।

पावस न आली यह अधिक उमाहभरी सेन मीनकेतन की चारो ओर छाई है। घन न डरारे कारे भारे गजराज खरे धुरवा न दौरैं हय दौर दरसाई है॥ चन्दकला दामिनी न असि बिन म्यानन की गरज न दुन्दभी की धुनि सरसाई है। चातक चिकार ना नकीब गन बोलत हैं मोरन को सोर नाहिँ मदन० ॥

सिहोर (काठियावाड) निवासी कविगोबिन्द गीलाभाई।

मोद ते मनावन कों आई है बसन्त ऋतु वाकी ओर पेख प्यारी चारो ओर छाई है। ल्याई कुन्द केवरा गुलाब गुलबास तेरे पास में पठाई तोकूं चाहत रिझाई है॥ गोबिंद सुकवि पर तुम तो न रीझति वे आतुर अपार बनि उर अकुलाई है। तो मन मनाइबे कों कोकिल सरूपे कूकि देत बार बार तोकूं मदन० ॥

तैतीसवां अधिवेशन।

मिती जेष्ठ सुदी १ सम्बत् १९५२

मनभाई व्रजराज की।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज

उपनाम रससिंधु।

तोड़ रही फूल कोई गहना बनावे सखी चोटी चारु राधिका की कीनी पुष्प साज की। कहै रससिन्धु फेर कंचुकीहू जालदार फूलन की सेज खूब ताजी बनी आज की॥ कृष्ण मिलिबे के हेत मालिन जो आई तहाँ बैठे घनस्याम जहाँ बोली अतनाज की। बेला औ चमेली जुही मौसरी गुलाबमाल सोई गुँथ लाई मन भाई व्रजराज की॥

वृन्दावन कुंजन में खेलन को गये स्याम करी है तयारी ग्वालमण्डली समाज की। कहै रससिंधु तहाँ देखत हैं बाट कृष्ण भई क्यों अबेर एती कहा भयो आज की॥ गोप को पठाए दौर सखी को ले आउ वेग जसुधा पठाई गोपी

मिली बड़े नाज की । दूध दधि माखनहू और पकवान कई छाक में ले आई मनभाई ब्र० ॥

बाबू रामकृष्ण बर्म्मा संपादक भारतजीवन काशी ।

गरक भई है श्रमसीकरतरङ्गन में अङ्गन मैं आरस अनूठी छबि आज की । उरज उतग पर सोहत नवीन चन्द बन्द कंचुकी के बात भाषत सुलाज की ॥ मोति जो टुयौ ना बलबीर सो मिलाप तेरो कैसे तू बचैहै दीठि आलिन समाज की । अधर कपोलन पै दन्तत के दाग कहैं ह्वै गई सहेट मनभाई ब्रजराज की ॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी -- बनारस ।

पूतरी कनक निज आकृत ठराई ताहि सेज पै बिठाई प्यारी सुघर रिवाज की । नेकु दुरि आप दीप यूथ मों बिलसि रही देखि न परति तौ जरूरति क्या लाज की ॥ सुनौ हरिशंकर गये जो स्याम धाय वहाँ लगे हाथ मोजै हानि जान्यो जब काज की । ऐसी चतुराई के न कौन बलि जाई जासों गरद मिलाई मनभाई ब्र० ॥

पण्डित अम्बाशङ्कर जी - काशी ।

भक्ति शिवसङ्कर की भाई कवि सङ्कर जू कीरति भगीरथ की जीवन के काज की। नीति भाई बिदुर सुप्रीत भाई गोपिन की हठ दस-कंठ कुल रच्छस के ताज की ॥ दाया सिवि भाई काया भाई है दधीच जू की छाया घन भाई ऋतु पावस के साज की । जाया वृषभान की लजोहीं अलसोहीं दीठ ठुमुक ठगोहीं मनभाई ब्रजराज की ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

ताब महताब की कहा है मुख आब आगे लखतै बनत खूबी चशम दराज की। हीरन की पाँति सी दमकै दुति दाँतन की ओठ आगे सुधा की मिठाई केहि काज की ॥ बेनी द्विज बरनत बनै ना अंग आभा छवि जीती सुघराई सारी मैन महराज की । लाज तजि अब तो बिकानी बीर उनहीं पै मोहँ स्यामताई मन-भाई ब्रजराज की ॥

फेरि ना मिलैगो ऐसो रसिक प्रवीन हाली

फेरि ना मिलैगी ए घरी है जौन आज की ।
तातें मान मेरी देरी करिये न एरी भटू भेटौ
भरि अंक संक सारी तजि लाज की ॥ परम दे-
वैया है रिझैया बीर बेनौ द्विज कहा लौं सराहौं
खूबी खसलत मिजाज की। देहिगो मँगाई माल
मुक्ता मनीनन की नेकहू करैगी मनभाई ब्र० ॥

पं० बचऊचौबे उपनाम रसीले कवि—काशो।

जाति दधि बेचन अकेली जानि कुंजन मैं
लियो लखि घेरि क्या बताऊँ गति आज की ।
कहत रसीले धरि मटुकी उतारि फोरि छोरि
बरियाईं नई कंचुकी सुलाज की ॥ मन्द मुसु-
काय भरि अङ्क मोहि मोहि लीनी आली कछु
खबरि रही ना गृहकाज की। छवि मो छकानी
सी दिवानी ह्वै बिकानी हाय कर बनि आई
मनभाई ब्रजराज की ॥

ब्रजचन्द जो बल्लभीय—काशी।

देह गेह माहि निजा सक्ति अविद्यादि पंच
जबलौं रहैंगी तौलौं भक्ति बिन काज की ।

सिद्धि क्यौंहू भई है अनन्य सुद्ध भक्ति आज प्रगटो अनूप छबि दिव्य रसराज की ॥ कैसे अब मेटिये री सुखद रजायसु को कीजै सुधि रंचहू न लाज के जहाज की । दोऊ करजोरि अति दीन ह्वै सुनावो बिनै होन दै सखी री मनभाई ब्रजराज की ॥

कीन्ही है सकल मनभाई लोक बेद हू की कीन्हो मनभाई सब सखिन समाज को। कीन्ही मनभाई सबै चौचँद करैयन की करी मनभाई निज धर्म सिरताज की ॥ करी मनभाई ब्रजचन्द के चकोरन की सबै मनभाई करी नित्य रसराज की। सुनैं मनभाई आपहू को बात यातैं हम ब्रज की प्रसिद्ध मनभाई ब्रज० ॥

बा० माधोदास जी - काशी ।

गोपी ग्वाल गावैं सबै गौरव गुमानभरे गैल गैल नाचैं बनी बनिता समाज की। माधौ जू अनन्द भयो नन्द के सदन माँह प्रगट्यो है आनँद को कन्द निसा आज की॥ दधि लै उड़ावै

वो लुटावै सब सौज घनी जैजैकार बोलै सबै गोप सिरताज की। द्वार द्वार भेरी वो नफीरी सहनाई भौन बाजती बधाई मनभाई० ॥

बाबू छेदी कवि काशी।

छबि सरसान लागी मुरि मुसुकान लागी दसन दमंक होन लागी रुचि गाज की। मोद मदमाती कोकमति बतरान लागी तिय सतरान लागी पिय लखि लाज की ॥ छेदी देखि हँसन लागी दाबै रसन लागी रीझन चखन लागी औरै गति नाज की। छाम कटि लचि लागी कच लागी लहरान कुच उच लखि मन-भाई ब्रजराज की ॥

मिश्र स्यामसेवक जो—रीवां।

तेरे मुख चन्द को चकोर बहु द्यौसन ते फेरी देत फिरत फकीर के रवाज की। बरसन बीत गये दरसन काज मोसों बिनती करत छोड़ि ठसक द्रुताज की ॥ मेरी मनुहारि हिये धारि कै नेवारि लाज साज दरसाव मिश्र भषन

समाज की । मन्द मुसुकाइ नेक घूंघट उठाय प्यारी आज कर दे तू मनभाई ब्र० ॥

दासापुरनिवासी प० बलदेवप्रसादजी कवि ।

जडित जवाहिरात भूषण अनंग कृत उठत तरंग अंग सौरभित साज की । मुक्त जरतारी स्वेत रंगवारी सारी सीस कलित किनारीदार सुवरण काज की ॥ द्विज बलदेव बर बदन बिकासमान सुन्दर सरस रासि सुखमा समाज की। मन्द मन्द डोलै मतवाली सी निकुंजन मैं तूही मृगनैनी मनभाई ब्र० ॥

श्रीचन्द्रकला बाई – बूँदी ।

जल मैं धसीही ब्रजबालिका सनान हेत करि अभिलाष श्यामसंगम सुकाज की । तिनके बसन चोरि हरि तरु जाय चढ़े लखि सिर नाय रही मारी अति लाज की ॥ चन्दकला हा हा खाय माँगे चीर हाथ जोरि बोले लाल आवो कढ़ि नगन समाज की। हिय हरषाइ सीस नाय नाय नेहनही सब कढ़ि आई मनभाई ब्र० ॥

गंधौली निवासी बाबू जुगुलकिशोरजी उपनाम ब्रजराज।

साँकरी निकुंजगली बिजन अँध्यारी कुई आवति बिलोकी गुजरेटी निधि लाज की। दब-कोहैं पायन दूतै तै री गुपाल जात घात बनि आई जानि सब सुख साज की॥ कर गहि आनी अङ्क निपट निशङ्क अलि हौंहू दुरे निरखी स-कल सोभा आज की। कसक मिटाई घरी चारि मै मरूकै मनभाई मिलि भई मनभाई ब्र०॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा।

आई तरुनाई कट चली चचलाई अंग अंग अरुनाई सरसाई सुख साज की। भाजी सिसु ताई चित्त चढ़ी धीरताई लख चालहू लजाई गति आई गजराज की॥ राधिकाप्रसाद चार चित्तहू चुराई कटि देखि सकुचाई खीनताई मृगराज की। आनन लखाई बिहसाई हरषाई ब्रज नारी अरुनाई मनभाई ब्र०॥

पं० गणपतप्रसाद गंगापुत्र (उपनाम श्रीवर) अयोध्या।

सीस पै मुकट श्रुतिकुण्डल सरोजनैन बदन

मयङ्क रद कुन्द दुति राज की । गर बनमाल बाहु सोभित बिसाल लिये लकुट सुवंशी राग मधुर अवाज की ॥ श्रीवर पितम्बर बिराजत लटक चाल सकल सरीर मंजु दीपति दराज की। मदन तरंगमई मदक मरन्दमई मूरति अनोखी मनभाई ब्रजराज की ॥

बाबू शिवपालसिंहजी – भिनगा।

रति की लोनाई मञ्जुघोषा मधुराई सिव गिरिजा गोराई सुघराई द्विजराज की । बानी चतुराई औ सुकेशी केश सुन्दराई तिल की निकाई है तिलोत्तमा के साज की ॥ सची प्रभुताई इन्दुमती सुकुमारताई चष चचलाई लखि चित्ररेखा लाज की। आज यह लाई लाख कसम धराई ब्रषभान जू की जाई मनभाई ब्र० ॥

लाला हनुमानप्रसाद झवईटोला लखनऊ।

आजु हम देखी राधा अगम अगाधा रूप गोरी स्याम जोग्य सोभा जैसे घन गाज की । दन्त कुन्द मुख इन्दु नैनन हूं अरबिन्द भौंहै छबि

छीनी है सुमन धनु साज की ॥ बाज गजराज मृगराज लाज लावन है हनूमान लोकालोक लोकी केह काज की। ऐसी बाल लखत निहाल ह्वैहै नन्दलाल विधना करी है मनभाई० ॥

ला० मारकण्डेलाल उपनाम चिरीवी कवि कोपागंज ;

छिन छिन आइबो हँसाइबो खिलाइबो औ सूरत बनाइबो अघानो दगाबाज की। कानन मैं कुंजन मैं कालिंदी के कूलनि मैं करिकै अनेक कला काम के समाज की ॥ कवि चिरजीव आज कितने दिनानहूं पै रोज रोज खोज खोज खोरी सुख साज की। छूटिगो हमारो सबै जिय को जँजाल ख्याल भई अब भाई मनभाई० ॥

हारे कहि कथा काम कौतुक करोरन की मोरन की नटनि देखाय सुख साज की। जोवन की जमक जलूस जोमवारिन की छोड़नि अटा पै छटा लाज औ लेहाज की ॥ कवि चिरजीव आज पावस तें पावस लौं करिकै अनेक कला कामज समाज की । ऐसे क्रूर प्रानी ते

पर्यो है हमै काज ताते आज लौं न भई मन-
भाई ब्रजराज की ॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी।

हौं तो न दुराव नेकु उनसे कबौहूं रखी करी
न बिबेक एक बनै नसै काज की। बहत समाज
की तुफान त्रास बायु प्रेम बारिधि जहाजहिं च-
लाय दई लाज की ॥ मुख उनही के सुख मानो
रुख राखी सदा काल की हवाला की कबौं
ना कही आज की। तऊ कौन जानै क्यौं सुसील
महराज उठे कहा री भई ना मनभाई० ॥

कब ना भई है रितुराज की अवाई ब्रज
कब ना जुरो है यों समैया साज बाज की।
कब ना सुख पुंज ऐसो कुंज मैं छयो है कब पू-
जन भई ना यों मनोज महराज की ॥ कब ना
जुरी है भीर ऐसी ब्रजबालन की कब ना ल-
खानी सोभा ऐसी सुसमाज की। पै सुसील
राधे तुम जैसी नाथ नाधे आज भई है कबौं
ना मनभाई ब्रजराज की ॥

बिरहिनि सुखदाई है।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

आवन सुन्यो है मनभावन को एरी भटू तब ते भई री खुसी सोभा सरसाई है। कहै रससिंधु केर त्यारी करवाई खूब सोना को जड़ाव जड़ी पलँग बिछाई है॥ एते बिच आय कृष्ण अतिही उछाह भयो खान पान राग रंग गावत बधाई है। स्याम सो मिली है बाल दंपती बिलास करे आज ते भई ये बिरहिन सुखदाई है॥

बाबू रामकृष्ण बर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी

कालिंदी को कूल हिय मूल सो लगै है ब्रज केलि के निकुंज मे उदासी आन छाई है। चन्दन कपूर चन्द चाँदनी औ चोवा चारु चिनगी लगावैं जाते पीर अधिकाई है॥ फूलन को हार उर भार सो लगै है जग-जीवन को सार भयो मार दुखदाई है। आस एक ऊधो बलबीर सो मिलै की बस जीवन की मूरि बिरहिनि सु॰॥

पं॰ बचजचौबे उपनाम रसीले कवि — काशी।

पाला सी कपति कहा परी भवजाला बीच अलख जगाव जौन तोहि उपजाई है। सेल्ही हिय धारि सिङ्गीनाद कै रसीले कहै छोरि सीस बेनी जटा जूट को बताई है॥ मारै जनि गाला शाला माला मृगछाला धारि भसम लगाओ अंग जोग या जताई है। लेहु यह पाती बाँचि करौ जूड छाती जामे लिखी सब बातैं बिर॰॥

पं॰ गनेसदत्त जी बनारस।

त्रिविध समीर तन लागै मनो तीर सम चन्द सुखदाई ताको लगत कसाई है। घनसार चन्दन औ केसर के लेपन ते दूनी उठै दाह नहीं कछू कलपाई है॥ कहत गणेश देखो ऐसे भारी आपति की नेकु न उपाय जग बिधि ने बनाई है। तिरषा ते व्याकुल को जैसे ओस पोखत है ऐसही ननद बिरहिन सखदाई है॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी बनारस।

सीस पै चढ़ावै कबौं उर ते लगावै सोच

निकट न आवै दूरि होति दुचिताई है। सोवति निसंक अंक लैकै परजंक ताहि ध्यान सो बुलावै उन्हैं याही चतुराई है॥ दिन राति कैसी मर-याद तैं बितीत होवै गुरुजन मध्य हरिशंकर बडाई है। जोई चीज भूलै वाकि पिय की बिदेस जात सोई सब भाँति बिरहिनि०॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी।

जा दिन ते मथुरा सिधारे ब्रज छोडि स्याम ता दिन ते नैन नीर सरित बहाई है। आहि करि उठत कराहि कल परै नाहिँ रोम रोम कठिन कुपीर सरसाई है॥ कासों कहौं जाइ कोऊ ऐसो ना सुजान दीसै देत उपलंभ ऊधो जतन बताई है। कूबरी सँयोगिनी को सुखद बनायो ईस औषध रच्यौ ना बिर०॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

ऊधो कहा योग को बियोगिन पै लाये जानि याकी नहीं छीनी इहां नेकहू रसाई है। पाती या लिखी है भये चेरी के संघाती गती याती

कहौ सांची लिखि कूबरी पठाई है। बेनी द्विज बिन बनमाली नही खाली रोम भेज्यो तुम्है नाहक करावन हँसाई है ॥ साँवरी सबीह है ममाई जौन हीय कौन वाके बिन हम बिरहिन सुखदाई है ?

प्रातही तें महल मुड़ेर पै पुकार्यौ आन मोहि सुनि प्यारी या प्रतीत उर आई है। कूक कूक कैलिया करेजा कियो रेजा जौन चाहत हठीलो ताहि हटकि हटाई है। आये लाल हाली तबै आली कह्यौ बेनी द्विज सुनत तिया के लाली मुख चढ़ि आई है। याही जकलाई देहु बागा पहिराई याहि भयो बोल कागा बिरहिन० ॥

ब्रजचन्द जो बल्लभीय—काशी।

छाडि तुव संग नाथ भामा के यहाँ मैं रह्यौं ताकों फल चौदह बरष दुचिताई है। फेरि निज आरत प्रपन्नता धरम त्यागि त्यागत कृपाल तुमै अति अधमाई है ॥ पाहि पाहि पालिये बिरद बरज़ोर नाथ कैसैं बिते औध औधि अति कठि-

नाई है। दीजिये दयाल पद पीठि को अभंग संग बिनै यह मेरी बिरहिन० ॥

राम बन गौन देखि व्याकुल मुनीस होइ धर्म नय राज नय उचित बताई है। राममातु गूढ गति जानिये न कौन काज मोहि नृप हो-यबे की आयसु सुनाई है ॥ आरत अचेत अति बोलति चिपाद भूति मानहु करति मेरी अमिति बड़ाई है। जाइहौं प्रभात प्रभु पास सजि राज साज मंत्र यह मेरी बिरहिन० ॥

पण्डित अम्बाशङ्कर जी – काशी ।

आई दूरदेस ते पठाई प्राणप्रीतम की उ-नहीं के भेष लिखे अखरा सुलाई है। नन्दद्वार जसुदा समीप भीर गोपिन मे राजत सुनै के काज कीरति को जाई है ॥ सकार सुकबि तहाँ बाँचि २ बाँचक ने बिबिध बिसास को सिखा-मनी सिखाई है। सुनि पुलकाई देहँ छाती ह-रषाई अति पाती कहा पाई बिरहिनि० ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी ।

पाय निज घातन सनातन को बैर सोधि क्रोध कै कलानिध को लीलगो कसाई है। कोऊ अ-सनान ध्यान कोऊ करै दान पुन्य माधव को नाम कोऊ लेत हरखाई है॥ राका की जो र-जनी सो ह्वै गई कुहू की रैन चैन ना चकोरनि उलूक मनभाई है। कीन सबै ग्रास अति दीन भौ सुधाकर सो लोक दुखदाई बिरहीन० ॥

बाबू छेदीलाल कवि काशी ।

ललित तड़ागन में प्रफुलित कंज भये गूं-जत मलिन्द मतवारे मधु पाई है। चोर औ च-कोर मोर देखत मलीन भये कुलटा अवश्य अंग अंग दुखदाई है॥ औचक उचकि चौंकि चकि चकि पच्छी उठे चक्रवाक मिलै चाह अधिक ब-ढाई है। चन्द मन्द जामिनी वितीत भई छेदी त्योंहो हंस अंस देखि कोक बिरहिन० ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

सब सुख खान भौन सकल सुपास जहाँ

भोजन बसन सेज बिमल तुराई है। ननद जि-
ठानी सासु देवर ससुर त्योंही मैके मन राखै
सदा माय बाप भाई है ॥ एक एक काज हेत
रहत अनेक ठाढ़े सेवक सुसील हैं भली तें भली
दाई है। सब दुखदाई होत एक प्रानप्यारे विना
जग मे न कोऊ बिरहिन० ॥

चन्दन अगर ना उसीर घनसार भावै नाहिँ
नेकु भावै चाँद चाँदनी सुहाई है। जेते उप-
चार अहैं सीतल सुसील तेते करत सरीर औरो
ताप अधिकाई है ॥ मन बहलाइबे को बाग स
रिता नट जो जाउँ हौं लवाइ होत दूनी दुख-
दाई है। पचि पचि हारी मैं बिचारी एक प्यारे
बिन जगत न और बिरहिन० ॥

लाला हनुमानप्रसाद झवईटोला लखनऊ।

काग की उड़न औ धरज सगुनौती नित
रद छद अधर अदरस लखाई है। चित गुन
कथन विचित्र चित्र पीतम ननदि मुख चरित
सुनत चित लाई है॥ ॥ दूत पाती सपन प्रतच्छ

जाने हनूमान लगन की लाग प्यास ओसन बु-
झाई है। निस माहिँ चातिक दिवस आस
आवन की ऐसो उपचार बिरहिन० ॥

ला० मारकण्डेलाल उपनाम चिरजीव कवि कोपागंज ।

सोवत मैं जागत मैं उठत मैं बैठत मैं च-
लत मैं ठाढे मैं ठिकाने रहै आई है। कौतुक
मैं काज मैं अकेले मैं समाज मैं सखीन हू के
साज रहै मन मैं समाई है ॥ कवि चिरजीव
हमैं सोच ना सकोच कछू छाडत न हमैं जो
छिनौहू बिसराई है। होत नहि न्यारो प्यारो
एक पल जीते याते साँवरो हमारो बिर० ॥

गरो दन्त गरे मैं आ भुज मैं भुजान देत
उर देत उर मैं कहा लौं कहू गाई है। बोलैं
हँसै हियो खोलि हौसनि पुजावै सबै छोड़ै ना
छिनौहू कला केलि को अघाई है ॥ कवि चिर-
जीव एक सपन समागम मैं बनोई रहै है नहि
बात उकताई है। सोये मैं मिलत नहि जागे
मैं दिखात कहू याते मेरो छैल बिरहिन० ॥

पं० गणपतप्रसाद गंगापुत्र (उपनाम श्रीवर) अयोध्या।

एरी बीर निरखु दिसान दसहू ते नभ घेरे घने घहरात मेघ छवि छाई है। द्रुमतल कुंज कुंज पुंज पुंज गुंज गुंज चचरीक लुंज पुंज होत मड़राई है॥ झनकत झिल्ली सोर दादुर मयूर करै श्रीवर प्रसंसा मंजु वेग अधिकाई है। पावस बिचारि मदटुखित अनेक बाल आये साज साजि बिरहिन सु०॥

बाबू शिवपालसिंहजी—भिनगा।

पाती लिखवाई कुबिजा की सिखवाई ब्रज नेह निरसाई कर रावरे पठाई है। भसम रमाइबे की भूषण दुराइबे की जटा बनवाइबे की रसम बताई है॥ छानि बीनि सिवपाल लाख तदबीरन सो सुख की युगुति याही योग मे दिखाई है। ऊधो जू समुझि नहि परै पर बात कैसे प्यारे को बियोग बिर०॥

श्री चन्द्रकला बाई—बूंदी।

कारी कूर कोइलि बिदारैं उर बोलि बोलि

सीतल समीरन मैं तोर समताई है। राकापति किरन करोतन सैं चीरि चीरि अंगन बिदारै करि मन कठिनाई है ॥ चन्दकला कामदेव करिकै अनेक कला जीवन कौं जारत अनन्त दुखदाई है। बायस भुजग राहु शंकर दया के धाम येही चार आली बिरहिन० ॥

मिश्र सेवकश्याम कवि मजगज रीवा।

खान पान भूषन बसन सब फीको लगै कौनो भाँति मन ना गहत थिरताई है। जिय अकुलाय कहूं रहि नहि जाय हाय नैन रहै रैन दिन नीर अधिकाई है ॥ मिश्र स्याम सेवक बुझाये ते बढ़ति व्यथा छिन छिन छीन गात दौसै पियराई है। दूजी और कौनऊ उपाय ना लखाई एक चरचा पिया की बिर० ॥

दासापुर निवासी पं० बलदेव कवि।

सीतल सुगन्ध मन्द त्रिविध समीर मानौ लपटि हलाहल तरंगन सों आई है। बेधत कुठार लौ बदन कुल कोकिल की कानन कलित

कल बोलनि सुहाई है। द्विज बलदेव बर्जुलित बौर वृक्ष वर विपुल विलोकतै अतन ताप ताई है॥ होत तौ वियोग मैं सकल विपरीत एक औधिहौ विचारी बिरहिन० ॥

गंधौली निवासी बाबू जुगुलकिशोरजी उपनाम ब्रजराज।

आँखिन अनन्द अँसुवान को प्रवाह बढ्यौ हिय पै हरष थरकनि अधिकाई है। ओठन उछाह फरकनि त्यौं बढी है कढि तन ते विरह आँच बाहर सिधाई है॥ एहो ब्रजराज तुम मन मे न आनौ और निसि को बिछोह नहि नेकौ दुखदाई है॥ आवनि तिहारी ओरहीं को लखि बारी लाख रैनि रसहारी बिरहिन० ॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा।

बैठी बाल व्याकुल विचार मे बिलोकि बाट बार बार बूझै ब्रजराज की खवाई है। पावस प्रवेस पाय परम प्रमोद प्रीत प्यारी परतीत प्रेम पत्रिका पठाई है॥ राधिकाप्रसाद वीर बासर बिताये बहु बिरह बिहाल बार बार बरसाई है।

सावन मे आवन को आस मनभावन की औध
औलम्ब एक बिरहिन० ॥

सिहोर (काठियावाड) निवासी कबिगोविन्द गीलाभाई।

पावस मे पिय नाम पपिहा पुकारि पीरै
शरद मे चॉदनी बनत दुखदाई है। हेमन्त में
हिय व्यापी बिरह बिशेष वारै सिसिर में सीत
करै काय क्लष्टताई है ॥ बसन्त मे बन प्रिया बे-
धत है बकि बकि ग्रीषम मे गरमी उपावे अ
धिकाई है। गोबिँद सुकवि ऐसे बारह मास
माहि कदा एको ऋतु नाहि बिरहिन० ॥

चौतीसवां अधिवेशन।

मिती अषाढ बदी १ सम्बत् १९५२

मेघ महराज की।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु।

बाजत है बाजा घन नाच रही बिजुरी हू
कड़क सो डंका फौज पावस समाज की। कहै
रससिन्धु स्याम बादर मतंग आये कोयल जो

गान करै कोकिला हू नाज की ॥ बरसे है बूँदैं मानो पुष्पन की वृष्टि होत मोरवा नकीब बोलै सोभा खूब आज की । आयो री असाढ देस देस मे दुहाई फिरी आवत सवारी चली मेघ महा-राज की ॥

बा० माधोदास जी - काशी ।

आयो री असाढ बाढ बिरह की होन लागी जागी है जमात जोत जोगन समाज की । कुहूँ कुहू कोकिला कलापी मोर सोर करै रोर करैं दादुर दोहाई दै दै राज की ॥ माधव जू भीनी बूंद झनी भी झारारी लगैं कारी कारी घटा ये डरारी उठैं आज की । दौर दौर दागत है च-पला चमक चारु तड् तड़ान ताड़ती सु मेघ महराज की ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

आई औधि अधिक अँदेस उपजाई मन भई बीर काहे ना अवाई ब्रजराज की । छाई नभ घुमड़ि घनेरी घोर कारी घटा ल्याई झरि

भारी बारि बूंदन दराज की॥ बेनी द्विज चपला चमकै लगी चारौ ओर लागत हिये मे चोट भेकिन अवाज की। ऊधम मचायो है अनंग आय मेरे अंग पाय कै सहाई सैन मेघ महाराज की॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी – बनारस।

छन छन साँझही तें छनदा छहरि छाजै घहरि घटाहू पैज करै उखमाज की। दादुर दपेटो दै दिमाक देखरावैं सोर पपिहा मचावै लर तारै न अवाज की॥ गुरुजन बीच मेरी बीतै हरिशंकर जू बुधि अकुलाति कहौं कैसे बात लाज की। हिय धड़कावत है मैन सरसावत है सुरति करावत है मेघ महा०॥

प० गनेसदत्त जी बनारस।

कारे कारे बादर से सोहत है रीछ सब कपिन के लूम इन्द्रधनु सुभ साज की। बानन की वृष्टि मघाबुन्द के समान राजै किलकिला शब्द धुनि मेघ के अवाज की॥ कहत गनेस नहीं सूझत है वारपार रुधिर की नदी चली

तोरि सीवा लाज की । व्याकुल ह्वै भाषत हैं नर अरु नारी हाय राम की चढ़ाई की है मे०॥

प० वचजचौवे उपनाम रसीले कवि — काशी।

हहरि हिये दै हाथ हाय कै विवस गिरीं गोपिका बिसारि सुधि सबै गृहकाज की। कहत रसीले कछु मुख तें न आवै बात अति बिलखाति भई कैसी गति आज की॥ जन्त्र मन्त्र टोटका उपाय ना लगत एकौ हारे बहु वैद दै दै पुड़िया इलाज की। बिरह बियोग रोग बाढ़त सवाई जात निरखि चढ़ाई नभ मेघ० ॥

काशीनिवासी पं० केदारनाथजी।

होन लागे मोरन कै सोर चहुँओर जोर दादुर दिमाग वारे दीरघ अवाज की। जुगनू जमातन की जाति दरसान लागी चमकान होन लागी दामिनी दराज की॥ झिल्ली झनकार कीन्हों कठिन केदारनाथ पीय बिनु कैसे कै बितैहौं निसि आज की। छाई छिति मण्डल निहार नभ मण्डल लौं प्रबल प्रचण्ड घटा मे०॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी।

ग्रीषम के आतप प्रचण्ड जो निवारे कीने सीतल महीतल कों लीनी सुधि नाज की। जीव जन्तु पंछी पशु नभ थल वासिन कों दीने सुख भूरि जो प्रबन्ध कै सुराज की॥ सब नर नारिन जो दीने मोद कीनी वृद्ध सोभा सैल बाग बन सरित समाज की। सब कछु कीने पै न लाये जो सुसील प्यारे कौन सी बड़ाई वीर मेघ महराज की॥

भूमि हरियाली भई छई है निराली सोभा दूरि गई चिन्ता जग जीवन समाज की। रहे छाड़ि बैठे सब ग्रीषम के ताप जिन होय कै प्रसन्न तिन लीनी सुधि काज की॥ तड़पि रहे जे बिना पानी भये पानी पानी मैं हौ बिनु पानी भई दसा कोढ़ खाज की। घर ब्रजराज नाहिँ लाज पै चढ़ाई तापैं संग रतिराज लीने मेघ महराज की॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलालजी शर्म्मा ।

नगिन कृपान दमकत द्युति दामिनी के फहरैं निसान व्योम बकन समाज की । कहै गिरधारीलाल घोर घहरान तैसे डङ्का जनु बाज रहे प्रबल अवाज की ॥ महा अन्धकार कछु सूझै ना वारपार याहि कहि आवत लखत साज आज की । ग्रीषम दुखदाई के दखल उठाइबे को भयो है चढ़ाई मनो मेघ म० ॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा ।

प्यारे अरबिन्द में मलिन्द रुचि छाकी रहै नीरहू मैं लागी लाग मीनहू समाज की । चन्द्र को चकोर जिमि दीप मे पतग रंगै गोपिन को भावै छवि प्यारी ब्रजराज की ॥ राधिकाप्रसाद त्यौं कुरंग मन राग बसै चक्रवाक चाहै रबि कैरो द्विजराज की । चात्रिक के आस एक स्वातिही के बुन्दन की बरही कै प्रीत सदा मेघ० ॥

पावस प्रवेस पूर परम प्रचण्ड धार बरष अखण्ड व्योम मण्डल दराज की । धूरधार धूमरे

रसि धुरवा धधात धाय दसह्न दिमान मे दरेर दल साज की ॥ राधिकाप्रसाद अति गजैं करैं जोर सोर कोकिला कुहूक मोर कूक सुन भाज की। उज्वल अटा मे छटा बिज्जुल पटासी करै कटा करै कारी घटा मेघ महराज की ॥

गंधौलो निवासी बाबू जुगुलकिशोरजी उपनाम ब्रजराज।

दिसि बिदिसान मढ़ि उमडि रही है घनी गाजनिन होय यह पटह अवाज की। बूंद हैं न बान तरिता न तरबारि एरी बिरही हतन हेत अतन इलाज की ॥ बिन ब्रजराज अरी पावस समाज पेखि भूली सुखसाज भई रीति दुख-काज की। इन्द्रधनु नाही धनु अबला विजै को यह बादर न होहिँ सैन मेघ महराज की ॥

लाला हनुमानप्रसाद भावईटोला लखनऊ।

हरे हरे बासन को बँगलो छवाओ ऊँचो चारो ओर खिरकी रखाओ सुखसाज की। कंचन के खंभन मे पचरंग पाट डारो गायन बुलाओ जो न मधुर समाज की ॥ हनूमान लाल

संग झूलै गल बाहीं दैकै तैंही एक चातुर सहेली सब काज की । अम्बन कदम्बन मयूरन मैं मैन मई प्रभुता प्रसिद्ध देखो मेघ मह० ॥

बाबू शिवपालसिंहजी भिनगा ।

लायो धनु माँगि बिरहीन के हतन काज करि कै खुसामत बहुत सुरराज की । भनि सिवपाल कभूं छोडत न दामिनी को परद्रोह खोयो मग पथिक समाज की ॥ लोक लोक जानत है जायो नीच धूमवश संग भलो पाय निज इज्जति दराज की । ऐसे निर्दयी परद्रोही नीच बंशज को पदवी दई है कौन ? मेघ म० ॥

प० रामअधीन जी प्रमोदवन अयोध्या ।

ऐहै मूढ पावस जगैहै मनमथ आगि गैहै रामधीन पिक राग गत गाज की । कूकिहैं ये कोकिल न चूकिहैं जगत प्राण फूकिहैं कनूकैं मानो लूकै अहिराज की ॥ कैधौं तडितान की कृपान सी कढ़ैगी आन भानि डट्टैं सान बनितान के समाज की । बावरे बियोगी तब धीरज धरैंगे कैसे फिरि है दोहाई जब मेघ० ॥

रामपुर निवासी द्विज बलदेव कवि ।

बून्दी प्रेम स्वातिका पपीहरा रटन लागे उठे रोम अंकुर समीर साँस साज की । छूटी लटैं स्यामली घटा त्यौं दन्त दामिनी ह्वै चखन अपाखारि धाराधर काज की ॥ धारैं धाय गिरि को कहाँ हैं ब्रजराज आज द्विज बलदेव जू बचावै गति गाज की । ह्वै गई चढाई फेरि बीर ब्रजमण्डल पै नैन मिसि राधे मनो मेघ० ॥

श्री चन्द्रकला बाई—बूंदी ।

धुरवा सवार लागे दौरन दरेग देत मुरवा बिसाल बोल तोप अति गाज की । चन्द्रकला चपला चमंकै असि म्यान बिना बगुलाकतार धूज सकल समाज की ॥ चातक नकीब देत सासन सिपाहिन कौं मानी अभिमानिन के कटन दराज की । मान छाड़ि मानिनी मिलै न कस मोहन सौं छाई फौज चारौओर मेघ० ॥

श्री ठाः महेश्वरबक्ससिंह जी तालुकेदार—रामपुर मथुरा ।

नाचत मयूरगण मडुकादि गावैं यश चा-

तकी प्रमोदि बोलैं बाणी सुखमाज की । हरित लखात भूमि होत मोद देखि देखि चौंकत बि योगिनी सुनत धूनि गाज की ॥ झिल्ली झननात भननात केते कीटगण मोदित अनन्त जीव बरषा समाज की । नाचत न गावत महेश्वर बिचार कीन्ह करत बड़ाई सब मेघ० ॥

बाबू जगन्नाथप्रसाद असिस्टेण्ट सेटलमेण्ट ।

ठौर ठौर मल्लिकान गुंजरै मलिन्द वृन्द सौरभित संचरै समीर सुखसाज की । कलित कदम्बन कलापैं केलि कौलिया अलापैं पुंज पपिहा बिसारे सुधि आज की ॥ दादुर चहूंधा धुनि माचैं बिज्जुरापैं छबि मुदित मुरैली नाचैं सुखमा समाज की । फैलि रही मैन जगनाथ की दोहाई सजो आजु की अवाई भई मेघ० ॥

श्रीप्रभाकर जी कवि दतिया ।

केकी कूक करषन पढ़त चढत चाह चातक नकीब सोब बिहँग समाज की । बाधत विनोद चढे आवत बढेई चलो सुभट सचोप पौन सुहय

दराज की ॥ सोभा गिर द्विरद निसान बक भौंर भौर पदचर पुंज बिज्जु विजय सुसाज की। लखु समसेरे लिये जेर करि ग्रीषम को सोहत सवारी सखि मेघ महराज की ॥

सँदेसऊ न पतिया।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाल जी महाराज उपनाम रससिंधु।

देख रही बाट बैठ झांकत झरोखा बाल आवैंगे मुरारी कब पूछ रही बतियां। त्योंही रससिन्धु कृष्ण आय गये एतै बीच मिलिबे को दौर गई लगी जाय छतियां॥ आप बिन प्यारे मोहि नींदहू न लागी नेक याद जब आवै हरी कैसे कटे रतियां। आज तुम मिले स्याम ऐसे क्यों निठुर भए कोई सुन भेजे जो सँदेसऊ न पतिया ॥

पं० गणेशदत्त जी बनारस।

एते दिन जीये रामनाम को कपाट करि

रामही के ध्यान से जुड़ाती मेरी छतिया। इसी आस खान, पान त्यागे नाहिँ छाड़ै तन पै न सही जाय दुष्ट बात दिन रतिया॥ भाषत गनेस त्रिजटा से कहै सीय ऐसे बार बार बावरी सरीखे येही बतिया। कैसे राखौं प्रान काको करौं तन त्रान नहीं आये भगवान के सँदेसऊ न प०॥

प० केदारनाथ जी बनारस।

नन्द घर नीकी करनीहू को बिसारि दीनी नीर हीन मीन सी भई है जासु गतिया। ब्रज-बनितान कुलकान मैं न कान कीनी मान लीनी मोहन की मीठ मीठ बतिया॥ भमि मैं केदार विष घोरत न देर लायो कूबरी के कूबर सौं दाबि रही मतिया। जानै कहा नेह को निबाह चरवाह ऊधो भेज्यो कबौं भूलि कै सँदेसऊ०॥

बाबू हरिशंकरप्रसाद जी बनारस।

बावरी सी घूमति हौ दिवस अजिर माहिँ रजनी बइठि वीतै भई मेरी गतिया। दामिनी दमकि जब मेघ उर लपटाति वा समै ललकिकै

लगावो केहि छतिया ॥ ह्यां तौ एक छन बिस-
रावत न मोहि हूते पूछो हरिशंकर सखीन यह
बतिया ॥ जातहीं बिदेस को सिखाई ऐसी नि-
ठुराई भेजत हैं पीतम सँदेसऊ न पतिया ॥

पं० बचऊ चौबे उपनाम रसीले कवि बनारस।

आय कै अकूर कूर टोऊ सुखभूरि ऊधो लै
गयो चढाय रथ कै कै छल घतिया। कहत र-
सीले सुधि सालत सो आठौ घरी धड़कि २
उठै छोहभरी छतिया ॥ गाय गोप सिगरे बेहाल
ब्रजमण्डल में उन्हैं बिनु मेरी भई बावरी सी
मतिया। जब से सिधारे मधुबन प्रानप्यारे हाय
साँची साँच पाई हौं सँदेसऊ न० ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

कीधौं मनमोहन हमारो मोह त्यागि दीन्हों
कीधौं काहू सौतिया दई है फेरि मतिया।
कीधौं भए योगी जाय बन में समाधि लाई
कीधौं खाय अमल बिसारी निज गतिया ॥
बीती औधि अब लौं न आये बीर बेनी द्विज

सारी द्रोपदी सी बढी सावन की रतिया। काम न विचारी है बिहारी घरी काहे हेत चेत कै पठाई है सँदेसहू न पतिया ॥

आई रितु पावस न आये प्रानप्यारे हाय कैसे कै कटैगी ए अँधेरी घोर रतिया। पीव पीव पपिहा पुकार करि मारै जीव कूकि कूकि कौ-लिया टूटूक करै छतिया॥ दौरि दौरि दामिनी दिसान मे दमंकै लगी वैनी द्विज बदरा बदी की करै घतिया। कैसे धरौं धीर बीर भई हौं अधीर मै तो पापी पीव भेजत सँदेसहू० ॥

श्री प्रभाकर जी कवि दतिया।

करिये कहा लौं लाल रावरी बडाई स्याम साच की सचाईहू सचाई देखि नतिया । का-रत भरत साख बासर बिरंच बदी अवधि सु आपही पै भूर भली भतिया ॥ धन धन धन्य अनुराग परि पायन कौ पूछौ प्रानप्यारे कहो छोड छल बतिया। कारण कवन मनभावन द-वन को न भेजो नहीं लेसहू सँदेसहू०॥

प० रामअधीन जी अयोध्या ।

पीतम बिदेस को पयान कियो जा दिन ते ता दिन ते बीतत कलप सम रतिया। हर गये आलस भभर गये भूख प्यास भरि गये स्वास २ सोक ओक छतिया ॥ पातकी पपीहा तापै जीहा न थकत नेक रामधीन पी कर पुकार लावै कतिया । डूब पै मरौंगी बिरहानल ज- रौंगी येरी धीरज धरौगी क्यौं संदेसऊ० ॥

बाबू शिवपालसिंह जी भिनगा ।

जे दृग निरन्तर पियत रूप पानिप जू तल- फत मीन सम तेई दिन रतिया। जे भुज भरत भले अंक मैं निसंक नित भनि सिवपाल ते भु- लाई सब गतिया ॥ जे मन बिसारत न पीत- पट छबि छन तिनकी कहत अब नाहिँ बनै बतिया। काहे न सिथिल होहि अग अग ब्रज राज पायो एक आज लौं सँदेसऊ न० ॥

गंधौली निवासी बाबू युगलकिशोर जी उपनाम ब्रजराज ।

जात ना दिखात कोऊ पथिक पियारे पास

एरी औध आस की लगाय राखी घतिया ।
भीषम सरूप धरि ग्रीषम सतावै अलि मदन
कदन कै जराये देत छतिया ॥ बिन ब्रजराज
न परति कल एक छिन दिन कटि जाय तौ
कटै न फेरि रतिया । आवन सदन हिय लावन
की कौन कहै भावन सों अब तौ सँदेसऊ० ॥

लाला हनुमानप्रसाद झवाईटोला लखनऊ।

पलन परेते चल पलन परेते कल पलन
परेते बन गोने बिधि गतिया। जहाँ जहाँ जात
होइ मग जलजात होइ जात औ अजात ते स-
हाइ दिनो रतिया ॥ राम सिया लखन लखन
माहिँ सुकमार हनूमान कौसिला कहत रोइ
बतिया । हा पति सपतिया बिपतिया बिषम
दई अब लगि तिनको सदेसहू० ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलाल जी शर्म्मा।

घेरि घेरि घोर घन घूमि घहरान लागे त-
ड़ित चमङ्क होत अँधियारी रतिया । बार २
झुकत झकोरन प्रभंजन के कूकत कलापी कोक

केकिन कुजतिया ॥ कहै गिरधारीलाल वेधे पंच बान बान एरी बीर कैसे के धीर धरूं छतिया। आपहू न आये पिय अवधि बिताये हाय एकऊ पठाये हैं संदेसऊ० ॥

श्री ठा० राधिकाप्रसाद साहब जागीरदार— पहरा।

एरे मीत पौन गौन तेरो दसहू दिसान तो समान कौन नेक कान मान बतिया। सुन्दर सुजान स्याम करुणानिधान लाल ल्याव मनमोहन गुपाल की सुरतिया ॥ राधिकाप्रसाद रितुराज की रपेटन ते ग्रीषम लपेटन ते काटे दिन रतिया। पावस प्रवेस सुध एकहू पठाई नाहिँ प्यारे परदेस ते संदेसऊ० ॥

पटनानिवासी बाबू पन्ननलाल जी।

संग निज पीतम के देखि सब बालन कों करत कलोल बीर फाटी जाति छतिया। कलप समान एक पलक मुसोल बीतै याते जानि लेहु ज्यों बितैहै दिन रतिया ॥ हाय फूटे भाग को बखानौं दसा कैसे आली कराठ रुकि जावै कढ़ै

क्योंहू नाहिँ बतिया । आवन को कौन कहै भावन हमारे अजौं धावन पठाये ना सँदेसऊ०॥

बालम बिदेस मेरे आइगो असाढ गाढ़ क्योंहू ना घरात धीर फाटी जाति छतिया । काहि कहा कहौं कौन भाँति समुझाय बीर दुखिया बियोगिनी को बूझै कौन बतिया ॥ जीव को हमारे एक जानत सुसील राम लागै दिन भूख नाहिँ आवै नीद रतिया । कौन से कुदेस कौन हालत पियारे हाय काहे री पठाये ना सँदेसऊ न पतिया ॥

दासापुरनिवासी प० बलदेवप्रसादजी कवि ।

घोर घहरान लागे घेरि कै चहूँघा घन मानौ तोपखानन पै डारी बीर बतिया । द्विज बलदेव बाण बुन्दन सनाके सुनि नाके नाक निरखि छनाके होत छतिया ॥ चलन लगी है चंचला के मिस चायनन काढि कै कठोर काम कातिल की कतिया । रतिया ये पावस की गतिया कत कैसी पायौ अजौं उनको संदेसऊ० ॥

श्रीचन्द्रकला बाई – बूँदी ।

पतिया लिखन बैठी बाला निज बालम को तबहीं बियोग बस आई भरि छतिया । थहरन लाग्यो तनु छहरन लागे कर गद्गद बानी ह्वै कढ़ी न मुख बतिया ॥ चन्दकला नैनन तैं नीर को प्रवाह बाढ्यो लिखि न सकी सो दई बिना बर्ण ततिया । बिरह बिकल बाल जानि कै गुपाललाल उर सें लगाय ली सँदेसऊ० ॥

श्री ठा० महेश्वरबकससिंह तालुकेदार रामपुर—मथुरा ।

मधुपुर बास कीन्ह त्यागि सुधि मोर हरि बरष समान दिन युग बीतै रतिया । बिकल महान मन सेज ना परत नींद उठत बियोग हूक दरकत छतिया ॥ गुरुजन सीख देत सुनत बढत दुःख सुन्दर सोहावनी न भावै मोहि बतिया । कौन भाँति धारौं धीर सुनिये महेश्वर जू भेजत हैं स्याम जू सँदेसऊ न० ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोबिन्दगीलाभाई ।

देख आली उमड़ि घुमड़ि घन घोर छाये

मोको डर लागत अँध्यारी देखि रतिया । सीख देत गुरुजन सिगरेई मिलि वाल गोविंद की नीकी नाहिँ लागत है वतिया ॥ कासौं कहौं दुख को सुनैया विनु प्रीतम को सूनी लखि सेज हाय दरकत है छतिया । ऐसे भये निठुर निपीर श्याम दुखदाई आप नहि आवत संदेसऊ० ॥

भौंरन की मति भूलि रही है ।

पैंतीसवा अधिवेशन ।

मिती अषाढ सुदी १ सम्बत् १९५२

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज

उपनाम रससिंधु ।

कंजन से कुच रूप सरोवर नैन कुमोदिनी स्वेत लही है । वेला चमेली जुही अरु कुन्दहु दन्तन की अवली जु सही है ॥ त्यों रससिन्धु जू नाभि ज्यो मोसरी केतकी रग सो अंग कही है। देख गुलाब के फूल से गाल को भौरन की मति भूलि रही है ॥

भानुजा के तट बैठिहै आइ के गान करै सखि प्रेम गही है। त्यों रससिंधु जू रूप है कृष्ण सो देखो मलिन्द को बात सही है॥ एक अनेक के पास वो आवत ओढ़े पितम्बर भेस वही है। गोपी कहै सुन एरी सखी यह भौरन को० ॥

बाबू रामकृष्ण बर्म्मा संपादक भारतजीवन काशी।

बीर लखै बलबीर के संग में राधिका कुंजन भूल रही है। चम्पक सी सखियान के मध्य में कुन्दकली सम फूल रही है॥ चन्द विचारि विचारै चकोरन को मतिहू अनुकूल रही है। राधिका-आनन-कंज बिलोकि सु भौंरन की मति भूल रही है॥

बाबू हरिशंकरप्रसादजी—बनारस।

ताल मे बाल अन्हात समै अरबिन्द सी ओज ते फूलि रही है। अंग की दीपति तैं हरिशंकर केसरि नीर मो घूलि रही है॥ मौज मजेज मलिन्द जुरे जिनके रस चाह अतूलि रही है। कज को त्यागि कपोल लसे झूमि भौरन॥०

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

लावत मैन सुगन्ध लखी दसा सौरभ अंगन तूलि रही है । मालती मौलसिरी जुही केवडा और चमेली सो फूलि रही है ॥ बेनी भनै मृग नैनी की पीठ पै बेनी फनी सम झूलि रही है । ठौरन ठौरन भौंरत हैं भ्रम भौरन० ॥

काशीनिवासी प० सिद्ध कवि ।

माया की जानकी जीवन राम रमा नहि ताहि सों तूलि रही है । सिद्ध कहैं सुचि प्रेम हिँडोल पै दोउन की गति झूलि रही है ॥ चपक बर्न सुबास सुपंकज रूप के गर्ब में फूलि रही है । औरन की तौ कहा कहिये जहाँ भौरन० ॥

ब्रजचन्द जी बल्लभीय—काशी ।

राघव को मुख देखि कै चन्द सदा दिन मैं मलिनाई गही है । बानी सुधा सों सनी सुनि कै पिक स्याम ह्वै कूकनि बानि लही है । भौंह बँकाई बिलोकतही तरवारि हू बक्रता सों उ-मही है । अजन रंजित नैननि को लखि भौं-रन की मति भूलि रही है ॥

घन आनँद स्याम सरीर लखे तृषा चातक की नहीं जाति कही है। नदि नाचत मत्त मयूरन के गन दण्डक मैं छवि यों उमही है॥ प्रभु रामहि काम बिचारि हिये मृग-मालिका हू टक लाइ चही है। पदपंकज की छवि देखतही मुनि-भौरन की०॥

प० बचऊचौबे उपनाम रसीले कबि– काशी।

गावत मंजु मलार मनोहर राधिका भूलन भूलि रही है। कंचन कंजकली सी सखीन मे मानहु केतकी फूलि रही है॥ हे घनस्याम रसीले लखो चलि मो हिय मे छवि हूलि रही है। पौन प्रचण्ड सुगन्ध झकोर सों भौंरन०॥

बा० माधोदास जी काशी।

भानुसुता वृषभानुसुता सब गोपसुता सम तूल रही है। धाय धँसी जमुनाजल माधव केलि करैं सब कूल रही है॥ कंज से आनन कंज से लोचन कांजकली जहँ फूल रही है। कंजमई जमुना लखि के यह भौरन की०॥

श्रीप्रभाकर कवि जी दतिया ।

लाल लखो इक कौतुक कुंज मैं कुंज अपूरब फूलि रही है । कुंजर केलि सकेहरी कूप नहीं सरिता ह्व समूल रही है ॥ लोनी लता रसराज थली सिव कोकिल आम पै भूलि रही है । बिम्बफ कीर मयङ्क सरोज पै भौरन० ॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा ।

सावन मे मनभावन के सँग भावती भूलन भूल रही है । कुंज कदम्ब की लोनी लता भुक भूम कलिन्दजा कूल रही है ॥ सोनजुही मिल राधिका चर्ण सुमालती मजुल फूल रही है । मौरन बौरन भौरन धौरन भौरन० ॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी ।

राधिका आज कलिन्दजा के तट डारि हिडोरहिँ भूलि रही है । गावति गीत सहेलिम के सँग आनँद सों अति फूलि रही है । सोंधे सुगन्ध सुगन्धित गातन चपक के उर सूलि रही रंग सुबास सुसील सँगै लखि भौंरन० ॥

है न पराग नहीं मधुरो मधु नाहिँ भली विधि फूलि रही है। काहुहिँ ना अनुकूल नहीं प्रतिकूल कली तरु भूलि रही है॥ याही समै यदि या बिधि सों लगि हूल रही उर सूल रही हैं। फूलैगी तो गति ह्वै है कहा तुम भौरन० ॥

लाला हनुमानप्रसाद जो झवाईटोला लखनऊ।

केसरि कै सरि हारि गई अरु केतकी की सम फूलि रही है। अम्बर स्वेत कुमोदरि सुन्दरि ला-लन के संग झूलि रही है॥ पीने उरोजन नैन के नेजन सौतिन के हिय हूलि रही है। मत्त परागन मैं हनुमान सु भौरन० ॥

गंधौली निवासी बाबू जुगुलकिशोरजी उपनाम ब्रजराज।

जा दिन ते लखो जोबन अंगन सौतिन के हिय सूलि रही है। जो गृह ते कढ़ि हेरै कहूँ तितही मनो चाँदनी फूल रही है॥ देखु अली ब्रजराज हू की मति काम हिँडोरन झूलि रही है। बाल बिलोकि कै मोर चकोर औ भौं० ॥

पं० रामअधीन जी अयोध्या।

प्रीतम संग रच्यो रतिरग विनोद तरंगन फूलि रही है। दीपत खासी दिपै चपला सी कला सी मनोज के तूल रही है॥ रामअधीन त्यों आनन इन्दु प्रभा तड़िताम दुकूल लही है। जावक अघ्रि मरोज बिलोकत भौंरन० ॥

ला० मारकण्डेलाल उपनाम चिरजीव कवि – कोपागंज।

कालिंदी कारी गई मानो व्याह प्रवाह से कूलनि झूलि रही है। भूमि हरी सिगरी ह्वै मनो हरे मखमल के सम तूलि रही है॥ सावन मैं चिरजीव कहै ब्रज कुंज लतातति फूलि रही है। मालती की महिमा को कहै जहाँ भौरन०॥

श्रीचन्द्रकला बाई – बूँदी।

कीरतिजा सखिया सँग लाय धसी जल मैं अति नेह-नही है। पैरत प्रेम पयोधि बढ्यौ सुसमावत अंगन माहिँ नही है॥ चन्दकला जलजानन की छवि छाय रही सु न जात कही है। आवत हैं घिरि कै चहुँ ओरन भौंरन० ॥

प० रघुवीरमिश्रजी उपनाम द्विरेफ वडनर ।

ब्रजराज लखो टुक आज सखी तट पाँव पखारति भूल रही है। घन कोमल मंजु सेवारन सें अलकें हलकें दुति फूलि रही है॥ जल में मुख की परिछाहीं परी अरु पंकज की छवि तूलि रही है। कहि आवै द्विरेफ न औरन की गति भौंरन की मति० ॥

महाराज कुमार श्री गौरीप्रसाद सिंह जो गिद्धौर।

सारद इन्दु मे कौतुक एक बिलोकत हीं हिय झूलि रही है। आरसी है बिच कीर नछत्र गहे सोइ बिम्ब पै भूलि रही है॥ ऊपर है जुग सावक पन्नगी सुन्दरता सम तूलि रही है। ता ढिग है कलिका नव कंज पै भौरन० ॥

सिहोर[काठियावाड़] निवासी कवि गोविन्द गीलाभाई ।

राधिका का लखि कानन जातहि केतक की मति मोहि रही है। बार बलाहक से निरखी मति मोरन की भ्रम धारि रही है॥ आनन चन्द समान सुपेखि चकोरि समीपन आय रही है। गोबिंद त्यों दृग कज बिलोकि के भौं०

आवत हैं मिलि मिलि ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज
उपनाम रससिंधु ।

कालिंदी कूलन पर सघन निकुंज जहाँ वृ-च्छन पै डोरी डारि डार रही हिलि हिलि । कहै रससिंधु तहाँ भूलि रहे राधा स्याम घेरि रहीं कारी घटा तामे बिज्जु चिलि चिलि ॥ गोपी जो भुलावैं गावैं प्रेमभरी पीतम सो कोऊ खड़ी पेंग देय चोटीहू उछिलि छिलि । ठकुरानी निज आज करिके सिंगार खूब भूलन को सभी सखी आवत हैं मिलि मिलि ॥

उग्यो है अखण्ड चन्द सरद की पूनम को कालिन्दीकूलन पर रेत बिछी गिलि गिलि । कहै रससिन्धु तहाँ कोकिला पपीहा खूब बो-लत है कोयल हू मोर आज किलि किलि । ज-लदी मे गोपी एक आँजलि महावर को प्यारी को सरूप देखि हँसे कृष्ण खिलि खिलि । वृन्दा-बन कुंजन मे स्याम के समीप सखी बाँसुरी की धुनि सुन आवत हैं मिलि मिलि ॥

बाबू रामकृष्ण बर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

ज्ञान ध्यान जोग जप रावरो सुजान ऊधो रागी चित माहिँ कहौ कैसे रखैं ठिलि ठिलि। यह बलबीर कौ ऽनुराग मे ही पूरि रह्यौ ध्यान करि उनको उमगि उठै खिलि खिलि॥ पीत-पट फहरान मन्द मुसकान छवि मोरपंखवारी हिय हूलि उठै हिलि हिलि। छन माँहि ऊधौ यह चंचल हमारो मन सौ सौ बार साँवरे सौं आवत है मिलि मिलि॥

बाबू हरिशंकरप्रसाद जी बनारस।

अवधि सवाई परदेस मो गँवाई पीव बिरह छुरीन तैं करेजो जात छिलि छिलि। दादुर पि-कादि रस बाहर अरुझि परे गेह माहिँ बिजुरी सतावति है पिलि पिलि॥ साँस उलटी कै चले एहो हरिशंकर जू घाव मेरे छाती के कली से रहै खिलि खिलि। अति दुखदाई मोहि बादर देखाई देत मानो भूप अन्तक सो आवत हैं०॥

पं० बचऊचौबे उपनाम रसीले कबि — काशी।

उमड़ि घुमड़ि झुकि झूमि झूमि कारी घटा बरसत घोर ब्रजमण्डल मैं पिलि पिलि। कहत रसीलि चलै पौन पुरवाई जोर मोरन के सोर तें करेजो उठै हिलि हिलि॥ मैन पीर भारी ना सहात बनवारी बिन ऊधो गयो अनो को सुनाय बातैं छिलि छिलि। तापै प्रान बचन न देत ए पपीहा पापी झुण्ड झुण्ड कुंजन ते आवत० ॥

बा० माधोदास जी - काशी।

सावन सुहावन मे भावती प्रिया के संग रंग भरी झूलती हिँडोरे माँझ हिलिहिलि। धाराधर धार करैं धरनी पै धूमधाम चौंक चपलान की हिये मे जात पिलि पिलि ॥ माधव जू मजेदार मोरन को सोर घोर जोर सों मलार तहाँ गावत हैं खिलि खिलि। झूमिझूमि लोनी लता भूमि सों परसि जात घूमिघूमि घटा घनी आवत हैं मिलि मिलि ॥

काशीनिवासी ब्रजचन्द जी बल्लभीय ।

चारोओर फूले फले बिटप बिलोकियत पंपासर सुभग सरोज रहे खिलिखिलि । सूरति सिया की तात मूरति बनाये देति लेति है मनहु मोहि मन्त्रनि तैं किलिकिलि ॥ रस उमहावै वह सान्द्र महामोदवारी सहज सुहावनि चितौनि हिये हिलि हिलि । मन्द मन्द मारुत जगावत मदन काहिँ तन की सुगन्ध तैं जो आवत हैं० ॥

अमल अनूप राममुख की मरीचि मंजु कोटिन सरद ससि ऐसी रहौ खिलि खिलि । जाहि चाहि चितवत चतुर चकोर सबै त्रिगुन त्रिताप तम लेति वह गिलि गिलि ॥ कुण्डल मकर दोऊ सुखमा अतोल भरे मुकुर कपोलनि मैं सोहैं अति हिलिहिलि । होत हैं सखिन को सिँगार सुख एरी जबै नैन मृग कानन सों आवत हैं मिलि मिलि ॥

बाबू गनेसदत्त जी चितईपुर बनारस ।

निरजन बन मे हैं येई रखवार देखो मदन

के वीर सब धावत हैं पिलि पिलि । केहू भाँति राखौ पै रहत नहि थिर तन काम बायु लागे ज्यों मृनाल परै हिलि हिलि ॥ कहत गनेस बैठे फटिक सिला पै राम बिरह को हाल कहैं भ्राता से खिलि खिलि । मन अरु नैन अहैं मेरे तन त्रान जे वै छिन छिन सिया जू से आवत हैं० ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि ।

डेरा डारि देत हैं अगाऊँ पिछवाये आनि ज्योंहीं जानि लेत जोति भई भानु झिलिमिलि । गावत बजावत मलार मेघ बाँसुरी में थेई थेई नाचत थिरकत हैं खिलि खिलि ॥ नेक मोहि नीद में निहारै तबै बेनी द्विज खोलिकै किवाड़ खात दही दूध पिलि पिलि । भैया की सौं नद को कन्हैया संग मेरे धाम गोलन के गोल ग्वाल आवत हैं मिलि मिलि ॥

आयो सखी सावन बिनाहीं मनभावन के चपला चमंक सों करेजो परे हिलिहिलि । दा-दुर पपीहा पापी परम मचावैं सोर मोरन को

सबद सुने ते उठै तिलि मिलि ॥ कहाँ जाऊँ कासि कहौं कौन सुनै बेनी द्विज ऐसो कौन हाय जो मिटावै बेग किलि किलि । झुण्डन के झुंड प्रलैकाल से विकट बङ्क बदरा बिसासी बैरी आवत हैं मिलि मिलि ॥

श्री १०८ गोस्वामी कन्हैयालालजी महाराज गोकुल ।

मंगल मगन मोद मन्दिर अनन्द नन्द बाजत मृदंग राग रग होत खिलि खिलि । झूलत हैं पलना मैं ललना ललित लखि कल ना परत देत हेला हेलि हिलि हिलि ॥ भूषण बिचित्र चित्र पटह दुकूल सिर सुन्दर सुखद चेत चाँदनी सी झिलि झिलि । मन्द मन्द मुदित मनोहर मृदुल गीत गावत हैं गोपी जन आवत हैं० ॥

श्री ठा० राधिकाप्रसाद साहब जागीरदार — पहरा ।

कालिन्दी के कूल के कदम्ब पिक केकी कीर कोकिला कलापी कल कूजत हैं किलि किलि। झिल्ली झनकार झीन झर्झरात पौन झार झूम झूम झला झारैं झापत हैं झिलि झिलि ॥ रा-

धिकाप्रसाद हाय हास औ हुलास हीय हिल मिल हिँडोर सखी झूलैं हैं खिलि खिलि। हरी हरी क्यारी मकरन्द मालती गुलाब माधुरीलता मलिन्द आवत हैं० ॥

कोपागंजनिवासी ला मारकंडेलाल उपनाम चिरजीवकवि।

रात कर दीन्ही बात बात मैं अँधेरी छाय जामैं भानु चन्द सो प्रकासै छटा झिलि मिलि। तामैं रहि रहि अति चपला चमक होत जोत अवलोकि जाकि आँख होति तिलि मिलि॥ कवि चिरजीव वैर पिछलो विचारि मानो इन्द्र को निदेस मानि आपस मैं हिलि मिलि। बोरै हेतु ब्रज को बहोरि बिनु कान्ह प्यारी बदरा बिछोही आज आवत हैं० ॥

अवाँ ह्वै रही है छत छूवत बनै न जाको तवा सो धरनि तपी आतप सो हिलि मिलि। आँच सो उसीर नीर फूल हू फुलिंगन सो ऐनै मो अँजोर जैसे भानु दीसै झिलि मिलि॥ कवि चिरजीव आज ग्रीषम दिवस बीच नेक हू कि-

वार खुलि आँख होति तिलि मिलि। लागत ब
यार गात झुलसि झुलसि जात मानो आग पौ-
ननि मैं आवत है० ॥

पं० गणपतप्रसाद गंगापुत्र (उपनाम श्रीवर) अयोध्या।

बाजी मंजु बाँसुरी सलोने नटनागर की केती
मत बानी कुलकानि काटि तिल तिल। केती
अनुरागी केती चकित भई हैं केती ठवनि त्रि-
भंग देखि ठाढ़ी हँसै खिलि खिलि॥ भनि द्विज
श्रीकर अपूरब मचो है ख्याल लै लै तान ताल
देति केती भटू हिलि हिलि। केती गृहकाजैं
लाजैं त्यागि हरि प्रेमनि सो उमगि रसीली
चली आवत हैं० ॥

पं० रामअधीन जी अयोध्या।

मदन-नरेस क्रुद्ध कदन निदेस कृत अदने
वियोगिन पै धाइ धाइ पिलि पिलि। बारिद
प्रचण्ड बरिवण्ड भुज दण्ड ठोंकि मण्डि तन
मोद छण्डि बान बुन्द झिलि झिलि॥ गान को-
किलान को कृपान कर आन बर रामधीन डा-

रत करेजे कर तिलि तिलि । सजि कै समाज आज लाजनि घटनि काज गाज से मयूर भूर आवत हैं मिलि मिलि ॥

गँधौली निवासी बाबू जुगुलकिशोर जी उपनाम ब्रजराज।

अतिही कुमोदिनी सहमि सकुचानी रहै मालती मैं रहत सदाही फूल खिलि खिलि । इतही उदास भाव दास भाव उत मन इत सों परात उतही को जात हिलि हिलि ॥ याही तै कहत सबै नायक तिहारो नाम एहो ब्रजराज प्रीति मानत हौ पिलि पिलि । झूठी केहि बातन बनावत हैं आप ब्रज कौन बनिता न जाहि आवत हैं मिलि मिलि ॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी।

नाचि बन मोर रहे दादुर कै सोर रहे पवन झकोर रहे वृक्ष रहे हिलि हिलि । दामिनि दमकि रही जुगनू जमकि रही फूलन की कलियां गमकि रही खिलि खिलि ॥ करखा अलाप कहूं कोकिला कलाप कहूं बरखा बहार नीर मेघ

भरैं पिलि पिलि। ऐसही समै तो पिय चहियै बिदेस जान घर को बिदेसी जबै आवत० ॥

कुण्डलिया।

मिलि २ वाको रूप गुन कहि २ मोहि फँसाय।
अलो गई सब बिलग ह्वै मम सर्वस्व नसाय ॥
मम सर्वस्व नसाय आय अब यों समुझावैं।
आपहि आग लगाय आप जल सींचि बुझावैं ॥
हा सुसील ये वही प्रससा करी जु हिलिहिलि।
जे समझावन हेत मोहि आवति हैं मिलि २ ॥

लाला हनुमानप्रसाद जो झवईटोला लखनऊ।

नाचत हैं मोर सोर माचत हैं कुंज पुंज सैन भई फैल गई दिसा दिस दिलि दिलि। चातिक चकोर पिक दादुर हरष उर खजन मरालन के खेद वाढ़ै तिलि तिलि ॥ कहै हनुमान ऐसो पावस को आगमन तामै तो गमन प्यारी प्रानन को किलि किलि ॥ धोरे धोरे धूमरे धुरारे धुरवान नभ गाज गाज गाज संग आवत० ॥

कानपुरनिवासी पं० ललिताप्रसाद जी त्रिवेदी।

धूम कै धुरारे धारे धारन धमकवारे कारे कारे काजर पहारे पूरि हिलि हिलि। नदी नद नारे कै करारे काटि डारे भूरि पवन पसारे पीर पारे परैं पिलि पिलि॥ ललित निकारे लेत प्रान प्रानप्यारे बिन गरजैं गरब भरे दामिनि लै झिलि झिलि। कैसो करौं बीर धीर हरत हिये को नभ घन बकपाँतिन सों आ०॥

औरै भाँति बेनी तेरी गुही है गुबिन्द फेरि उरज उतग रहे नखन सों छिलिछिलि। कजन से नये निर अजन लखात दृग पीक लीक रही हैं कपोलन पै खिलि खिलि॥ पीतपट पायो कहाँ सुपट गँवायो नील ललित बनावति है बातन को झिलि झिलि। हमसे छपावति का छल कै छबीली छिपि छैल सों निकुंजन मैं आ०॥

कोपागंजनिवासी कवि सालिग्राम जी।

देखो द्रुम डारन मै नये नये पात भये प्राविट सोहावन मैं फूल रहे खिलि खिलि। ना-

चत मयूर घटा देखि नभमण्डल को पंछीहू कुहुकि रहे पापुन मै मिलि मिलि ॥ कहै सालग्राम देखो लता अरुझानी डार हमे उपदेश करै मानो यह हिलि हिलि । सीलता सुमन्द पौन बारुनी दिसा तें आली सुखद सुगन्धन ते आवत हैं मिलि मिलि ॥

श्रीचन्द्रकला बाई - बूँदी ।

राधा गुरुलोगन के संग मैं अटा पै चढ़ी देखन कों दोयज की चन्दकला हिलि मिलि । ताही समै श्यामहू अटा पै चढ़े ताही काम प्यारी देखि होय गई लाज माहिँ घिलि मिलि॥ चन्दकला देखि सखी सन्मुख न देखि सकैं निपट डरे हैं गुरुलोग भीति भिलि मिलि। भीरि चीरि लोगन की सबकी बचाय दीठि दौरि दीठि दोउन की आवत हैं० ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगीलाभाई ।

एक ओर ग्वाल अरु एक ओर बाल सबै खेलत हैं फाग आज आनँद ते हिलिमिलि। डा-

रत हैं रंग भरि पिचकारी आपुस में लोकन की लाजन कों उर ही तें ठिलि ठिलि ॥ गोबिंद सुकबि तामैं कान्ह आइ औचकही राधिका के उरज कों जात पुनि पिलि पिलि । तातें तन तेह धरि गोपिन के जूथ सबे कान्ह को पकरिबे कों आवति हैं मिलि मिलि ॥

छत्तीसवा अधिवेशन ।

मिती सावन बदी १ सम्बत् १९५२

न जरे पर लोन लगाइये जू ।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज

उपनाम रससिंधु ।

बलि लोचन लाल कपोल पै पान उ अंजन रेख मिटाइये जू । रससिन्धु कहै अब धोओ लला हकनाहक क्यों सरमाइये जू ॥ इन अगन हाथ न डारो हटो जहाँ रात रहे तहाँ जाइये जू । बस झूठी न बातैं बनाओ हरी न जरे पर लोन लगाइये जू ॥

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

यह आपनी तान विज्ञान भरी कोउ और पै जाइ कै गाइये जू। यह राग बिरागभरो निबरो बलबीरहिँ जाय सुनाइये जू॥ बिरहानल ज्वाल जरे जिय मे न सलोनो सरूप बसाइये जू। बस जाइये ऊधो चले घर को न जरे पर लोन०

बाबू हरिशंकरप्रसाद जी बनारस।

बड़ि भागि जो आये प्रभात समै पहिले दृग मोसों मिलाइये जू। तब माँगे बिना गहने की कथा हरिशंकर सोँह सुनाइये जू॥ ककनी बँगुरी चुरवा चुनरी जहाँ रानि रहे पहिराइये जू। करजोरि करौं बिनती तुम ते न जरे० ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

लिखी पाती कहौ केहि के कर की पर साँचही साँच बताइये जू। तुम्हे ऊधो कह्यो कुबरी की हरी ब्रजबालन जोग सिखाइये जू॥ द्विज बेनी विहारी बिचारी नही मम ओर सों जाय सुनाइये जू। मरे मारत बैठे कहा हो परे न जरे पर लोन लगाइये जू॥

बसि रात प्रभात चले हौ कहाँ केहि का-
रन सो बतलाइये जू । अब जाइये लौटि उतै
जिहि को उर लाय गरे लपटाइये जू ॥ द्विज
वेनी न बातैं बनाओ वृथा घनी झूठी न सौगँध
खाइये जू । परे बैठी हटौ का करौ नखरे न
जरे पर लोन लगाइये जू ॥

पं० बचऊचौबे उपनाम रसीले कबि काशी ।

बतिया घतिया को बनाय सदा उनहीं को
भले भरमाइये जू । कहि देत रसीले तम्हैं मम
भाय न मेरी गली कबौं आइये जू ॥ बदनामी
भई तो भई ब्रज मे चुपके उठके चले जाइये जू ।
बिरहागि ते झाले परे तन मे न जरे पर० ॥

प० केदारनाथ जी बनारस ।

यह सावन रैन भयावन मैं मनभावन अंक
न लाइये जू । तड़पै तड़िता नभमण्डल मैं सुनि
धीरज नाहि धराइये जू ॥ कहि याको केदार
कितेकऊ जो तुम्हैं भावत प्यारी पराइये जू । ब-
तिया मैं भुराइ कै प्यारे हमैं न जरे० ॥

प० गनेसप्रसाद जी चितईपुर बनारस ।

आपु दिये उपदेश हमैं मोहि मे दृढ़ प्रीति बढ़ाइये जू । ताहि को पुष्ट कियो हमने दिन रात सो कैसे भुलाइये जू ॥ जाको न शेष गनेश सकैं कहि जोग के कैसे नमाइये जू । जाइये ऊधो कृपा करिये न जरे पर० ॥

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिद्धौर ।

अब होत प्रभात भरे तन आलस प्यारे इतै जनि आइये जू । जित राति रमे जेहि के सँग मे उतही को दया करि जाइये जू ॥ बकि ना-हक बैन भरे कुल सो तन ताप ना मेरो बढ़ाइये जू । यह रूप सलोनो दिखाय हमै न जरे० ॥

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा ।

कुलकानि तो त्याग कियौ हमने दृग श्याम छटा दरसाइये जू ॥ अब नींद अहार सबै तजि के सजि के तन प्रीति रमाइये जू । उर प्रेम नि-रन्तर राधिकाचर्ण सो मोहन के गुन गाइये जू । अब जोग ना ऊधो सिखाओ हमे न जरे पर० ॥

गयानिवासी प० बिश्वनाथ मिश्र ।

हम मन्त्रिक जानु जु मन्त्र करी जब मोहन लाय मिलाइये जू । नहिँ पण्डित जानु तबै जो भला उपदेशि सनेह नसाइये जू ॥ समयानिधि जानो तबै जु दयाल मया करि लाल दिखाइये जू । कहि योग करो सब योग करो न जरे० ॥

करुणा करि नाथ दया जो दयो तब सम्प्रति बानो बनाइये जू । जब प्रेमहु दाल अथोर दयो तब पाचहु लाय मिलाइये जू ॥ रुचि गान्धसि आगे कथो जो हमै तब ताहि पुराय हटाइये जू । अब औरहु याहि बढ़ाय कै जू न जरे० ॥

प० लक्ष्मीनारायण जी ग्राम कटिया जिला सीतापुर ।

बिछुरे नँदनन्दन के दुख मैं जनि जोग हमै समुझाइये जू । बिन बोले सही भल लागत हौ लछिराम न बोल सुनाइये जू ॥ कहि के उपहास न कूबरी को दुख ऊधौ अहा सरसाइये जू । हम आपै बियोग बिथा मैं जरैं न जरे पर लोन लगाइये जू ॥

श्री ठा० महेश्वरबक्ससिंह तालुकेदार रामपुर—मथुरा।

कित रैनि बसे हरि सत्य कहौ कहि झूठ न क्रोध जगाइये जू। तन चिन्ह बने चख नींदभरे अब आन की आन न गाइये जू॥ सिगरी निसि हेरत बाट कटी अपनो चित क्यों उमगाइये जू। चुप बैठिये आप महेश्वर जू न जरे पर०॥

कोपागंजनिवासी कवि सालिकराम जी।

यह गांव के लोग लोगाई कहैं इन ते बड़ भागी न पाइये जू। सखियान की बात भई सब झूठ कहाँ तक बात सुनाइये जू॥ कवि सालिक हार मिलो ना अजौं पलगें पर पॉव न धारिये जू। हटि दूरही स्याम रहो हमसे न जरे पर लोन लगाइये जू॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी।

नित आवन को अब बात कहा पख मासहू तो नहिँ आइये जू। अरु आइ कै एहा सुसील हहा यह चाल नहीं दिखराइये जू॥ मुहि सौतिन के कर को गुहो माल न बारहिँ बार ल-

खाइये जू । परि पाँय करौं बिनती तुम से न जरे पर लोन लगाइये जू ॥

कहि ऊधौ सुमील न ज्ञान कथा हमलोगन कों समझाइये जू । जनि प्रेम के नीर को प्यासिन कों या हलाहल योग पियाइये जू ॥ मरि आप रही हैं वियोग-बिथा तिन्हैं भोग तजौ का सिखाइये जू । पदवी लहि श्यामसखा की इहा न जरे पर लोन लगाइये जू ॥

दाऊदनगरनिवासी बाबू जवाहिरलाल जी ।

जनि ज्ञान जवाहिर खोलौ इहाँ कहुँ कासी मे जाइ दिखाइये जू । इतै गाहक प्रेम की घूंघची के नहिँ नाहक मान मिटाइये जू ॥ यह खीचरी योग की ऊधव जू कुबजा हरि को लै खियाइये जू । बस जाइये जाइये जाइये जू न जरे पर लोन लगाइये जू ॥

दाऊदनगरनिवासी बाबू मुन्नाप्रसाद जी ।

कहि आवन कों घर मेरे लला घर औरन के नहिँ जाइये जू । अरु जाइये तो नहिँ होत

प्रभातही मो घर पै फिरि आइये जू ॥ जदि आइये तो रहिये चुपचाप न व्यर्थ की बातें बनाइये जू। मुकता मनका गुनहीन दिखा न जरे पर लोन लगाइये जू ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलालजी शर्म्मा ।

सत लाख दिये नहिं मानिहौं मैं मुख बात न मीठो बनाइये जू । जितहीं नित यामिनि जाय बसो हरि याहू समै तहँ जाइये जू ॥ जिनको ये महावर भाल लसै तिनके पद माथ चढ़ाइये जू । अब मोको पियारी पियारी कहौ न जरे पर लोन लगाइये जू ॥

कानपुरनिवासी प० ललितप्रसाद जी त्रिवेदी ।

लगि पीक की लीक कपोलन मै या अलोकतो ना बतराइये जू । ललितै कवि जावक भाल लसै उर केसरि छाप छपाइये जू ॥ रँग राते जितै बितै राति चले कै हितै कै तितै चलि जाइये जू । उत प्रान धरै इत पाँय परै न जरे० उत भोग करै कुबरी सँग वै इत योग की

रीति सुनाइये जू। उत हार भरे भले मोतिन के इत सेली गरे पहिराइये जू ॥ ललिते यह कौन धौं रीति गहे उनही को भले समुझाइये जू। तुम ऊधो सुनावत ज्ञान हमैं न जरे० ॥

अयोध्यानिवासी हनुमानप्रसाद जी उपनाम श्रीकर।

बलि घोर घटान छटा गण लै भरि मौज उतै चलि आइये जू। भनि श्रीकर मोर मयूरिन सों भली भाँति न धूम मचाइये जू ॥ गरजाय कै मेह गरीबिनियां ब्रजबालनै क्यों लरजाइये जू। बर सौजित कूबरी कृष्ण इतै न जरे० ॥

बाबू अयोध्यासिंह गिर्दावर उफरौली आजमगढ़।

तुम तो हौ सुजान त्यों जानो सबै तुमको क्यों अजान बनाइये जू। अँसुआ अँखियान मैं क्यों उमड़े कहो कैसे तुमैं समझाइये जू ॥ हरिऔध पै मानो कही इतनी करिकै यह नेह निबाहिये जू। पर मोर बिचारि कै आपनी सी न जरे पर लोन लगाइये जू ॥

बड़े भागही ऊधो पधारे इतै हित की ब-

तिया न सुनाइये जू । करि कोऊ उपाव हमैं हरिऔध की नीकी अदा दरसाइये जू ॥ जरती हम प्यारे वियोग सों हैं अब कैसहूं ताहि सिराइये जू । कहि जोग की बातें दया करिकै न जरे पर लोन लगाइये जू ॥

राय महाबीरप्रसादनारायणसिंह - बराव इलाहाबाद ।

करि नेह फसाद हमै सगरी पर नेकु न प्रीति निबाहिये जू । तजिकै अवलान को बात सखी मथुरा नृप होन पधारिये जू ॥ अब बात बनावन को करि मन्त्र तुम्हे ब्रज व्यर्थं पठाइये जू । चलिये न कछू अब काम इहां न जरे० ॥

लाला हनुमानप्रसाद जो झवाईटोला लखनऊ ।

बिन नीर के मीन न घामे धरो मनिहीन फनी न खिझाइये जू । नित भोगिन भोगहि भावत है जहँ जोगिन जोग जगाइये जू ॥ हनुमान कहै तुम स्याम सखा न सिखीन को सीख सिखाइये जू । अब ऊधव मौन गहौ हरि सो न जरे पर लोन लगाइये जू ॥

कोपागंजनिवासी ला मारकंडेलाल उपनाम चिरजीवकवि।

हम आइबे को उन्हैं पूछति हैं तुम औरै कहो सो न चाइये जू। परै भाड़ मे ज्ञान अज्ञान दोऊ हमैं कान्ह की बात बताइये जू ॥ हमऊधो अजौं उन्हें चाहती हैं याते वाकी विचार बुझाइये जू। इतै ज्ञान की कोरी कथा कहि कै न जरे पर लोन ल० ॥

राम-मातु औ आप हैं साधु दोऊ दिन रैन यही पद गाइयें जू। कहै कैकई श्री दसरत्थ सो यौं सदा सौति को मन्त्र जगाइये जू॥ हम राम को गौन चहैं बन को चिरजीवो न सो बिलगाइये जू। करि कौसिला की ह्यां तरीफ घनी न जरे पर लोन ल० ॥

प० रामअधीन जी अयोध्या।

अनुराग तडाग हिये रचि कै तह साँवरो कंज लगाइये जू। कुरबान ह्वै आन दै या मन को दृढ भौंर कै तामे पगाइये जू ॥ गुण गान स्वरूप औ नाम सुयोग को रामअधीन जगाइये जू। निज ज्ञान ले ऊधव कीजै कृपा न जरे०॥

दासापुरनिवासी पं० बलदेवप्रसादजी कवि ।

भये हौ बस जाके लखि बलदेव तौ आतुर ता ढिग जाइये जू । नँदनन्दन येती बिनै अब भूलिहू आप इतै मति आइये जू ॥ कलपाय हमै कल पाओ भले कलपाइये तौ कलपाइये जू । कर कंज गरे करे सौतिन के न जरे० ॥

श्री चन्द्रकला बाई—बूँदी ।

सब राति प्रिया निज के घर में रमि के मन मोद बढाइये जू । रँगि कै अँखिया रंग लाल महा भल भाल महावर लाइये जू ॥ कहि चन्द्रकला मुकता मनि को गुनहीन हरा गल नाइये जू । उठि प्रात भये इत आय लला न जरे० ॥

सिहोर[काठियावाड] निवासी कवि गोविन्दगीलाभाई ।

अनतें रमि कें अब आइ हमे नहिँ बातन मे बहराइये जू । चतुराइन ते करि सौंह अती तिय औरन कौं भरमाइये जू ॥ कवि गोबिँद बारहि बार तुमें कहि बात कहा समझाइये जू । रति अंकित ह्वै ढिग आइ हमे न जरे० ॥

प० बासुदेव कवि गया।

कित ये बलबीर अबीर छगा छबिछीन छ-बीली के पाइये जू। उठि भोरे भरे रँग अंगन मे दृग आरस लेइ कँपाइये जू॥ तहँ छाइये राती जहँाई जगे हम सों बहु सौंह न खाइये जू। बसुदेव के भौन तें भाजिये ना तू जरे०॥

हँसि कर पान दै।

काशीनिवासी श्री १०५ कृष्णलाला जी महाराज उपनाम रससिंधु।

बारन को बाँधि सखी कचुकी धराव नीकी बहुर सिँगार साज मेरी बात कान दै। त्योंही रससिन्धु लाय बसन धराये नये मोतिन की माला हार सोभा सरसान दै॥ नाक मे बुलाक चारु मृगमद बिन्दभाल अधर तमोल लाल जावक लगान दै। बैठे जाय पलिका ये दंपत बिलास करे चूम के कपोल कहै हँसिकर पान दै॥

बाबू रामकृष्ण बर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

मान करि बैठी क्यों सुजान मनमोहन सों

बीर यह आपनी लड़ैती तजि बान दै । कब की खड़े ह्वै एक पग पै निहोरत हैं दोऊ कर जोर इक तेरी ओर ध्यान दै ॥ ऐसे प्रेमपागे सों न नेकहू बिगारिये री सीख या हमारी पै सुजान नेक कान दै । जान दै री बावरी बितीती ब तियान तजि मान उठि मोहन के हँसि कर० ॥

प० केदारनाथ जी बनारस ।

जाके हित संक लाज सकल बिसार दीनी ताकों पुनि काहे रोस रंचक लखान दै । ऐसो तो अयानी कोऊ करत सयानो नाहिं तू है चित्त चातुरी सदाई सनमान दै ॥ कलह किये ते हर्ष पावै कोऊ तूही कहै बरू पछतावनो केदार जू महान दै । एरी मेरी बीर कही मान लै हमारी आजु मीत सों मिलाप कीजै हँसि कर० ॥

प० बचऊचौबे उपनाम रसीले कवि — काशो ।

आवत लला को लखि झटकि सयानी एक कहत रसीले लरिकाई अब जान दै । ठाकुर कहाय ठगहारी करौ रोज रोज हठ के सुनत

नाहिँ बात कछु कान दै ॥ भोरी जानि छेड़त छकाय ब्रजगोरिन को तापै मुसुकाय माँगो नेक दधिदान दै। मटकि मटकि डारो मटकी पटकि ताहि छाती से लगावत हौ हँसि कर० ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि।

आली कालि कालिंदी किनारे साँवरो सों छैल मुरली बजाई सो सुन्यो मैं कहूं कान दै। ठाढ़ी रही फरक अकेली चुपचाप मोरे निकट बुलायो मोहि नैनन सों सान दै ॥ बेनी द्विज तिरछी चितौन सों चुरायो चित्त बावरी बनाय दीन्हो बिसिख समान दै। फँसि करि वासों नेक निकरि सकी ना भटू बस करि लीन्हो हाय हँसि कर पान दै ॥

बाबू अयोध्यासिंह गिर्दावर कफरौली आजमगढ़।

मन्द मन्द मीठे बैन बोलि मन औरै करै नैन सैनही सों मैन जू को उर थान दै। पीनता दिखावै हावभाव परिपाटी माहिँ रमन प्रनाली मैं प्रबीनता प्रमान दै ॥ हरिऔध सुधा ही सी

खवत कहै जो कवौं प्रानप्यारे मोको मंजुमाल मुकतान दै। मान दैकै सहित सनेह अपनावै प्रानहरति अपानहूं को हँसि कर० ॥

भौंहैं जनि तानै रोस मन में न आनै हौं कियो न मनमानै मेरी बातन मैं कान दै। अँखिया ललौं हैं नाहिँ नीर बरसौं हैं भई कहीं करि सौंहैं तू न मेरी पति जान दै॥ हरिऔध बापुरो न जानै छलछन्दै ताहि क्यों न सनमानै अंक आपने मैं थान दै। मत कलपावै मेरे प्रान कही मेरो मान एरी प्रानप्यारी मोको हँसि० ॥

गयानिवासी पं० गिरधारीलालजी शर्म्मा।

सोरठा।

लाल कहा रस बात, गिरधारी कह बाँह गहि।
सो सुनि कछू सकात, तीय बिहँसिकर पान दै॥

लाला हनुमानप्रसाद झवाईटोला लखनऊ।

बसत बजार मन हरत हजारन के घालत ब टोही मृगदृगन के बान दै। कहै हनुमान कान्ह गान करि तान लैकै थिरकि मुरकि गति बि-

गति के ज्ञान है ॥ मारन उचाटन बसीकरन जाके बसि करषन मोहन की मूरि रति दान है। तन मन धन हरि लेत वारि धन ऐसो नायक नवल जू के हँसि कर०

श्रीठाकुर राधाचरनप्रसाद साहब जागीरदार—पहरा।

मान कहो मेरो कछु हानि है न तेरो बीर कान्ह सुखदान बान अब नहिँ कान है। मान तजि प्यारी किम ठान रही एतो रोस रहिये ख-मोस जान सुच छबि ध्यान है ॥ राधिकाप्रसाद छबिखान गुनखान श्याम कैसो री गुमान आन मम सुमकान है । गान करै प्यारो जब तान को सुनावै आन मिलिये सुजान बेगि हँसि० ॥

मन अनुमान श्याम अनत पयान कीन्ह भृ कुटि कमान बान दृग खरसान है । कर दृढ़ मान ठान बैठ परजक बाम ठसक गुमान सान मुख पट तान है ॥ राधिकाप्रसाद आन रसिक सुजान खान औचकहि मेल होय मणि मुकतान

दै। परसत प्रान कान्ह चित ललचान आन हिय हुलसान मिली हँसि कर० ॥

पटनानिवासी बाबू प्रसन्नलाल जी।

प्रथम भई सो भई उन सब बातन कों प्यारी सुकुमारी प्यारी जिय से तू जान दै। अब जो सिखातीं तेरे संग की सहेली सखी छांडि परमान सो सिखापन पै कान दै॥ लाये हैं तिहारे हेत मालमुकता की लाल उठ री बिठाय उन्हें मान सनमान दै। मंगल कुसल छेम पूछि नह वाय ध्याय निज कर लाल लाय हँसि कर०॥

पौढि परजङ्क पिय दादूहिं पुकारि कह्यो लगी है पियास कोऊ बेगि जल आन दै। जानि मनभावन के मन की सुसील तबै नवलवधूहिं भेजी सीख सखियान दै॥ सुनि मरमाय घबराय अकुलाय चली तानि पट घूंघट को भूमि दिसि ध्यान दै। पियहिं पियाय नीर आगी कर थामत ही नाहीं अजू नाहीं कहि हँसि कर०॥

एरी करतार जो तू सत्य करतार अहै कर

करतारमनो पूरि अरमान है। जग करतार तेरे कर करतार है है भाषैं बुधमान सो न बात वादि जान है॥ दोई मनमाहिँ मेरे वासना सु-मोल बस कैतो मृग जूठे टन बन बसि खान है। कैधों मृदुभाषिनी सुहासिनी मयङ्कमुखी अङ्क लगि बङ्क चितै हँसि कर० ॥

पं० रामअधीन जी अयोध्या।

हेमलतिका सी रतिका सी मैनुका सी खासी परमा सुधा सी कोकिला सी कल गान है। नव सप्त धारे रवि भूषण सवारे कविब्रन्द लखि हारे अनुसारे उपमान कै॥ आनन अमन्द कलानिधि सो बगर ओज रामधीन पूरिगो जहान असमान पै। लङ्क को लचाइ बङ्क भौहन न-चाइ देतिघाय सरसाय हाय हँसि कर०॥

कोपागजनिवासी कवि सालिग्राम जी।

एहो प्रानप्यारी सुनो निसि की कहानी कछु छोड़ि दुचिताई जरा मेरी ओर कान दे। आये भगवान जब मान मे विलोके दैया अति अकु-

लाय तब आपनोई आन दै ॥ कहै सालग्राम कौन हाल मनमोहन को पाय परि कहे रीस प्यारी अब जान दै । हाँ हाँ करि थाकी कछु राखे नहि बाकी उन अंग लपटाय लिये हँसि०॥

श्री ठा० महेश्वरबकससिंह तालुकेदार रामपुर—मथुरा।

करत बखान श्याम राधिका स्वरूप कर सुनत अगाटि बाल लसिकर कान दै। मन उमगानी जानि नेह बनवारी साँचु अंगन समात बाम फँसि कर दान दै॥ मिलत बिहारीलाल हाट बाट घाट जहाँ कहत रसीले बैन रसिकारमान दै। आइ जात धाम जो महेश्वरेश काऊ काल सादर बिठावत हैं हँसि कर० ॥

कानपुरनिवासी पं० ललिताप्रसाद जी त्रिवेदी।

मान दे री जान बृषभान की कुंवरि नेकु हिय हरखान दे री प्रेम सरसान दे। ललित अयान तजि देखि नैन सान दे री हान दे री सांतिन निदान हित दान दे॥ मुख मुसकान दे री सुख बिलसान दे री दुखहि मलान दे री हिय

लगि जान दै। बैन बरकान दे री पीतमै बतान दे री अधर सुपान दे री हँसि कर० ॥

महाराजकुमार श्री गौरीप्रसादसिंह जी गिद्धौर।

नवलवधूटी रंग रूप की समेटी आई संग सखियान के सिखापन को कान दै। चौंकति चकित चारु चंचल चहूघा फिरै समता अनूठी हिय निमि चकवान दै॥ औचक प्रवीन पिय आय कह्यौ बीरी देन सलज हसौंही रही डरि सनमान दै। भाई वहै मेरे चित निरखि तमासे वाकी भाजी पिय-पासही तैं हँसि कर० ॥

प० लक्ष्मीनारायण जी कटिया जिला सीतापुर।

मिली हौं बिहारी बरसाने बरसाने बनि आलिन सौं टेर्‌यो चारु चंचल दृगन कर सान दै। सजो है अनोखो मणि मन्दिरै सुहानो सेज आली भरि अंकन कह मानी सुनि कान दै॥ बहुरि तिहारो हठिवारे पतनी कै दाँव द्विज लछिराम हठ कीनो केलि ठान दै। प्रथम समागम की कसक मिटावन को लाज तजि बैठीं सेज हँसि कर पान दै॥

दाउदनगरनिवासी श्री देबीदयाल शर्मा ।

एरी प्राणप्यारी हाय कहाँ तैं पधारी अब होत है अबेर क्यों न आन सनमान दे । मेरो भो गुमान बहु रूपवान होइबे को आय दरसाय छबिताय किन भान दै॥ नेक ना बिलम्ब कबौं होत रहै देबीदाल आज कहा भयो या नबीन रीति जान दै । होत मन व्याकुल है धीर ना धरात सब कसक मिटाय धाय हँसि कर० ॥

ला० मारकण्डेलाल उपनाम चिरजीव कवि कोपागंज ।

हम परदेशी चार दिन को मिले थे तोहि तामैं तू न बोलहू मैं भौंहनि की तान दै । जो कोऊ कुसूर मोते भयो हो तिहारे जान बिनती हमारी ताको जी ते सब जान दै॥ कवि चिरजीव तेरे भाब को भिखारी अहै ताते जनि फेर भौरै मुसक्यान दान दै । मान दै न मान दै या खुसी है तिहारी प्यारी बिदा के समै तो नेकु हँसि कर पान दै ॥

दिन जात लागिहैं न बार दस चार वर्ष

हर्ष को समै है यामैं सोच मैं न ध्यान दै। ह्वैहै ना कलेस मोकों तेरे असिर्बादहि सो ताते मो बिनै को निज ही मैं असथान दै॥ कवि चिर- जीव कौसिला सो आय राम भाष्यौ आज्ञा है पिता की याते मोको बन जान दै। करिये न चिन्ता काहू बात की सु मेरी मात जान प्रस- थान मोकों हँसि कर पान दै॥

दासापुर निवासी प० बलदेव कवि।

बीती जात जोबन-बहार बरषा कै बीच बीर बलदेव की बिनै पै नेक कान दै। आह उर अन्तर सों बैरी रोष बाहर कै प्रेमरस आदर को ता थल मे थान दै॥ त्यौर कै तिरीछे कहा ता- कति तमालतरु साजि अग सौतिन के हौसिले को हान दै। कान्हैं प्राणदान देती मान सान जान देती अधर सपान देती हँसि कर०॥

श्रीचन्द्रकला बाई – बूँदी।

सारी राति आन थान बसि कै गुपाललाल आये प्रात तेरे पास सो तो सब जान दै। बि-

मन भये ये इकटक तोहिँ देखत हैं तूहू देखि लाल ओर उठि सनमान दै ॥ चन्दकला आली बनमाली मे न मान ठानि कब के खरे हैं इन्हैं बैठन सुथान दै। रिस बिसराय कै बढ़ाय कै बिसास उर हिलिमिलि बालम के हँसि० ॥

सिहोर (काठियावाड) निवासी कबिगोबिन्द गीलाभाई।

कौतुक जवन एक आज अवलोक्यो आली सोइ मैं सुनावों तोहिँ सुन सब ध्यान दै। नाथ ही को नाम सुनि दुलही डरति सोई आज ही उमंग धरि सुनति है कान दै ॥ गावती न गीत कहि रस के ललाम सोई रति के लखित गीत गावति है तान दै। गोबिँद सुकबि नहि छांह छून देति सोई प्रीतम कों प्रेम लगि हँसि० ॥